गांधी जीवन और विचार

आर.के. पालीवाल

अनुक्रम

१. जन्म: 2अक्तूबर 1869 और वह दौर
२. बचपन: आम बच्चों जैसा सामान्य जीवन
३. बाल विवाह और आरंभिक वैवाहिक जीवन
४. पढ़ाई से अरुचि और पारिवारिक संकट
५. बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए विलायत जाने का संघर्ष
६. युवा गांधी के धार्मिक विचार
७. पहली विलायत यात्रा
८. विलायत में भोजन, आवास और रहन सहन आदि की समस्याएं
९. विलायत में गलत राह पर फिसलते हुए बचे
१०. विलायत में शिक्षा और शिक्षा से इतर सीख
११. विलायत से भारत वापसी
१२. नहीं जमा वकालत का पेशा
१३. अफ्रीका के बेहद त्रासद और खतरनाक अनुभव
१४. धार्मिक विचारों की परिपक्वता और अफ्रीका के ईसाईयों का अहंकार
१५. वकालत की सार्थकता
१६. अफ्रीका में गांधी का अपमान
१७. अफ्रीका में हृदयजीव गांधी
१८. गांधी के नेतृत्व में अफ्रीका में पहला आंदोलन
१९. नेटाल इंडियन कांग्रेस का गठन
२०. बालासुंदरम का मुकदमा और गांधी का अफ्रीका में महानायक बनना
२१. घर वापसी और भारत में भी अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समाज की चिंता
२२. पूना और मद्रास में गांधी को विशेष सफलता
२३. गांधी की दूसरी अफ्रीका यात्रा
२४. गोरों को हिंसा और मारपीट के लिए क्षमा

२५. बच्चों की शिक्षा और शिक्षा पर विचार

२६. कर्तव्य और सेवा को समर्पित

२७. दाम्पत्य जीवन और शादी के बारे में विचार

२८. आत्म निर्भरता गुलामी से मुक्ति का मार्ग

२९. गांधी और गीता

३०. रस्किन की 'अन टू द लास्ट' और गांधी का फीनिक्स आश्रम

३१. गांधी और इंडियन नेशनल कांग्रेस

३२. गांधी और भारतीय राजा महाराजा

३३. एक बार फिर दक्षिण अफ्रीका में

३४. इंडियन ओपिनियन साप्ताहिक अख़बार की शुरुआत

३५. गांधी का संबल कस्तूरबा

३६. अफ्रीका का तीसरा दौरा

३७. जूलु विद्रोह और गांधी का सेवा दल

३८. गांधी और ब्रह्मचर्य

३९. एशियाटिक बिल और गांधी का पहला सत्याग्रह

४०. पहली जेल यात्रा

४१. मीर आलम का हमला

४२. टालस्टाय फार्म की स्थापना

४३. अफ्रीका में विवाह पंजीकरण का भेदभाव वाला कानून और महिलाओं का विरोध

४४. गांधी की इंग्लैंड यात्रा और 'हिंद स्वराज' की भूमिका

४५. 'हिंद स्वराज' पुस्तक में गांधी का वैचारिक चिंतन

४६. जनरल स्मट्स की वादाखिलाफी

४७. गांधी का मजदूर मार्च

४८. चार दिन में तीन बार गिरफ़्तारी

४९. अफ्रीका आंदोलन की सफलता और गांधी का काम पूरा

५०. इंग्लैंड के रास्ते भारत आगमन

५१. स्थाई रूप से भारत में

५२. देश भ्रमण पर

५३. भारत में गांधी का पहला आश्रम

५४. चंपारन सत्याग्रह की शुरुआत

५५. चंपारन आंदोलन ने बदला गांधी का नजरिया

५६. अहमदाबाद की मजदूर हड़ताल और गांधी का पहला उपवास

५७. खेडा किसान सत्याग्रह

५८. विश्व युद्ध में सैनिक भर्ती में गांधी की भूमिका

५९. गांधी की बकरी और उसका जीवन रक्षक दूध

६०. रौलेक्ट एक्ट और गांधी का साहस

६१. हिंसा को पहाड़ सी भूल मानना

६२. कांग्रेस के विधान और जलियावाला स्मारक के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका

६३. नवजीवन और यंग इंडिया अख़बार

६४. गांधी की आत्मकथा और सार्वजानिक जीवन

६५. हिंदू मुसलमान एकता के अथक प्रयास

६६. छुआछूत का प्रबल विरोध

६७. साबरमती आश्रम की शुरुआत

६८. जालियांवाला बाग कांड और गांधी

६९. खादी के लिए चरखे की तलाश

७०. हड़ताल में हिंसा से व्यथित गांधी और अहिंसा के प्रयास

७१. असहयोग आंदोलन

७२. चौरी चौरा कांड और असहयोग आंदोलन का अंत

७३. गांधी का मुकदमा, जेल और रिहाई

७४. गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम

७५. स्वराज दल और कांग्रेस के बीच मध्यस्थता

७६. हिंदू मुस्लिम हिंसा से आहत गांधी का एकता के लिए उपवास

७७. आत्म चिंतन का एक वर्ष : १९२७

७८. १९२८ के कलकत्ता अधिवेशन में डोमिनियन स्टेटस की समय सीमा की चेतावनी

७९. गांधी की छत्रछाया में सरदार पटेल का बारडोली आंदोलन

८०. १९२८ के कलकत्ता अधिवेशन में गांधी की अगुवाई में नेहरू पिता पुत्र समझौता

८१. पूर्ण स्वराज की मांग और एक और बड़े आंदोलन की तयारी

८२. नमक सत्याग्रह और गांधी का ऐतिहासिक दांडी मार्च

८३. दांडी मार्च की भव्य सफलता

८४. दांडी मार्च से घबराई सरकार का गिरफ्तारी अभियान

८५. गांधी इरविन समझौता

८६. लंदन के गोल मेज सम्मेलन में गांधी की शिरकत

८७. गोल मेज सम्मेलन की असफलता के बाद आक्रोशित गांधी और भारत में बढ़ता असंतोष

८८. गांधी का आमरण अनशन

८९. हरिजन उपवास

९०. हरिजन फंड और हरिजन सेवा के काम

९१. सेवाग्राम के वर्धा आश्रम की शुरुआत

९२. सेवाग्राम : भारतीय आजादी के आंदोलन का नया अड्डा

९३. द्वितीय विश्व युद्ध और गांधी

९४. क्रिप्स मिशन पर गांधी की प्रतिक्रिया

९५. १९४२ में गांधी की हुंकार – 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' और 'करो या मरो' के दो ऐतिहासिक नारे

९६. आगा खान पैलेस की जेल में गांधी को पहला बड़ा आघात – महादेव देसाई की मृत्यु

९७. अंग्रेजी शासन के दमन के खिलाफ गांधी का उपवास

९८. आगा खान पैलेस में गांधी को दूसरा बड़ा आघात – कस्तूरबा गांधी की मृत्यु

९९. गांधी की रिहाई और आजादी की लड़ाई के अंतिम चरण की शुरुआत

१००. आजाद हिंद फौज और गांधी सुभाष संबंध

१०१. गांधी जिन्ना वार्ता और गांधी के बंटवारा रोकने के प्रयास

१०२. शिमला वार्ता में गांधी

१०३. विश्व युद्ध में इंग्लैंड के मित्र राष्ट्रों की विजय पर गांधी का नजरिया

१०४. कैबिनेट मिशन और गांधी

१०५. अंतरिम सरकार का गठन और विफलता के बीच गांधी के शांति प्रयास

१०६. सांप्रदायिक आग के बीच आजादी और विभाजन की पृष्ठभूमि में गांधी

१०७. आजादी की घोषणा से पहले भीषण दंगों की विभीषिका

१०८. सांप्रदायिक दंगों की आग में जले कलकत्ता और बंगाल में गांधी

१०९. नोआखली में आजादी के पहले का प्रचंड सांप्रदायिक उन्माद और गांधी की अहिंसा की अग्नि परीक्षा

११०. नोआखली की वन मैन आर्मी : गांधी

१११. सांप्रदायिक सौहार्द के लिए बिहार आए गांधी

११२. आजादी के पहले शांति के लिए गांधी की अंतहीन भागदौड़

११३. आजादी के एक दिन पहले कलकत्ता की गलियों में

११४. १५ अगस्त १९४७ : भारत की आजादी का जश्न और गांधी

११५. कलकत्ता में शांति के लिए उपवास

११६. जलती दिल्ली के जख्मों में करूणा का मरहम

११७. रोती बिलखती कराहती दिल्ली में गांधी

११८. दिल्ली की दास्तान कलकत्ता भी बदतर

११९. आजादी के बाद पहले कांग्रेस अधिवेशन में गांधी

१२०. भारतीय सेना के बारे में गांधी और जनरल करियप्पा की चर्चा

१२१. भारत के मुसलमानों और शहीद सुहरावर्दी से गांधी की वार्ता

१२२. जवाहर लाल नेहरू और पटेल के मतभेद और गांधी

१२३. सिंध और कश्मीर समस्या और गांधी

१२४. गांधी का अंतिम उपवास

१२५. गांधी की अंतिम सांस – 'हे राम'

१. जन्म: 2अक्तूबर 1869 और वह दौर

2 अक्तूबर 1869 को जिस समय गांधी(मोहन दास) का पोरबंदर रियासत से जुड़े करमचंद (काबा) गांधी और पुतलीबाई के वैश्य परिवार में जन्म हुआ था वह भारत में अंग्रेजों की गुलामी का काला अंधकारमय समय था । गांधी के जन्म से बारह साल पहले 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की असफलता के बाद अंग्रेज अधिकारियों और अंग्रेजी फौज ने खोज खोज कर भारतीय देशभक्तों का उत्पीड़न किया था ताकि निकट भविष्य में भारतीय जनता फिर से आजादी का आंदोलन चलाने की हिम्मत न जुटा सके। झांसी, लखनऊ ,बिठूर और दिल्ली आदि के हिंसक विरोध के नेताओं के शासन को अंग्रेजों ने अपने कब्जे में कर लिया था | दिल्ली पर पूरा नियंत्रण होने से लगभग पूरा देश ही अंग्रेजों के कब्जे में आ गया था |

उन दिनो देश के कोने कोने से आजादी के आंदोलन में शामिल होने वाले देशभक्तों को चिन्हित कर कड़ी सजा दी जा रही थी । पोरबंदर रियासत और गुजरात में हालाँकि 1857 के आंदोलन का खास असर नहीं था लेकिन देश के उत्तरी भाग और विशेष रूप से वर्तमान उत्तर प्रदेश और दिल्ली में अंग्रेजी सरकार के दमन के कारण पूरे देश मे अंग्रेजी राज का खौफ बैठ गया था और जनमानस के मन में गहरी निराशा पैठ गई थी।

गांधी परिवार पोरबंदर के उच्च मध्यम वर्ग के आम वैश्य परिवारों की तरह वैष्णव हिंदू परिवार था और खुद मोहन दास करमचंद गांधी भी बचपन में एक आम साधारण बालक ही थे। वैष्णव परिवार होने के कारण घर मे शाकाहारी भोजन बनता था और ईश्वर की भक्ति का माहौल था।

गांधी के पिता का रियासत से कुछ विवाद होने पर घर की आर्थिक स्थिति भी खराब हो रही थी इसलिए उनकी पढ़ाई भी पोरबंदर के सामान्य स्कूल में आम बच्चों की तरह ही हुई। गांधी की आत्मकथा "सत्य के प्रयोग" से भी यह जानकारी मिलती है कि गांधी का बचपन आम शहरी बच्चों की तरह ही बीता था और उनमें ऐसी कोई विलक्षणता नहीं थी जिससे कोई यह आभास लगा सके कि भविष्य में यह बालक भारत मे ही नहीं अपितु पूरे विश्व में अपना और देश का नाम रोशन करेगा |

२. बचपन : आम बच्चों जैसा सामान्य जीवन

गांधी का बचपन भी अधिकांश छोटे शहरों के आम साधारण बच्चों जैसा ही था। न वे डील डोल में बहुत ताकतवर थे और न बहादुर | जैसा अधिकांश बच्चों के साथ होता है उन्हें भी अकेले में अंधेरे मे जाने मे डर लगता था। पढ़ाई में भी वे बहुत होशियार नहीं थे। कुल मिलाकर उन्हे अपने समय का एक औसत बच्चा ही कह सकते हैं |

सात्विक वैष्णव पारिवारिक माहौल के कारण गांधी मे कुछ विशेष गुण भी थे। वे झूठ नहीं बोलते थे और कोई गलत काम भी नहीं करते थे। इस सँबँध मे एक घटना उल्लेखनीय है - एक बार उनके स्कूल के इंस्पेक्सन के लिए इंस्पेक्टर आफ स्कूल आये थे। उन्होंने बच्चों से कुछ शब्दो की स्पैलिंग लिखने के लिए कहा | गांधी को एक शब्द की सही स्पैलिंग नहीं आती थी। शिक्षक ने उन्हे पडौस के साथी की कापी से नकल करने की सलाह दी लेकिन गांधी को ऐसा करना सही नहीं लगा | गांधी इन्ही कुछ अच्छी आदतों के कारण माता और पिता दौनो के लाडले बेटे थे।

सत्य के प्रति गांधी को बचपन में ही लगाव हो गया था जो बडे होकर उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया | अपनी आत्म कथा "सत्य के प्रयोग" मे उन्होंने अपने जीवन की उन नकारात्मक घटनाओं के बारे मे भी पूरी सच्चाई के साथ लिखा है जिनका जिक्र बहुत से लोग अपनी आत्मकथा मे करना नहीं चाहते | उदाहरण के तौर पर उन्होंने लिखा है कि बचपन में उन्होंने चोरी भी की, बीड़ी पी और दोस्त की संगत मे मांस का सेवन भी किया। लेकिन जैसे ही उन्हें अपनी गलती का अहसास होता था फिर वह उस गल्ती को आजीवन नहीं दोहराते थे।

गांधी के बचपन और युवपन को देखकर कोई यह अंदाज नहीं लगा सकता था कि धीरे धीरे अपनी तमाम कमजोरियों पर विजय पाकर यह बच्चा एक दिन विश्व प्रसिद्ध महात्मा बन जाएगा | और तो और गांधी जी को खुद भी यह अहसास नहीं था कि भविष्य में वे अपने देश के लिए बेहद खास काम करेंगे और एक दिन देश के राष्ट्रपिता बनने का गौरव अर्जित करेंगे |

३. बाल विवाह और आरंभिक वैवाहिक जीवन

हमारे देहात में आज भी बहुत सी जगह बाल विवाह की परंपरा है। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में तो शहरी समाज और उच्च वर्ग मे भी यह कुरीती आम थी। गांधी भी बचपन में इसके शिकार हुए | सात साल की उम्र में परिवार वालों ने उनकी सगाई एक जानकार परिवार की हम उम्र बालिका कस्तूर बाई के साथ तय कर दी थी और चौदह साल की अवस्था तक पहुँचते पहुँचते दौनो का विवाह भी हो गया था।

उन दिनों गांधी तो पढ रहे थे लेकिन कस्तूर अशिक्षित थी | गांधी उन्हे घर पर रहकर पढने की सलाह भी देते थे लेकिन कस्तूर की पढ़ाई में कतई रूचि नहीं थी। गांधी इस बात के लिए उनसे नाराज भी रहते थे लेकिन कस्तूर भी दृढ़ निश्चयी थी। जिस काम में उनका मन नहीं लगता था वह नहीं करती थी और अपनी रूचि के काम अवश्य करती थी।

गांधी और कस्तूर की आदतों में और भी कई मामलों में मत भिन्नता थी | गांधी संकोची स्वभाव के अंतर्मुखी युवक थे और कस्तूर सजने धजने की शौकीन , सबसे निसंकोच बात करने वाली बहिर्मुखी चंचल स्वभाव की युवती | गांधी को उनका यह स्वभाव पसंद नहीं था और कस्तूर को गांधी की पढ़ाई और सादगी से रहने वाली सलाह बेतुकी लगती थी |

वैसे भी कस्तूर उम्र में गांधी से करीब छह महीने बड़ी थी और गलत बात पर दबना उनकी आदत नहीं थी | बाद में उनके इस दृढ़ निश्चयी स्वभाव की गांधी ने भी प्रशंसा की है और कहा है कि सत्य के प्रति आग्रह (सत्याग्रह) का पहला पाठ उन्होंने कस्तूर से ही सीखा था |

गांधी और कस्तूर में कुछ स्वभावगत मतभेदों के बावजूद एक दूसरे के प्रति प्रेम और सम्मान का भाव भी था। यह शायद उन दौनो के भारतीय संस्कारों का प्रतिफल था। गांधी कस्तूर को पढ़ाई के लिए भी संभवतः इसीलिए प्रेरित करते थे जिससे वे भी शिक्षा का लाभ उठा सकें | गांधी जी ने यह प्रयास अंतिम समय तक जारी रखा |

बहुत समय बाद कस्तूरबा जी को भी शिक्षा का महत्व समझ में आया और उन्होंने विभिन्न आश्रमो में रहते हुए काम चलाऊ विधाध्ययन और सवाध्याय किया भी जिसके पीछे गांधी की प्रेरणा ही प्रमुख कारण थी |

गांधी और कसतूरबा का प्रारंभिक वैवाहिक जीवन भारतीय संयुक्त परिवार के युवाओं के जैसा सामान्य ही था। घर की छोटी बहू होने के कारण घर गृहस्थी के रसोई आदि के अधिकांश काम कसतूरबा को ही करने पड़ते थे। स्वस्थ और घरेलू कामों में दक्ष कसतूरबा ससुराल की यह जिम्मेदारी बड़े जतन से

निभाती थी इसलिए बहुत जल्दी पति और परिजनों की चहेती बन गयी थी। कसतूरबा का यही गुण भविष्य में गांधी द्वारा शुरू किये गये कई आश्रमो के कुशल संचालन में काम आया था और वह स्वर्य भी आश्रम वासियों की बा(माँ) बन गई थी और बाद के सालों में बा के नाम से मशहूर हुई।

४. पढ़ाई से अरूचि और पारिवारिक संकट

करम चंद गांधी की मृत्यु के बाद गांधी परिवार की आर्थिक स्थिति दिन ब दिन कमजोर हो रही थी | पुतलीबाई की हिम्मत और स्नेह के कारण संयुक्त परिवार की गाड़ी पटरी पर थी | मोहनदास के बड़े भाई की कमाई पर ही युवा दंपति के खर्च का भार था। पूरे परिवार की नजर मोहनदास की पढ़ाई पर टिकी थी। सबकी उम्मीद थी कि ग्रेजुएसन के बाद उसे कोई कायदे की नौकरी मिल जाएगी तो बड़े भाई को भी थोडी राहत मिलेगी इसीलिए बड़े भैया और माँ ने यह निर्णय लिया था कि मोहनदास शामलदास कालेज से ग्रेजुएसन पूरी करेगा। थोडी आर्थिक तंगी के बावजूद सब ठीक से चल रहा था | कसतूरबा बड़ी किफायत और सादगी से रहते हुए घर का काम कर रही थी। पढ़ाई में जुटे मोहनदास से तब तक शानोशौकत की कुछ उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी। उन्हें भी यही आश थी कि जब पतिदेव पढ़ाई पूरी कर पूरा घर संभाल लेंगे तब वह भी अपने अरमान पूरे कर लेंगी।

होनी को तो कुछ और ही मंजूर था | मोहनदास का मन पढ़ाई से उचट गया | उन्हें यह महसूस होने लगा था कि ग्रेजुएशन के बाद भी कालेज के लडकों कोई खास नौकरी नहीं मिल रही है फिर चार साल की उबाऊ पढ़ाई से क्या फायदा ? भाई और माँ के समझाने के बाद भी मोहनदास पढ़ाई में मन नहीं लगा पाए और अंततः उन्होंने घर वालों को साफ कर दिया- मुझे इस पढ़ाई में कोई बेहतर भविष्य नहीं दिखता।

अगला यक्ष प्रश्न यह था कि कालेज की पढ़ाई छोड़कर मोहनदास ऐसा क्या काम कर सकता है जिससे घर की आर्थिक स्थिति बेहतर हो। मोहनदास के कालेज की पढ़ाई छोडने के दृढ़ निश्चय से यह तो सबने भांप लिया था कि मोहनदास अपनी ही पसंद से कुछ चुने वही बेहतर है | काफी सोच विचार और बडों से सलाह मशविरा के बाद मोहनदास को विलायत से बैरिस्टरी करना सबसे अधिक जमा | उन दिनों विलायत से बैरिस्टरी किये लोग बडी अदालतों में मुकदमों की पैरवी से अच्छी खासी कमाई कर रहे थे और उच्च वर्ग के समाज मे खासे प्रतिष्ठित भी हो रहे थे।

विलायत से बैरिस्टरी करना मोहनदास जैसे मध्यम वर्गीय परिवार के लडकों के लिए कई कारणों से आसान नहीं था। सबसे पहले तो इतनी रकम जुटाना आसान नहीं था। यदि रकम भी जुटा ली जाए तो मोढ बनिया समाज विलायत जाने के खिलाफ था क्योंकि उनकी मान्यता के अनुसार वहां रहकर स्वधर्म की रक्षा नहीं हो सकती।

५. बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए विलायत जाने का संघर्ष

गांधी को विलायत जाने के लिए बड़े भाई की सहमति सबसे पहले मिली लेकिन वह काफी नहीं थी | कसतूरबा को भी विश्वास में लेना था । पिता की अनुपस्थिति में माँ की अनुमति सबसे जरूरी थी | कसतूरबा भी गांधी के विलायत से बैरिसटरी कर हमेशा के लिए देश मे बस कर ठीक से घर गृहस्थी जमने की सुनहरी उम्मीद में तीन चार साल का पति विरह सहने के लिए तैयार हो गयी |

माँ को मनाने के लिए गांधी को मां की तीन शर्तों के लिए प्रतिज्ञा लेनी पड़ी कि वह विलायत में धर्म भ्रष्ट करने वाली तीन चीजों- मांस, मदिरा और महिलाओं से दूर रहेंगे। साथ ही उन्होंने परिवार के पुरुष मुखिया होने के नाते अपने देवर के पास भी गांधी को अनुमति के लिए भेजा था। चाचा ने गांधी को यही कहा- जब तुम्हारी माँ और भाई तैयार हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है लेकिन समाज की पंचायत को तुम्हारे विलायत जाने पर आपत्ति होगी | गांधी सबको समझाकर और सब बडों की अनुमति लेकर विलायत जाना चाहते थे। उस समय मोढ बनिया समाज के मुखिया गांधी के स्वर्गीय पिता के अच्छे परिचित थे इसलिए गांधी को उनसे सहानुभूति और समर्थन की उम्मीद थी लेकिन गांधी को उनसे मिलकर निराशा हुई | गांधी ने उन्हें समझाने की काफी कोशिश की लेकिन वे अपनी जिद पर अडे थे। उनका मानना था कि समाज से बाहर होकर कोई सात समंदर पार नहीं गया क्योंकि विलायत में जाने से धर्म का पालन नहीं हो सकता | गांधी ने कहा -मैंने अपनी माँ को वचन दिया है कि विलायत में रहते हुए धर्म भ्रष्ट नहीं होने दूंगा लेकिन मुखिया टस से मस नहीं हुए और उन्होंने अपना फैसला सुना दिया- यदि तुम विलायत गए तो तुम्हारा जाति बहिष्कार होगा और जो भी तुम्हारी मदद करेगा या तुम्हारी विदाई के मौके पर शरीक होगा उसे जुर्माना भरना पडेगा | गांधी वहां से चुपचाप चले आए। उन्होंने अपना फैसला नहीं बदल और निश्चय किया कि ऐसा बेतुका फैसला नहीं मानूंगा और विलायत जरूर जाऊँगा | अब खर्च की समस्या थी। न रियासत से सहायता मिली और न रिश्तेदारों से मदद हुई। सबने कुछ न कुछ बहाना बनाकर टाल दिया | अंत में संयुक्त परिवार ने ही सहयोग दिया | कस्तूरबा ने खुशी खुशी अपने गहने दे दिए। बड़े भाई ने घर का कीमती फर्नीचर बेचकर रकम जुटाई तब जैसे तैसे जरूरत का सामान जुटा | एक आम भारतीय के लिए आज सौ साल बाद भी कमोबेश यही स्थिति है। विलायत तो दूर अधिकांश परिवार देश के ही महंगे स्कूल कालेज आदि की फीस नहीं भर पाते | गांधी समझदार थे। उन्होंने शिद्दत से महसूस किया था कि कैसे घरवालों ने उनकी पसंद की उच्च शिक्षा के लिए रकम जुटाई थी। शायद इसीलिए विलायत में बैरिस्टरी की पढ़ाई करते समय उन्होंने बहुत किफायत से काम चलाया और मन लगाकर पढ़ाई पूरी की हालाँकि तीन साल लंबा विलायत प्रवास भी आसान नहीं था।

६. युवा गांधी के धार्मिक विचार

गांधी के परिवार का पूरा माहौल काफी धार्मिक था। उनके पिता अपने अंतिम समय में रामचरित मानस का नियमित पाठ बहुत चाव से सुनते थे। उन दिनों गांधी एक नर्स की तरह उनकी बड़े मन से सेवा करते थे और उतने ही ध्यान से रामचरित मानस भी सुनते थे। तुलसी दास के प्रति इसी युवपन में उनका मन श्रद्धानवत हो गया था जिसे वे अंतिम समय तक जब तब दोहराते रहते थे।

भगवान राम के प्रति गांधी जी के मन में असीम श्रद्धा बचपन में ही भर गई थी। इसका श्रेय गांधी अपनी धाय रंभा को देते हैं जिसने अंधेरे और भूत पिशाच से डरने वाले गांधी के मन से राम का नाम लेकर यह डर भगाने की सलाह दी थी | उसी का यह असर था कि बाद में भी गांधी जी ने अपनी रोजाना की प्रार्थना में "रघुपति राघव राजाराम" जैसी लोकप्रिय धुन को रखा था और अपने अंतिम समय में भी उनके मुंह से "हे राम" ही निकला था।

गांधी की माँ पुतलीबाई तो धार्मिक मान्यताओं मे बहुत ज्यादा विश्वास करती थी और नियमित व्रत उपवास रखती थी | मन की शुचिता और शुद्धि के लिए गांधी जी ने भी संभवतः अपनी माँ से ही यह संस्कार सीखकर समय समय पर कई महत्वपूर्ण उपवास किए | गांधी जी के धार्मिक विचार और आचरण पर जिन दो धार्मिक कथाओं का सबसे अधिक प्रभाव पडा वह मातृ पितृ भक्त श्रवन कुमार की माता पिता की अनुकरणीय सेवा और राजा हरिशचंद्र की ईमानदारी के किस्से हैं। श्रवन कुमार की कथा से उन्होंने असहाय और अशक्तों की सेवा की सीख ली और राजा हरिश्चंद्र की कथा से सच्चाई और ईमानदारी का सबक सीखा। गांधी जी ने अपने लेखों में स्वयं यह स्वीकार किया है कि अपनी संस्कृति की इन अनमोल धरोहरों के बल पर ही वे सत्य और सेवा के पथ पर निरंतर चलते रहे । गांधी की आरंभिक धार्मिक मान्यताओं मे सहिष्णुता और अन्य धर्मों के प्रति सम्मान की भावना भावना भी अपने धार्मिक घरेलू परिवेश के कारण ही आई थी। उनके घर में जैन गुरु बेचर जी स्वामी का भी बहुत सम्मान था, इसलिए वैष्णव धर्म का पालन करते हुए भी परिवार के लोग शिव की भी पूजा करते थे और जैन धर्म गुरु को भी मानते थे। ईसाई धर्म के लिए युवावस्था में गांधी के मन में अच्छी भावना नहीं थी। इसका प्रमुख कारण था कुछ ईसाई पादरियों के द्वारा हिंदुओं का धर्म परिवर्तन कराना | उनके यहां जिस हिंदू को ईसाई बनाया गया था उसके बारे मे गांधी को यह अच्छा नहीं लगता था कि धर्म परिवर्तन के बाद वह गोमांस खाने लगा है, मदिरा सेवन करता है और हिंदू धर्म के देवी देवताओं के बारे में उल्टी सीधी बात करने लगा है | इन हरकतों से ईसाई धर्म के लिए युवा गांधी के मन मे वितृष्ना का भाव आ गया था, इसीलिए विलायत जाते समय अपने परिवार के हितैषी जैन गुरु और अपनी माँ से

गांधी जी ने मांस ,मदिरा और विदेशी महिलाओं से दूर रहने की प्रतिज्ञा की थी। गांधी के धार्मिक विचारों मे परिपक्वता बाद मे इंग्लैंड और अफ्रीका प्रवास के दौरान आई जहाँ उन्हें दूसरे धर्म के धर्म गुरुओं से मिलने और उनके प्रमुख धर्म ग्रंथों एवं धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करने का मौका मिला.

७. पहली विलायत यात्रा

गांधी ने अपने संयुक्त परिवार के अच्छे भविष्य की कामना के लिए ही अपनी प्रानप्रिया युवा पत्नी की गोद मे एक नन्हा पुत्र छोड़कर और अपनी जाति की पंचायत के हुक्म का उल्लंघन कर विलायत में पढ़ाई की कठिन राह पकड़ी थी। इस समय आम युवाओं की तरह उनका एकमात्र सपना अपने परिवार की ठीक से आजीविका चलाने का था। समुद्री जहाज की लंबी यात्रा में मनपसंद बैरिस्टरी की पढ़ाई का रोमांच तो था लेकिन यात्रा के दौरान ही गांधी को आगे की डगर कठिन दिखाई देने लगी थी। जहाज मे उनके साथी मजुमदार के अलावा बाकी सब अंग्रेजी मे बोलते बतियाते अंग्रेज लोग थे। गांधी का शर्मीला स्वभाव और अंग्रेजी बोलने में असमर्थता की दोहरी दीवार ने उन्हें अकेला कर दिया | जहाज के खाने के सामान मे मांस ही प्रमुख था | मजूमदार गांधी के स्वभाव के विपरीत मांसाहारी और सब से घुल मिल जाने वाले मस्त मौला किस्म के थे। जब जहाज़ के डैक पर बहुत कम लोग रहते गांधी तभी अपनी कोठरी के बाहर आते अन्यथा अंदर ही रहते और अपने साथ बांधकर लाए खाने के सामान खाकर सो जाते। जहाज पर यात्रा कर रहे एक सुकोमल हृदय अंग्रेज सहयात्री ने एकाकी रहते गांधी से खुद आगे बढ़कर बातचीत शुरू की और उन्हें समझाने की कौशिश की कि ब्रिटेन की ठंडी में मांसाहार जरूरी है। गांधी के लिए माँ को दी तीन प्रतिज्ञा में किसी की भी अवहेलना असंभव थी। गांधी दृढ़ निश्चयी थे कि माँ को दिया वचन हर हाल मे निभाना है | चाहे विलायत की पढ़ाई पूरी हो या वापस हिंदुस्तान लौटना पड़े लेकिन अपनी प्रतिज्ञा पर आंच नहीं आने देंगे | विलायत पहुँचकर कुछ दिन उन्होंने एक होटल में बिताए | वहां का खर्च गांधी परिवार की हैसियत के बाहर था। यहां पहुंचकर सबसे पहले उन्होंने प्रानजीवन मेहता को तार से अपने पहुँचने की खबर की जिनके लिए वे एक सिफारिशी पत्र लाए थे। गांधी का तार मिलते ही मेहता उनसे मिलने होटल आ गये | उन्होंने गांधी को विलायत में अपने अनुभव के आधार पर कई हिदायत दी और यह भी सलाह दी कि वे यहां किराये के मकान में किसी परिवार के साथ रहें और यहां रहते हुए यहां की वेशभूषा और रहन सहन के तौर तरीकों को भी जल्द अपना लें तभी वह संभ्रांत लोगों से ठीक से घुल मिलकर विलायत के जीवन से तालमेल बिठाने में सफल होंगे। मेहता जी जैसे शुभचिंतक की सलाह मानकर गांधी ने तुरंत होटल छोड़ कर दो कमरे का किराए का घर लिया और शीघ्रातिशीघ्र अंग्रेजों की तरह रहन सहन की तैयारी शुरू कर दी। विलायत में गांधी का एक ही लक्ष्य था- माँ को दिए वचन निभाते हुए बैरिस्टरी की पढ़ाई करना।

८. विलायत में गांधी की भोजन, आवास और रहन सहन आदि की समस्याएं

विलायत में गांधी के आवास की समस्या तो होटल के बजाय किराए के मकान में सामान जमाकर हल हो गई थी लेकिन दो बडी समस्याएँ अभी भी पार करनी थी। एक थी भर पेट स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन और दूसरा अंग्रेजी रहन सहन | किराए के मकान में मकान मालकिन जैसे तैसे शाकाहारी भोजन तो बना देती थी लेकिन उससे गांधी का पेट नहीं भरता था | जिन लोगों को गुजरात के वैष्णव परिवार का शुद्ध शाकाहारी भोजन खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे जानते हैं कि उसमें चटपटे नमक मसाले अचार पापड़ आदि का स्वाद समाहित होता है | उसके मुकाबले विलायत के शाकाहारी खाने मे उबली फीकी सब्जी और सूखी रोटी। गांधी की खुराक अच्छी खासी थी लेकिन उन्हें अपने शर्मीले स्वभाव के कारण मकान मालकिन से अधिक रोटी मांगने में संकोच होता था और अक्सर भूखे ही रह जाते थे। धीरे धीरे गांधी ने भोजन का इलाज भी खोज लिया | वैसे भी भोजन और नींद दो ऐसी चीज हैं जिन्हें हम अधिक समय तक स्थगित नहीं कर सकते | गांधी ने एक शुद्ध शाकाहारी भोजनालय खोज लिया जहाँ भर पेट भोजन किया जा सकता है | गांधी के बड़े भाई जैसे तैसे गांधी की हर आवश्यकता की पूर्ति के लिए धन मुहैया करा देते थे लेकिन गांधी अपने संयुक्त परिवार की आर्थिक स्थिति से वाकिफ थे इसलिए बहुत दिन तक रेस्टोरेंट में खाना नहीं खा सकते थे | इस समस्या का स्थाई समाधान गांधी ने एक अंगीठी खरीद कर खुद अपनी पसंद का खाना पकाकर किया। अब गांधी को एक ही धुन सवार थी कि यथा शीघ्र विलायत के रंग में रंगना है जिससे यहां के संभ्रांत समाज मे प्रवेश हो सके | इस के लिए जरूरी बातें मेहता जी ने पहली मुलाकात में ही बता दी थी | गांधी ने विलायत के प्रसिद्ध फैसनेबल सूट बनवाए। खुद टाई बांधकर जेंटलमैन बनना सीखा। पाश्चात्य संगीत और नृत्य की ट्रेनिंग लेना शुरू किया और अंग्रेजी के अध्ययन पर विशेष जोर देना शुरू किया | यहां तक कि भाई की आर्थिक परिस्थितियों को जानते हुए भी दूसरों को प्रभावित करने के लिए जेब में रखने वाली सोने की चेन वाली घड़ी भी खरीदी।

दरअसल गांधी को यह आभास हो गया था कि विलायत की बैरिस्टरी की पढ़ाई बहुत कठिन नहीं है लेकिन बैरिस्टरी के लिए बाहरी तामझाम और दिखावा अधिक जरूरी है | करीब तीन महीने गांधी पर विलायत का रहन सहन आत्मसात करने का भूत सवार रहा। इससे उनका खर्च भी काफी बढ रहा था। कुछ समय बाद गांधी के संपर्क में कुछ ऐसे छात्र भी आए जो बेहद किफायत से अपनी पढ़ाई कर रहे थे और गरीब बस्ती में एक छोटी सी कोठरी मे रहकर काम चला रहे थे | गांधी पर उनका भी प्रभाव पडा। उन्हें अहसास हुआ कि विलायत में वे बसने नहीं सिर्फ तीन साल के लिए पढने आए हैं | यह अहसास होने पर गांधी ने दो कमरों का घर छोड़ कर एक कमरे का मकान किराए पर लेकर थोड़ी

सादगी से रहना शुरू किया। साथ ही उन्होंने नृत्य संगीत की शिक्षा भी बंद कर दी हालाँकि महंगे कपडों के प्रति अभी भी उनका आकर्षण बरकरार रहा। कपड़ों की सादगी का पवित्र भाव तो उनके मन मे बीस साल बाद चंपारन के किसान परिवारों की दुर्दशा देखने के बाद ही आया |

९. विलायत में गलत राह पर फिसलते हुए बचे

गांधी के बचपन और युवावस्था मे ऐसी कोई विलक्षण प्रतिभा के दर्शन नहीं होते जिनसे खुद गांधी या उनके मित्रों और परिजनों को यह आभास हो सके कि भविष्य में यह साधारण कद काठी का बेहद शर्मीला नौजवान धीरे धीरे महानता की ऊंची सीढ़ियाँ चढता हुआ ऐसे कीर्तिमान स्थापित करेगा जिस की बराबरी करना आने वाली सदियों तक बडे बडे लोगों के लिए असंभव होगा।

अपने गृह नगर में गलत संगत के कारण गांधी ने चोरी छिपे बीडी पीने की लत लगाई थी | यह लत पूरी करने के लिए नौकर की जेब से चोरी भी की। चोरी में सफलता मिली तो हिम्मत और भी बढी | भाई के कर्ज को चुकाने के लिए सोने के कडे से सोना भी चुराया। एक ऐसे मित्र के साथ मिलकर चोरी चोरी मांस भी खाना शुरू किया जिसे गलत आदतों के कारण कसतूरबा ,गांधी के बड़े भाई और माँ कतई पसंद नहीं करते थे लेकिन उसकी ताकत और साहस के कारण गांधी को उसकी मित्रता में रस आता था। गांधी ने गलत सोहबत में यह सब आदतें डाल तो ली थी लेकिन उनकी अंतर्आत्मा अक्सर उन्हें कचोटती थी कि वे अपने सत्य प्रिय माँ बाप से छिपकर ऐसे गलत काम करने लगें हैं जिनकी सच्चाई सामने आने पर बहुत शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी और इससे माँ बाप को भी बहुत दुख पहुँचेगा। गांधी ने एक दिन भाई के कडे चोरी करने के अपराध के लिए माफी माँगते हुए अपने पिता को बड़ा मार्मिक पत्र लिखा। उन्हें उम्मीद थी कि पिता यह जानकर आग बबूला होंगे लेकिन गांधी मन पर भारी बोझ बने इस अपराध के लिए हर सजा भुगतने के लिए तैयार थे। जो हुआ वह एकदम अप्रत्याशित था। बीमार पिता ने पत्र पढकर क्रोध नहीं किया उल्टे उनकी आंखों में आंसू आ गए | यह घटना गांधी के जीवन में एक नया मोड़ लाई | उन्होंने सीखा कि अपनी गलती का सहज स्वीकार सामने वाले के मन में क्षमा और ममता का अहसास पैदा कर सकता है। बाद में गांधी अपने विरोधियों के हृदय परिवर्तन के लिए इसी मंत्र का इस्तेमाल करते थे।

विलायत में भी गांधी ने कम उम्र में शादीशुदा भारतीयों के खुद को अविवाहित बताने की आम परंपरा के अनुसार लोगों से अपने विवाह को छिपाकर रखा था। एक विधवा ने गांधी की एक अविवाहित लड़की से यह सोचकर मुलाकात कराई थी कि वे एक दूसरे को समझकर शादी कर सकें | कुछ दिन तक

गांधी उस विधवा के घर इस युवती से बातें करने के मोहवश जाने लगे थे लेकिन यहां भी उनकी आत्मा को यह संबंध ज्यादा आगे बढाना उचित नहीं लगा | इस बार भी संकोच के साथ गांधी ने इन विधवा महिला को पत्र लिखकर माफी माँगी। सौभाग्य से इनसे भी पुत्र समान गांधी को न केवल माफी मिली अपितु आगे भी उनसे स्नेह संबंध बने रहे।

गांधी के जीवन में कुछ और भी ऐसी ही घटनाएँ घटी जिसके कारण वे गलत आदतों के शिकार बन सकते थे लेकिन कोई न कोई ऐसा सुखद संयोग होता था कि समय रहते वे अपनी आत्मा की आवाज सुनकर गडढे की तरफ बढ़ते अपने कदमों को रोकने मे सफल हो जाते थे। एक बार संभलने पर वह यह संकल्प अवश्य लेते थे कि दुबारा अपने कदम ऐसे रास्तों पर नहीं पड़ने देंगे | इसी संकल्प शक्ति ने धीरे धीरे एक साधारण मानव को महात्मा बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। --

१०. विलायत में शिक्षा और शिक्षा से इतर सीख

विलायत में पहले कुछ महीने गांधी ने ठीक से अपने पैर जमाने की कौशिश में जाया किये। नृत्य और फैशन के चक्कर मे भाई की गाढी कमाई का काफी पैसा भी सूट बूट पर बर्बाद किया लेकिन कुछ गरीब मेहनती साथियों को बहुत किफायत से पढ़ाई करते देखा तो गांधी को भी बाहरी तामझाम के बजाय अधिक से अधिक पढ़ाई करने के लिए प्रेरणा मिली |

कुछ दिन की पढ़ाई के बाद और वरिष्ठ लोगों से मुलाकात के बाद गांधी को लगने लगा था कि बैरिसटरी की पढ़ाई बहुत कठिन नहीं है इसलिए उन्होंने तय किया कि इसके साथ वे लैटिन और फ्रैंच भाषा की परीक्षा भी देंगे क्योंकि लैटिन के बहुत से शब्दों का इस्तेमाल बड़े बैरिसटर और न्यायाधीश अक्सर करते हैं और फ्रैंच उन दिनों यूरोप की लोकप्रिय भाषा थी। पहली बार मे गांधी इस परीक्षा में फेल हो गये लेकिन गांधी असफलता से डरे नहीं और अगली बार अधिक मेहनत से सफलता भी पायी। गांधी ने दो और अच्छी चीजें विलायत प्रवास मे सीखी। एक - उन्हें पढ़ाई से इतर अखबार और किताबें पढने का शौक लगा और दूसरा समाज सेवा के काम करने वाली संस्था से जुड़ने का अनुभव हुआ। शाकाहारी भोजन के लिए गांधी पहले जहाज़ की लंबी यात्रा और फिर लंदन में काफी परेशान होते इधर उधर भटके थे। इस दौरान उन्होंने शाकाहार पर कुछ किताबें भी पढ़ी और इस विषय मे अपने पुराने विचार बदले जिसके अनुसार विलायत और खासकर ठंडे इलाके में मांसाहार स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। अब उन्हें यह विश्वास हो गया था कि शाकाहार से हम अच्छा स्वास्थ्य बना सकते हैं| शाकाहारी जीवन के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से उन्होंने शाकाहारी लोगों की एक संस्था भी बनाई थी जिसके वे मंत्री बने। किसी संस्था के निर्माण और संचालन का गांधी का यह पहला अनुभव था | बाद के जीवन में तो वह संस्था बनाने और उनके कुशल संचालन में सिद्धहस्त हो गए थे।

विलायत में ही गांधी ने विभिन्न धर्म ग्रंथो का अध्ययन किया था | भारत में रहते हुए उनका धार्मिक ज्ञान बहुत सीमित था और वह जो कुछ अपने वैष्णव परिवार में देखा सुना था सिर्फ उतना ही था। थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्य कुछ मित्रों के संपर्क मे आने पर उन्होंने पहली बार गीता का अध्ययन किया | गीता का गांधी पर दूरगामी प्रभाव पडा | बाद के वर्षों में उन्होंने गीता पर आधारित अनाशक्ति योग नाम की एक लोकप्रिय कृति भी लिखी और अपने जीवन में भी गीता के संदेश को आत्मसात करने की हर संभव कौशिश की और गीता में उल्लिखित स्थितप्रज्ञ की तरह जीवन बिताया।

इसी दौरान गांधी ने बुद्ध दर्शन का अध्ययन किया और बाईबल पढी। इन दो धार्मिक कृतियों को पढने के दौरान गांधी ने पाया कि सभी धर्मों के सार तत्व एक समान हैं | बाईबल पढने के बाद उनके मन से ईसाई धर्म के प्रति नफरत के पुराने भाव भी निकल गये जो भारत मे धर्मांतरण को देखकर बने थे। गांधी ने अपनी आत्म कथा मे भी लिखा है कि विलायत में बैरिसटरी की पढ़ाई के बाद उनमें अच्छे वकील बनने की काबलियत तो नहीं आई थी लेकिन धर्म की अच्छी जानकारी हो गई थी |

११. विलायत से भारत वापसी

विलायत में गांधी का पहला प्रवास बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए ही था। जैसे ही उन्हें डिग्री मिली उसके अगले दिन इंग्लैंड के हाईकोर्ट में रजिस्ट्रेशन कराकर तीसरे दिन उन्होंने बम्बई वापसी का जहाज पकड़ लिया। बम्बई पहुँचते ही उन्हें लेने आए बड़े भाई ने उन्हें माँ की मृत्यु का दुखद समाचार दिया | गांधी की पढ़ाई में बाधा न हो यही सोचकर यह खबर अब तक उनसे छिपाई गई थी। गांधी इस खबर से टूट से गये | उन्हे इस बात का बेहद मलाल था कि पिता की तरह वह अंतिम समय में मां की जरा भी सेवा नहीं कर सके। गांधी उन्हें यह भी नहीं बता सके कि उन्हें दी गई तीनों प्रतिज्ञा उन्होंने अक्षुण्ण रखी और उसी के कारण तमाम अवसरों, समस्याओं और प्रलोभनो के बावजूद उन्होंने मांस, मदिरा और विदेशी महिलाओं से खुद को दूर रखा |

विलायत छोड़ते समय गांधी इस बात से भी चिंतित थे कि बैरिस्टरी की पढ़ाई मे उन्हें वैसा व्यावहारिक ज्ञान हासिल नहीं हुआ जिसके कारण भारत में वकालत जमाई जा सके। एक तो पढ़ाई के दौरान भारतीय कानूनों की जानकारी नहीं दी गई थी और न अदालतों की कार्रवाई का व्यावहारिक अनुभव हुआ था | भारत की अदालतों के अहंकारी अंग्रेज अधिकारियों एवं तिकडमी वकीलों की तरह तरह की कारगुजारियों से भी गांधी परिचित थे | भारत आते समय उनमें यह आत्म विश्वास नहीं आया था कि विलायत से पढ़ाई के बावजूद वे यहां अपनी वकालत जमा पाएँगे | दूसरी तरफ परिवार के लोगों को उन से बहुत उम्मीद थी | सब यही सोचते थे कि गांधी के लौटते ही घर की आर्थिक स्थिति एक बार फिर से पुराने ढर्रे पर लौट आएगी।

भाई और शुभचिंतकों से सलाह मशविरे के बाद यही तय हुआ कि बम्बई में ही वकालत करना बेहतर है। इस निर्णय के पीछे एक कारण और था। गांधी के भाई का राजकोट रियासत से कोई विवाद हो गया था जिसके कारण वहां के अंग्रेज अधिकारी ने भी उनके बारे मे गलत राय बना ली थी | उस अंग्रेज अधिकारी से विलायत में गांधी की मुलाकात हुई थी हालाँकि वह परिचय दोस्ती जैसा नहीं था। फिर भी भाई की जिद के सामने न चाहते हुए भी गांधी को उनसे भाई का पक्ष रखने के लिए मिलना पड़ा। अधिकारी ने इसे सिफारिश मानकर गांधी से इस विषय पर कुछ भी नहीं सुनने का फरमान सुना दिया | गांधी ने अपनी बात रखने की कौशिश की तो अधिकारी ने दरबान से उनकी बांह पकड़कर बाहर करा दिया | गांधी अपने अपमान की शिकायत करना चाहते थे लेकिन वरिष्ठ बैरिस्टर फिरोजशाह ने उन्हें रोक दिया और कहा- भारत में ऐसे व्यवहार आम हैं | इस से आपके लिए आगे वकालत करना मुश्किल हो जाएगा |

गांधी यह अपमान बर्दाश्त कर गए। उन्हे अभी अपने घर की आर्थिक स्थिति ठीक करनी थी। इसलिए वकालत जमाने बम्बई आ गए।

१२. नहीं जमा वकालत का पेशा

जिस समय गांधी ने अपनी आजीविका के लिए वकालत का पेशा चुना था उस समय उन्हें इस पेशे की अंदरूनी पेचीदियों का कतई भान नहीं था। यदि उन्हें वकालत की षड्यंत्री तिकडमो की थोड़ी सी भी जानकारी होती तो बेहद संकोची और शर्मीले स्वभाव के गाँधी बैरिस्टरी का सपना बिल्कुल नहीं देखते।

विलायत मे बैरिस्टरी की पढ़ाई करते हुए ही उन्हें यह संशय सताने लगा था कि भारत में बैरिस्टरी करना उनके लिए आसान काम नहीं होगा। उस समय तक उन्होंने यह भी नहीं सोचा था कि इस काम के लिए वे बेकार साबित होंगे।

बम्बई आने के बाद अच्छी खासी कमाई तो दूर दो तीन महीने उनके पास एक भी मुकदमा नहीं आया। उन दिनों भी वकीलों को मुकदमा पकड़ने के लिए दलाली देनी पड़ती थी जो गांधी के लिए अनैतिक काम था।

तीनेक महीने बाद गांधी को एक मुकदमा बिना कमीशन दिए मिल भी गया | गांधी ने पूरे मन से तैयारी की लेकिन जिस समय मुकदमे में जिरह करने की गांधी की बारी आई उस समय गांधी के हाथ पैर फूल गये और अदालत में वे ठीक से खड़े भी नहीं हो सके | अंततः बड़ी मुश्किल से हाथ लगे पहले मुकदमे से भी उन्हें हाथ धोना पड़ा | बिना काम मिले बम्बई के खर्च अधिक दिन चलाना संभव नहीं था इसलिए गांधी को मजबूरी में वापस राजकोट लौटना पड़ा।

राजकोट में भी वकालत जमाना गांधी जैसे नौसिखिए और नैतिकता के साथ वकालत करने के आग्रही गांधी के लिए संभव नहीं था इसलिए वहां भी उन्होंने अर्जी आदि लिखने के हल्के काम शुरू किये | गांधी की पढ़ाई के हिसाब से यह काम शोभनीय नहीं था और इससे आमदनी भी बहुत अधिक नहीं थी।

भाई के एक परिचित के मुकदमे से जुड़े काम के लिए गांधी को एक बार फिर से विदेश जाने का काम मिला | हालाँकि गांधी को विदेश जाने का कोई खास चाव नहीं था लेकिन इस बार पढ़ाई की बजाय कमाई का ठीक ठाक अवसर था | अफ्रीका के एक भारतीय मुस्लिम व्यापारी का अफ्रीका की अदालत में एक बड़ा मुकदमा चल रहा था जिसके लिए उन कम पढ़े अमीर व्यापारियों को एक ऐसे भारतीय वकील की आवश्यकता थी जो उनके अंग्रेज वकील के सहायक के रूप में काम कर सके | कम पढ़े

लिखे होने के कारण वह लोग गांधी के माध्यम से अंग्रेज वकील को अपना मामला अच्छी तरह समझा सकते थे इसलिए उन्हें गांधी की सेवाओं की आवश्यकता थी |

गांधी को वकालत की बजाय अफ्रीका के बड़े वकील की सहायता करना अधिक आसान लगा | इस काम के लिए गांधी को फीस भी ठीक ठाक मिल रही थी। यात्रा और वहां रहने का सब खर्च उठाकर 105 पौंड की रकम तय हुई थी | गांधी को लगा इस रकम को वे भाई को मदद के रूप मे भेज सकते हैं।

इस तरह गांधी के अफ्रीका प्रवास का मुहुर्त बना। तब किसे पता था कि गांधी के इस विदेश दौरे से वे कहां से कहां पहुँच जाएंगे |

१३. अफ्रीका के बेहद त्रासद और खतरनाक अनुभव

अफ्रीका के बंदरगाह पर सेठ अब्दुल्ला खुद गांधी को लेने आए थे | सेठ अब्दुल्ला काफी अमीर व्यापारी थे लेकिन गांधी ने महसूस किया कि उनके साथ भी वहां के गोरे अधिकारियों का रवैया ठीक नहीं था | इस वाक्य से अफ्रीका पहुंचते ही गांधी को वहां रहने वाले हिंदुस्तानियों की हालत का प्रथम दृष्टया अनुमान हो गया था |

गांधी को अफ्रीका में रंगभेद का वीभत्सतम रूप भी कुछ दिन बाद ही दिखाई दिया जब उन्हें प्रथम श्रेणी का टिकट होने पर भी धक्के मारकर गाडी के बाहर स्टेशन पर ठिठुरते हुए छोड़कर गाडी आगे बढ गयी थी |

गांधी अब्दुल्ला सेठ के जिस मुकदमे मे मदद के लिए अफ्रीका गये थे उसके लिए उन्हें बड़े वकील से मिलने प्रीटोरिया जाना था | गांधी बड़ी शान से प्रथम श्रेणी का टिकट खरीदकर आराम से डिब्बे में बैठे थे। गाड़ी मोरित्सबर्ग नाम के छोटे स्टेशन पर रूकी थी जहाँ एक गोरा यात्री डिब्बे में चढ़ा था। उसे काले रंग के गाँधी को अपने साथ यात्रा करना पसंद नहीं था। उसने गार्ड के माध्यम से गाँधी को तीसरे दर्जे के डिब्बे में जाने के लिए कहा | गांधी इस पर सहमत नहीं हुए तो उन्हें धक्के देकर सामान सहित गाड़ी के बाहर फेंक दिया और गाड़ी चली गई |

गांधी को वह रात सर्दी में ठिठुरते हुए स्टेशन पर ही गुजारनी पडी। अफ्रीका मे अंग्रेजों की रंग भेद की अमानवीय नीति के साथ गांधी का यह पहला साक्षात्कार था। इस यात्रा में गांधी को मिली क्रूर और बेहद अमानवीय यातना का और अधिक वीभत्स हिस्सा तो अभी बाकी था।

मोरितस्बर्ग से तो अगले दिन गांधी आगे के लिए दूसरी ट्रेन से चले गए थे लेकिन आगे की यात्रा सिकरम(घोडागाडी) से करनी थी | वहां भी अंग्रेज संचालक ने उन्हें अंदर बैठे गोरे यात्रियों के साथ नहीं बैठने दिया। गांधी यह अपमान भी बर्दाश्त कर बाहर कोचवान के साथ बैठ गये। गोरे संचालक ने कुछ समय बाद गांधी को वहां से भी हटने के लिए कहा ताकि वह वहां बैठकर सिगरेट पी सके। इस बार गांधी ने उसके जूतों के पास बैठने से मना कर दिया | ना सुनते ही गोरे ने गांधी को पीटना शुरू कर दिया। यात्रियों के समझाने पर सिकरम संचालक ने गांधी की पिटाई बंद की। इस तरह अपने जीवन में पहली बार इतना अपमान और बेरहम पिटाई का दंश झेलकर गांधी अपने गंतव्य प्रीटोरियो पहुँचे जहां रहकर उन्हें अब्दुल्ला सेठ के मुकदमे का काम देखना था।

गांधी की यह यात्रा इसलिए ऐतिहासिक महत्व की है क्योंकि इसी यात्रा में पहली बार गांधी ने अफ्रीका की अंग्रेजी हुकूमत की बर्बरता और अधिसंख्य आबादी के साथ किये जा रहे घोर अन्याय का साक्षात अनुभव किया था।

इस यात्रा के महत्व को बताते हुए लखनऊ में आयोजित एक कार्यक्रम मे लेखक शिव खेडा ने कहा था - जिस रात अंग्रेजो ने गांधी को रेल के डिब्बे से बाहर फेंका था शायद उसी दिन गांधी ने संकल्प लिया था कि वे एक दिन इस अन्यायी शासन को ही उखाड़ फेंकेंगे।

यह किसी हद तक सही भी है | इस यात्रा के कटु अनुभव के बाद गांधी ने अफ्रीका में हिंदुस्तानियों के साथ होने वाले तमाम भेदभावों का लेखा जोखा बनाना शुरू कर दिया था ताकि उसे पूरी दुनिया के सामने ला सकें।

१४. धार्मिक विचारों की परिपक्वता और अफ्रीका के ईसाइयों का अहंकार

एक तरफ अफ्रीका के अंग्रेज अधिकारियों का काले (जिन्हें हब्सी कहा जाता था) और एशियाई लोगों से जानवरों से भी बदतर व्यवहार था। दूसरी तरफ कुछ बेहतर ईसाई धर्म प्रचारक ईसाई धर्म को दुनिया के सर्वोत्तम धर्म के रूप में प्रचारित प्रसारित करते थे |

प्रीटोरिया में अब्दुल्ला सेठ का मुकदमा लड रहे वकील श्री बेकन पादरी भी थे और वे भी ईसाई धर्म के लिए प्रचार करते थे | उनके माध्यम से गाँधी की मुलाकात और भी कई अच्छे ईसाइयों से हुई थी जिन्होंने गाँधी को ईसाई धर्म से जुड़ी कई पुस्तक उपलब्ध कराई थी | यह लोग गांधी को अपनी प्रार्थना सभा में भी बुलाते थे और गाँधी को ईसाई धर्म की महानता के किस्से सुनाते थे। गांधी इन सबको अच्छे ईसाई मानते थे और इनसे मित्रता भाव भी रखते थे लेकिन वे ईसाई धर्म को दुनिया का सबसे बेहतर धर्म मानने और धर्म परिवर्तन कर ईसाई धर्म अपनाने के लिए कतई तैयार नहीं थे। इन लोगों मे एक सज्जन श्री कोटस भी थे जिनसे गांधी की अच्छी मित्रता हो गई थी। वे भी गांधी को अपनी तरह से ईसाई धर्म की श्रेष्ठता बताने के लिए उन्हें कई किताबें दे चुके थे |

दूसरी तरफ अब्दुल्ला सेठ और उनके साथी गांधी को इस्लाम के बारे में इसी तरह की बातें बताते थे। इस्लाम को समझने के लिए गांधी ने कुरान भी खरीद कर पढा |

गांधी जब अपने हिंदु धर्म के बारे में इसी तरह का चिंतन करते तो उन्हें अपना हिंदू धर्म भी सबसे अच्छा नहीं लगता था क्योंकि उसमें भी अस्पृश्यता जैसी गलत परंपराएँ थी।

सब धर्मों के श्रेष्ठता के दावों पर गाँधी ने हिंदुस्तान के कई धर्म शास्त्रियों से भी पत्राचार किया लेकिन उन्हें सबसे बेहतर समाधान जैन धर्म गुरु रायचंद जी की राय में नजर आया | उन्होंने गांधी को लिखा- " निष्पक्ष भाव से विचार करते हुए मुझे यह प्रतीति हुई है कि हिंदू धर्म मे जो सूक्ष्म और गूढ विचार हैं, आत्मा का निरीक्षण है, दया है, वह दूसरे धर्मों में नहीं है "।

गांधी के बाद के जीवन में हमें धर्म के प्रति कोई संशय नहीं मिलता | वे आजीवन अपने हिंदू धर्म के प्रति आस्थावान रहे और यह मानते रहे कि सभी धर्मों के सार तत्व लगभग एक से ही हैं और सब मे कुछ त्रुटियां भी हैं इसलिए कोई भी धर्म सर्व श्रेष्ठ नहीं है। गांधी का यह भी मानना था कि हिंदू धर्म मे विश्वास रखने वाले अच्छे हिंदू भी वैसे ही हैं जैसे अच्छे मुस्लिम और अच्छे ईसाई |

१५. वकालत की सार्थकता

गांधी की अफ्रीका यात्रा सेठ अब्दुल्ला के मुकदमे में अंग्रेज वकील की सहायता करने के लिए हुई थी । कुछ ही दिनों में गांधी को यह विश्वास हो गया था कि यह मुकदमा काफी उलझा हुआ है और बहुत जल्दी फैसला आने वाला नहीं है । वह यह भी जानते थे कि मुकदमा लंबा खिंचने की स्थिति में सबसे अधिक फायदा दौनो तरफ के वकीलों को होने वाला है और अतं मे जीतने वाले पक्ष के हाथ भी बहुत अधिक नहीं आएगा |

इस मुकदमे में दूसरा पक्ष भी भारतीय ही था । सेठ तैयब की प्रिटोरिया में वैसी ही हालत थी जैसी नेटाल में सेठ अब्दुल्ला की । इस मुकदमे के कारण कभी अच्छे मित्र रहे थोक एक दूसरे के स्थाई दुश्मन बन रहे थे । गांधी को लगा कि अगर वह दौनो भारतीय व्यापारियों के बीच समझौता करा दें तो इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता | उन्होंने अपने मन की बात पहले सेठ अब्दुल्ला से कही और उनकी सहमति मिलने पर दूसरे पक्ष से | गांधी का यह प्रयास सफल हो गया | पंचो के फैसले में जीत अब्दुल्ला की हुई लेकिन गांधी ने अब्दुल्ला को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वे अपनी रकम पाने के लिए सामने वाले पक्ष को ज्यादा समय दे दें जिससे उन्हें तकलीफ न हो और वे दिवालिया न होने पाएँ | गांधी के इस प्रयास से उनकी साख जम गयी । गांधी जी को खुद भी बहुत संतोष हुआ | अच्छी वकालत के बारे में उनके विचार और दृढ़ हो गए । इस विषय पर बाद में 1909 मे लिखी अपनी प्रसिद्ध कृति "हिंद स्वराज" मे वकालत और वकीलों के बारे में उन्होंने बहुत तल्खी के साथ लिखा है कि बहुत से वकील अपने पेशे में अनैतिक काम करते हैं और अपने मुवक्किल को गुमराह कर बेवजह के मुकदमे में उलझाते हैं | गांधी जी के अनुसार वकीलों का कर्तव्य है कि लोगों को मुकदमेबाजी से बचाएं और झगडों के शीघ्र समझौते का प्रयास करें |

गांधी ने अब्दुल्ला के मुकदमे को अपनी इसी वैचारिकता से इस अंजाम तक पहुंचाया था । इसमें उन्होंने अपने वकालत पेशे की सार्थकता का भी अहसास किया था ।

गांधी ने अपनी वकालत के दो और खास किस्सों को अपनी आत्म कथा में जगह दी है । एक बार उनके मुवक्किल ने गांधी से भी सच छिपाया था । मालूम होने पर गाँधी ने मजिस्ट्रेट से अपने मुवक्किल के लिए सजा की माँग की क्योंकि गांधी पहले ही बता देते थे कि वे झूठा मुकदमा नहीं लडेंगे ।

एक बार उनके मित्र रूस्तम जी की चुंगी चोरी पकड़ी गई । वे चाहते थे कि गांधी उनका मुकदमा लडें | गांधी ने उन्हें कहा कि वे चुंगी अधिकारी और सरकारी वकील को सच बताकर उन्हें जुर्माना लगाकर

जेल जाने से बचाने की कोशिश करेंगे लेकिन यदि फिर भी उन्हें जेल हुई तो उन्हें चोरी का प्रायश्चित करना चाहिए | रूस्तम जी घबरा रहे थे लेकिन गांधी के सच से प्रभावित होकर उन्हें दोहरा जुर्माना लगाकर छोड़ दिया गया | रूस्तम जी ने अपने बच्चों को भी फिर कभी चोरी न करने की सीख दी ।

आज हमारे देश मे मुकदमों की संख्या इतनी है कि वर्तमान गति से उनके निबटने मे सैकड़ों साल लग सकते हैं | यदि अधिकांश वकील गांधी की तरह सात्विक वकालत करें तो पहाड़ जैसी दिखती यह समस्या बहुत आसानी से हल हो सकती है |

१६ अफ्रीका में गांधी का अपमान

वैसे तो अफ्रीका में नेटाल के डरबन बंदरगाह पर कदम रखते ही गांधी ने अब्दुल्ला सेठ के साथ अफ्रीका के अंग्रेज अधिकारियों के रवैये को देखकर यह अनुमान लगा लिया था कि यहां भारतीय लोगों की इज्जत नहीं है। जैसे जैसे दिन बीतते गए गांधी के साथ भी एक के बाद एक कई ऐसे हादसे हुए जिससे उन्हें यह अहसास हो गया कि यहां रहने वाले भारतीयों की हालत बहुत दयनीय है।

गांधी का पहला प्रत्यक्ष अपमान वहां के कोर्ट में हुआ जहाँ उन्हें पगड़ी उतारने के लिए कहा गया | गांधी इसके लिए तैयार नहीं हुए तो उन्हें कोर्ट से बाहर आना पड़ा | गांधी ने मजिस्ट्रेट द्वारा किये इस अपमान के विरोध में समाचार पत्रों में पत्र लिखे जो उन्होंने गांधी के पक्ष या विरोध में प्रकाशित भी किये | इस घटना से गाँधी को दक्षिण अफ्रीका में काफी लोग जानने लगे | इस घटना के बाद भी अफ्रीका प्रवास के दौरान गांधी ने अपनी पगड़ी नहीं छोड़ी।

डरबन से प्रीटोरिया के सफर में पहले मोरितस्बर्ग के स्टेशन और फिर सिकरम के सफर में गांधी पर गोरों का जो कहर बरपा उस ऐतिहासिक बर्बरता की तो जितनी भर्त्सना की जाए वह कम है (इसका हमने पहले जिक्र किया है)।

जोहानिस्बर्ग में भी गांधी जी ने ग्रांड नेशनल होटल में रूकने का प्रयास किया था लेकिन वहां के मैनेजर ने उन्हें कोई कमरा खाली नहीं है का बहाना बनाकर टाल दिया था। वहां अब्दुल गनी ने उन्हें विस्तार से बताया था कि रंगभेद के मामले मे ट्रांसवाल नेटाल से भी आगे है | इसका कटु अनुभव भी गांधी को कुछ दिन बाद ही प्रीटोरिया में अंग्रेज अधिकारी के बंगले के पास सैर करते समय हो गया था जहां एक गार्ड ने उन्हें धक्का देकर इस रास्ते पर सैर करने के लिए दुत्कारा था। इस अपमान को भी गांधी ने इसलिए सहन कर लिया था क्योंकि वह यहां अब्दुल्ला सेठ के मुकदमे के लिए आए थे और पूरा ध्यान उसी पर लगाना चाहते थे। गांधी यह भी समझ गए थे कि यह इकलौती घटना नहीं है | भारतीयों और एशियाई एवं अफ्रीकी काले लोगों के लिए यहां कदम कदम पर तरह तरह के अत्याचार और अन्याय पसरे पडे हैं जिन्हें समाप्त करने के लिए एक बहुत बड़े और कठिन आंदोलन की जरूरत है | गांधी ने कुछ ही दिनों में खुद कई अपमानजनक घटनाओं का साक्षात्कार कर लिया था | पगड़ी उतारने की घटना से लेकर ट्रेन और सिकरम तक की सभी घटनाओं का उन्होंने समाचार पत्रों में पत्र भेजकर और रेलवे और सिकरम कंपनी के अधिकारियों को शिकायत कर अपनी तरह से विरोध दर्ज कराया था लेकिन कहीं से भी उन्हे समाधान तो दूर संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। अधिकारियों के इस व्यवहार से यह साफ हो गया था कि रंगभेद नीति को ऊपर वाले लोगों का पूरा समर्थन है |

गांधी के लिए यह अपमानजनक जीवन बड़ा त्रासद था। सेठ अब्दुल्ला के मुकदमे की तैयारी के साथ साथ अपने अफ्रीका प्रवास के दौरान उनकी नजर भारतीय समुदाय के दुख दर्द पर भी लगी थी इसीलिए वे खाली समय में काफी लोगों से मिलकर यह जानने की कौशिश करते थे कि यहां किन किन मामलों में लोगों के साथ भेदभाव किया जाता है और उसके बारे में लोगों की क्या राय है|

१७. अफ्रीका में हृदयजीत गांधी

कहने के लिए गांधी ने अब्दुल्ला सेठ का मुकदमा जीता था लेकिन हकीकत में उन्होंने सेठ अब्दुल्ला और उनके विरोधी बने तैयब सेठ का हृदय जीता था। मुकदमा खत्म होते ही गांधी का काम और करार दौनो खत्म हो गये थे। उधर गांधी के घर वाले भी राह देख रहे थे इसलिए गांधी ने घर वापसी की तैयारी शुरू कर दी थी|

अब्दुल्ला सेठ हृदय जीतने वाले गांधी को इस तरह कैसे वापस आने देते| उन्होंने गांधी के सम्मान में एक शानदार विदाई समारोह आयोजित किया जिसमें भारतीय समुदाय के सभी गणमान्य लोगों ने शिरकत की| कहने को तो यह विदाई समारोह था लेकिन समारोह समापन होते होते यह गांधी के लिए अफ्रीका में जमने का आमंत्रण समारोह बन गया।

संयोग से उसी दिन अखबार में छपे एक समाचार पर गाँधी की नजर पड़ी थी जिसके अनुसार अफ्रीका में रहने वाले हिंदुस्तानियों के अधिकारों के हनन का एक प्रस्ताव पारित होने जा रहा था। इस प्रस्ताव के पारित होने से हिंदुस्तानियों के लिए अफ्रीका में रहना मुश्किल होने जा रहा था|

विदाई समारोह मे शरीक लोगों से गाँधी ने इस प्रस्ताव का जिक्र किया तो उनमें से अधिकांश ने इस कानून का विरोध करने का सुझाव दिया। इसके साथ ही सबकी यह भी राय थी कि यह काम केवल गाँधी के नेतृत्व में ही हो सकता है क्योंकि अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समाज मे जितने भी खाते पीते लोग थे उन्होंने यहां रहकर पैसा तो कमाया था लेकिन पढ़ाई लिखाई नहीं की थी और यहां के किसी कानून का विरोध करने के बारे में तो किसी ने सोचा भी नहीं था।

गांधी के खुद के मन में भी यह विचार बहुत समय से चल रहा था कि अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय को अपने अधिकारों के लिए आवाज उठानी चाहिए क्योंकि अंग्रेजों के अन्याय के मामले में यहां की हालत तो हिंदुस्तान की तुलना मे भी बहुत दयनीय है। गांधी ने सब लोगों के अनुरोध पर अफ्रीका में कुछ दिन और रूककर नये कानून के विरोध का नेतृत्व करने की हामी भर दी। एक तरह से यह गांधी के सामाजिक जीवन और सामाजिक आंदोलनों की लंबी कड़ी की पहली लड़ी थी।

१८. गांधी के नेतृत्व में अफ्रीका में पहला आंदोलन

गांधी जी ने भारत में जितने भी आंदोलनों का नेतृत्व किया उन सब के तौर तरीकों की प्रयोगशाला अफ्रीका के आंदोलन ही थे। अफ्रीका में गांधी ने सत्याग्रह के कई आंदोलनों का नेतृत्व किया | नेटाल का आंदोलन अफ्रीका में किया गया उनका पहला आंदोलन था जिसने उन्हें अफ्रीका में रहने वाले हिंदुस्तानियों का नायक बना दिया था। अफ्रीका के इस प्रथम प्रवास मे ही उनके बहुत से मित्र भी बन गए थे और अब्दुल्ला और तैयब सेठ के मुकदमे के समझौते के बाद वहां उनकी वकालत भी चर्चा में आ गयी थी। अफ्रीका इस लिहाज से उन्हे अपना दूसरा घर लगने लगा था। नेटाल के आंदोलन में गांधी और उनके साथियों को बहुत तेज गति से काम करना था ताकि नया कानून बनने के पहले अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर से एक अर्जी सरकार को भेजी जा सके और इसकी सूचना सभी समाचार पत्रों में भी दी जा सके। और यह सब काम गांधी के नेतृत्व में ही किया जाना था |

गांधी ने दिन रात मेहनत करके अफ्रीका के कानूनों का अध्ययन किया और प्रस्तावित कानून के खिलाफ एक अर्जी बनाई | इस कानून से हिंदुस्तानियों के धारा सभा का सदस्य चुनने का अधिकार खत्म किया जाना था। अब इस अर्जी पर अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराने का बड़ा काम था। उन दिनों बहुत से लोगों को कानून की जानकारी नहीं के बराबर थी इसलिए हस्ताक्षर से पहले उन्हें यह भी समझाने की जरूरत थी कि उनके लिए इस कानून का विरोध करना क्यों आवश्यक है | इस काम में भी गांधी को ही काफी काम करना था। अपने सहयोगियों के साथ मिलकर गांधी दस हजार लोगों के हस्ताक्षर कराने में कामयाब हुए थे। उन दिनों न तो यातायात के वैसे साधन थे और न फोन एवं इंटरनेट आदि की सुविधा | बस्तियां और गांव भी काफी दूर दूर बसते थे फिर भी बहुत कम समय में दस हजार लोगों के हस्ताक्षर जुटाकर गांधी ने अफ्रीका की धरती पर एक नया इतिहास रचा था जिसके बाद गांधी पहले अफ्रीका और फिर भारत में आंदोलनों का एक के बाद दूसरा इतिहास रचते गए। हालाँकि गांधी और उनके साथियों की कड़ी मेहनत के बावजूद प्रस्तावित कानून बन गया था लेकिन इस असफलता से गाँधी और उनके साथियों मे पहली बार एकजुटता और जोश का ऐसा तूफान आया था जो अफ्रीका और भारत की आजादी के बाद ही रूका और जिसकी गूँज देश और दुनिया मे अभी भी किसी न किसी रूप मे कहीं न कहीं सुनाई देती रहती है |

गांधी अब अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय के एक छत्र स्वाभाविक नेता बन गए थे और अफ्रीका से उनका रिश्ता बहुत गहरा हो गया था |

१९. नेटाल इंडियन कांग्रेस का गठन

दस हजार लोगों के हस्ताक्षर कराने में कामयाब होने पर गांधी का आत्म विश्वास चरम पर पहुंच गया था | संकोची गांधी नायक के रूप में स्थापित हो गये थे। इस सफलता से उत्साहित गांधी ने अब्दुल्ला सेठ और दूसरे साथियों को समझाया कि केवल विरोध की अर्जी देने से संबंधित मंत्री पर पूरा दबाव नहीं पडेगा | इस आंदोलन को सही अंजाम तक पहुंचाने के लिए एक स्थाई संस्था की स्थापना होनी चाहिये | इस तरह गांधी ने 22 मई 1894 को नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की। इंग्लैंड में बैरिस्टरी की पढ़ाई करते समय गांधी को शाकाहार संस्था चलाने का अनुभव यहां काम आया | यह लगभग वही समय था जब भारत में 1885 मे इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी |

भारत में ए ओ ह्यूम द्वारा स्थापित इंडियन नेशनल कांग्रेस और गाँधी द्वारा अफ्रीका में स्थापित नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना के कुछ उद्देश्य और तौर तरीके एक जैसे थे। दौनो ही भारत और अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय की भलाई और विकास के लिए कानून के दायरे में रहकर सरकार से शांति पूर्न साधनों से अपील आदि करने की मूल भावना से स्थापित किये गये थे। इन दो कांग्रेस में एक बड़ा अंतर यही था कि इंडियन नेशनल कांग्रेस जहाँ चंद प्रबुद्ध पढ़े लिखे लोगों का समूह थी वहीं गांधी नेटाल इंडियन कांग्रेस को अफ्रीका के समग्र हिन्दुस्तानी समाज के दुख दर्द से जोड़ना चाहते थे। शुरूआत में नेटाल इंडियन कांग्रेस की हालत भी कमोबेश ऐसी ही थी जिससे अब्दुल्ला सेठ और गाँधी के अन्य जागरूक मित्र आदि ही जुड़े थे। लोगों को लगता था कि मेहनत मजदूरी करके अपनी आजीविका चला रहे कुली और गिरमिटिया समाज से इस संस्था का सरोकार नहीं है।

नेटाल इंडियन कांग्रेस को आम हिंदुस्तानियों से जोड़ने का गांधी का सपना भी बहुत जल्दी पूरा हो गया। एक दिन गांधी के पास एक गरीब मद्रासी बाला सुंदरम अपना दुखडा सुनाने आया। गांधी जी ने अपनी आत्म कथा में बाला सुंदरम के दुख का बहुत मार्मिक और हृदय विदारक विवरण दिया है। उस गरीब और निरीह को उसके बर्बर अंग्रेज मालिक ने किसी छोटी सी गलती पर नाराज होकर इतनी बेदर्दी से पीटा था कि उसके दो दांत टूट गये थे और चेहरा लहूलुहान हो गया था। गांधी ने एक वकील की हैसियत से उस पीडित की तरफ से मुकदमा लड़ने का बीड़ा उठाया ताकि उसे न्याय दिलाया जा सके |

२०. बालासुंदरम का मुकदमा और गाँधी का अफ्रीका में महानायक बनना

अब्दुल्ला सेठ के मुकदमे ने गांधी को अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समाज के उच्च और मध्यम वर्ग में प्रसिद्ध किया था लेकिन अफ्रीका के गरीब हिंदुस्तानियों के बीच गांधी की लोकप्रियता बालासुंदरम के मुकदमे के बाद ही हुई थी। इस मुकदमे के दौरान अफ्रीका में रहने वाले गरीब हिंदुस्तानियों को पहली बार यह अहसास हुआ था कि इस विदेशी धरती पर भी उनकी चिंता करने और जरूरत पड़ने पर हर तरह की मदद करने के लिए मोहनदास करमचंद गांधी नाम का एक युवा वकील है जिसके पास कोई कभी भी मदद के लिए जा सकता है |

गांधी ने सबसे पहले बर्बर पिटाई से बेहाल बाला सुंदरम की डाक्टरी जांच कराई जिससे उसका ठीक से इलाज हो सके और जरूरत पड़ने पर मुकदमा दर्ज करने के लिए भी डाक्टर की रिपोर्ट काम आ सके | मुकदमा करने के लिए गांधी ने गिरमिटियों पर लागू होने वाले कानूनों का भी गहन अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि बाला सुंदरम जैसे अभागों के साथ अफ्रीका का कानून भी अन्याय करता है। अफ्रीका में परमिट पर रहने वाले गरीब लोगों को ही कालांतर में गिरमिटिया कहा जाने लगा था | इनकी कथा पर हिंदी के लेखक गिरिराज किशोर ने "पहला गिरमिटिया" उपन्यास लिखा है |

गांधी ने देखा कि गिरमिटियों की हालत बहुत दयनीय है। उन्हें आम नौकर जितने भी अधिकार नहीं है। वे अपने मालिक की नौकरी तब तक नहीं छोड सकते जब तक उन्हें कोई दूसरा मालिक नौकरी पर नहीं रखता | कोई सामान्य नौकर अगर नौकरी का करार तोड़कर नौकरी छोडता है तो उस पर दीवानी मामला बनता है लेकिन यदि कोई गिरमिटिया करार तोडता है तो यह फौजदारी का मामला है और उसे सजा हो सकती है | इसीलिए गिरमिटियों पर अफ्रीका के अंग्रेज मालिक खूब अत्याचार करते थे क्योंकि उनकी हालत गुलामों जैसी थी | गांधी ने बाला सुंदरम की पिटाई करने वाले अंग्रेज से मुलाकात की | गांधी समझौता वादी थे और इस मामले में भी वह यही चाहते थे कि बाला सुंदरम को कोई दूसरा अच्छा मालिक मिल जाए और उसका वर्तमान क्रूर मालिक उसे आसानी से मुक्त कर दे। इस मामले मे भी गांधी को सफलता मिल गयी। मुकदमे के डर से बाला सुंदरम के मालिक ने उसे मुक्त कर दिया और गाँधी ने उसके लिए दूसरे मालिक की व्यवस्था कर दी जिससे वह अफ्रीका में रह सका |

बाला सुंदरम जैसे अभागे की हर तरह से मदद करने से गाँधी को न केवल अफ्रीका के गिरमिटिया हिन्दुस्तानी समाज में इज्जत मिली बल्कि उनके चर्चे भारत और विशेष रूप से मद्रास तक भी पहुंच गये। अब गांधी अफ्रीका के समस्त हिन्दुस्तानी समाज के नायक बन गये और उनके नायकत्व के चर्च के भारत में भी होने लगे |

२१. घर वापसी और भारत में भी अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समाज की चिंता

अफ्रीका में काफी समय बिताने के बाद गांधी ने घर वापसी का मन बनाया | इसके दो प्रमुख कारण थे- परिवार से अलग रहते अरसा हो गया था , इसलिए उनसे मिलने की तीव्र इच्छा थी और अफ्रीका में रहने वाले हिंदुस्तानियों के दुख कष्टो से भारतीय जनता को भी विस्तार से अवगत कराने की भी इच्छा थी। गांधी जानते थे कि अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समाज के साथ हो रहे अत्याचार में भारत की अंग्रेज सरकार की भी मौन सहमति थी क्योंकि अफ्रीका और भारत दौनो ब्रिटिश शासन के अधीन थे और गिरमिटिया हिन्दुस्तानी समाज पर लगाए गए कर पर भारत के वायसराय की भी सहमति ली गई थी। इस मुद्दे पर इंडियन नेशनल कांग्रेस ने भी अपने ढंग से विरोध जताया था लेकिन गांधी की नजर में वह विरोध काफी नहीं था।

बम्बई पहुंचते ही गांधी सीधे राजकोट आये | वहां उन्होंने अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय की त्रासद हालत पर एक पुस्तिका तैयार की। इस पुस्तिका का आवरण हरे रंग का था इसलिए यह "हरी पुस्तिका" के नाम से मशहूर हुई।

गांधी इस पुस्तिका को देश के सभी गणमान्य लोगों और समाचार पत्रों आदि के माध्यम से जन जन तक पहुँचाना चाहते थे | इस काम के लिए उन्होंने अपने मुहल्ले के बच्चों के दल से प्रतिदिन दो तीन घंटे सेवा ली और डाक टिकट लगवा कर लोगों को भिजवाया | यह पुस्तिका खूब प्रसिद्ध हुई और देश भर में लोग गांधी और अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समाज को जानने पहचानने लगे | यह खबर विलायत भी पहुंच गई | अफ्रीका पहुंचते पहुंचते इस पुस्तिका और गाँधी के बारे में अंग्रेजों के बीच काफी अफवाहें फैल गई जिनका खामियाजा बाद में गांधी और उनके साथियों को भुगतना पड़ा । गांधी भारत में रहकर अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय की भलाई के लिए व्यापक जन समर्थन चाहते थे जिससे यहां की अंग्रेजी हुकूमत अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय के साथ हो रहे अत्याचारों को समाप्त करने के लिए अफ्रीका की अंग्रेजी हुकूमत पर दबाव बनाने के लिए मजबूर हो। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने देश के प्रमुख शहरों में जन सभाएं की और उन शहरों के प्रबुद्ध लोगों से मुलाकात कर इस काम के लिए सहयोग करने की अपील की |

गांधी सबसे पहले बम्बई आये और न्यायमूर्ति रानाडे से मिले | उन्होंने गांधी को फिरोजशाह मेहता के पास भेजा | मेहता जी के आशीर्वाद से गाँधी ने बम्बई में एक सभा में भाषण दिया जिसे सबकी सराहना

और समर्थन मिला | इस सफलता से गाँधी को बहुत संतोष हुआ और उन्होंने पूना जाने का फैसला किया |

पूना उन दिनों देश की राजनीतिक हलचलों के लिए बहुत प्रसिद्ध था | वहां दो बडे नेता गोपाल कृष्ण गोखले और बाल गंगाधर तिलक क्रमश: नरम और गरम दल का नेतृत्व कर रहे थे | गांधी अफ्रीका के मुद्दे पर इंडियन नेशनल कांग्रेस के इन दौनो वर्गों का समर्थन चाहते थे | यह बहुत आसानी से संभव होने वाला काम नहीं था, लेकिन गांधी भी आसानी से हथियार डालने वाले जीव नहीं थे |

२२. पूना और मद्रास में गांधी को विशेष सफलता

पूना में गांधी को गोखले और तिलक के नरम और गरम दल को एक साथ साधना था | इसके लिए सभा की अध्यक्षता के लिए किसी सर्व मान्य महानुभाव को राजी करना था | लोगों की राय जानकर गांधी ने भंडारकर जी को सभा की अध्यक्षता के लिए चुना और उनसे मिलकर इस आशय की प्रार्थना की | भंडारकर जी से मिलने गांधी दुपहर के समय गए थे | उन्हें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि गांधी बड़ी मेहनत से दिन रात एक कर समाज सेवा के काम में पूरी लगन से जुटे हैं। गांधी की लगन देखकर उन्होंने अध्यक्षता के लिए हां कह दी।

गांधी जी ने गोखले और तिलक से भी मुलाकात की और उन्हे उन दौनो का भी आशीर्वाद मिल गया | गांधी के लिए यह बेशकीमती सफलता थी | कालांतर में गोखले तो गांधी के गुरु ही बन गए थे और तिलक से भी गांधी के प्रगाढ संबंध हुए। गांधी ने उस समय की गोखले, तिलक और फिरोजशाह मेहता की त्रिमूर्ति को याद करते हुए अपनी आत्म कथा में बहुत सुंदर और कलात्मक अभिव्यक्ति दी है | वे कहते हैं- "सर फिरोजशाह मुझे हिमालय जैसे लगे, लोकमान्य तिलक समुद्र जैसे और गोखले गंगा जैसे। हिमालय पर चढा नहीं जा सकता था, समुद्र में डूबने का डर था। गंगा की गोद में तो खेला जा सकता है और डोंगियां लेकर सैर की जा सकती है | "

कालांतर में गोखले और गाँधी के संबंध अंत तक गुरु शिष्य सरीखे रहे। अफ्रीका से स्थाई रूप में भारत आने पर गुरु गोखले से ही गांधी ने पूछा था कि यहाँ उन्हे क्या करना चाहिए और गोखले की सलाह को शब्दश: मानकर गांधी ने पूरे एक साल लगभग संपूर्ण भारत की यात्रा की थी | इस यात्रा से ही गांधी ने भारत को ठीक से जाना पहचाना था | इतना ठीक से जितना शायद गांधी के पहले और गाँधी के बाद भी किसी दूसरे महानुभाव ने नहीं जाना।

पूना में गांधी की सभा बहुत सफल रही। इस से उत्साहित गांधी मद्रास भी गए। वहां तो बाला सुंदरम के मामले के कारण गांधी की प्रसिद्धी पहले ही पहुंच गई थी | लोगों ने उन्हें खूब सम्मान दिया | वहां हरी पुस्तिका की पुनः दस हजार प्रति प्रकाशित हुई | इस दौरे के बाद गांधी को देश मे भी अधिकांश बुद्धिजीवी और पत्रकार जानने लगे थे। लेकिन उन्हें भारत की जनता अभी भी नहीं जानती पहचानती थी। जिस तरह से वे अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय के जन नेता बन गए थे वैसा अपने देश में नहीं था। इसके पहले कि गांधी देश के बाकी हिस्सों में हरी पुस्तिका के माध्यम से अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय की त्रासदियों का प्रचार कर पाते उन्हे आनन फानन में दुबारा अफ्रीका जाना पड़ा |

२३. गांधी की दूसरी अफ्रीका यात्रा

जिस समय गांधी भारत में रहकर अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय की आवाज बुलंद कर रहे थे उसी समय उन्हें यथा शीघ्र अफ्रीका आने के अनुरोध आये। उन दिनों सेठ अब्दुल्ला का कुरलैंड नाम का स्टीमर भी चलने लगा था | उन्होंने गांधी को सपरिवार उसी स्टीमर में आने का अनुरोध किया था | इस बार गांधी पत्नी कसतूरबा और पुत्र को साथ लाए थे |

गांधी की इस यात्रा में दो परेशानी एक साथ हुई। उन दिनों बम्बई में प्लेग की महामारी फैली थी इसलिए बम्बई से आने वाले जहाज के सभी यात्रियों की सघन जांच के बाद ही बंदरगाह पर उतरने की इजाजत मिली थी | दूसरी समस्या और खतरनाक थी | गांधी के अफ्रीका पहुंचने की खबर से वहां के अंग्रेज भड़के हुए थे। अफ्रीका के समाचार पत्रों और नेताओं ने गांधी के विरोध में माहौल गर्म कर रखा था | भारत में रहते हुए गांधी ने अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय पर किये जा रहे अन्याय के खिलाफ जो मुहिम चलाई थी उसे अफ्रीका में बढा चढाकर पेश किया गया था | काफी लोग जहाज पहुंचने पर बंदरगाह पर पहुंच गये थे |

पहले तो जिस जहाज मे गांधी का परिवार यात्रा कर रहा था उसे प्लेग की बीमारी के बहाने वापस भारत भेजने की कौशिश हुई | अंग्रेज इसके लिए मुआवजा देने को तैयार थे लेकिन अब्दुल्ला सेठ और गाँधी तैयार नहीं हुए। उसके बाद कवारैंटाइन की अवधि पूरी होने तक जहाज के यात्रियों को बाहर नहीं आने दिया गया |

जिस दिन जहाज के यात्रियों को बाहर निकलने दिया उस दिन बंदरगाह के अधिकारियों ने गांधी को बताया कि दिन में बाहर निकलने पर आपकी जान को खतरा है इसलिए आप रात के अंधेरे में चुपचाप बाहर निकलें। गांधी अपनी तरफ से कोई बखेडा खडा करना नहीं चाहते थे इसलिए वे इस बात पर राजी हो गये | गांधी के वकील मि लाटन ने गांधी को ऐसा करने से रोका क्योंकि इससे यह संदेश जाता कि गांधी डर गये | अंत में यह तय हुआ कि गांधी की पत्नी और साथ आये बच्चे गाडी मे बैठकर पारसी सेठ रूस्तम जी के घर जाएंगे और गाँधी कोट्स के साथ पैदल चलेंगे |

गांधी जैसे ही बाहर निकले उनके पीछे गांधी गो बैक के नारे लगाती भीड़ चलने लगी। थोड़ी देर बाद उन पर पत्थर और अंडे फेंके जाने लगे और उसके बाद उनकी जमकर पिटाई हुई | पगलाई भीड़ उन्हें जान से मारने पर उतारू थी। संयोग से उधर से पुलिस सुपररिंटेंडेट अलेक्जेंडर की पत्नी गुजर रही थी | उन्होंने साहस दिखाकर गांधी को बचाया और रूस्तम सेठ के घर पहुंचाया |

इसके बाद भीड़ ने रूस्तम सेठ का घर घेर लिया और गाँधी को बाहर निकाल कर भीड के हवाले करने की माँग होने लगी। सुपररिंटेंडेट अलेक्जेंडर ने जैसे तैसे गांधी को पुलिस की वर्दी पहनाकर सुरक्षित थाने भिजवाया और बडी मुश्किल से भीड़ को यह समझाकर शांत किया कि गांधी यहां नहीं हैं | उस दिन अलेक्जेंडर दंपति और विशेष रूप से श्रीमति अलेक्जेंडर की सहृदयता और साहस के कारण गांधी को नया जीवन मिला था |

२४. गोरों को हिंसा और मारपीट के लिए क्षमा

गांधी के दूसरे अफ्रीका दौरे के वक्त एक तरफ कई अंग्रेज गांधी पर हमला करने वाले हिंसक भीड़ का हिस्सा बने थे, दूसरी तरफ श्रीमती अलेक्जेंडर (पुलिस सुपररिंटेंडेट अलेक्जेंडर की पत्नी) जैसी साहसी और दयावान अंग्रेज महिला थी जिसने गांधी की जान बचाई थी। इस समय तक गांधी अफ्रीका और भारत मे मशहूर हो गये थे इसलिए गांधी पर भीड़ के जानलेवा हमले की खबर समाचार पत्रों के माध्यम से इंग्लैंड तक भी पहुंच गई थी।

गांधी के खिलाफ माहौल भडकाने वालों में अफ्रीका के मंत्री एस्कम्ब भी शामिल थे। लेकिन तत्कालीन उप निवेश मंत्री चेम्बरलेन ने एस्कम्ब को गाँधी पर हमला करने वाले लोगों पर मुकदमा चलाने का निर्देश दिया था ,इसलिए एस्कम्ब ने गाँधी को तलब कर पूछा था कि यदि वे हमलावरों को पहचान लें तो उन पर हमला करने वालों पर सरकार मुकदमा चलाएगी |

गांधी कुछ हमलावरों को पहचानते थे लेकिन उन्होंने अपने ऊपर हमला करने वाले लोगों पर मुकदमा चलाने के लिए साफ इंकार कर दिया और तुरंत इस आशय का लिखित पत्र एस्कम्ब को दे दिया | गांधी मानते थे कि भीड़ को अफवाह फैलाकर भडकाया गया था और उसमें शामिल बहुत से लोगों को सच्चाई मालूम नहीं धी। इस प्रकार अपने हमलावरों को माफ कर गाँधी ने बहुत से लोगों का दिल जीत लिया | उन्होंने यह भी कहा कि मुकदमे चलाने मे मेरा कतई विश्वास नहीं है | समाचार पत्रों में साक्षात्कार देकर यह स्पष्ट किया कि मैंने भारत में अफ्रीका के गौरों के बारे में न कोई अपशब्द कहे हैं और न मैं अफ्रीका में बसाने के लिए जहाज भरकर भारतीयों को लाया हूं | यह सब मेरे खिलाफ फैलाई गई अफवाह हैं। गांधी के स्पष्टीकरण के आधार पर समाचार पत्रों ने गांधी की सराहना की और हुडदंगियों की निंदा की।

गांधी ने अपनी आत्म कथा में भी लिखा है कि इस घटना के बाद उनकी प्रतिष्ठा बढी और उनके लिए अफ्रीका में रहकर अपना काम करना पहले से अधिक आसान हो गया |

२५. बच्चों की शिक्षा और शिक्षा पर विचार

गांधी ने बच्चों की शिक्षा के भी कई प्रयोग किए थे जिनकी शुरूवात अपने घर से ही की थी। उन्होंने शिद्दत के साथ यह महसूस किया था कि भारतीय बच्चों और विशेष रूप से ग्रामीन बच्चों के लिए अंग्रेजी माध्यम और अंग्रेजों द्वारा प्रायोजित शिक्षा सही नहीं है | उसकी जगह उन्होंने नई तालीम की वकालत की। नई तालीम (शिक्षा) में मातृभाषा और हिंदी के माध्यम से पढ़ाई होनी चाहिए और अक्षर एवं संख्या ज्ञान के साथ उन्हें रोजगार का हुनर सिखाया जाना चाहिए चाहे वह कृषि कर्म का काम हो या कोई कुटीर उधोग धंधे आदि का काम। गांधी ने इस संस्कार दायी रोजगार परक शिक्षा को नई तालीम कहा था |

गांधी के शिक्षा संबंधी विचार अपनी शिक्षा के समय ही बनने शुरू हो गये थे जब उन्होंने कहीं न पहुंचाने वाली ग्रेजुएसन की पढ़ाई छोड़कर बैरिस्टरी की पढ़ाई का फैसला किया था | गांधी उससे भी संतुष्ट नहीं थे। पुराने ढर्रे की लोगों को लंबे मुकदमों में उलझाकर अपनी कमाई करने वाली वकालत उन्हे मंजूर नहीं थी |

शिक्षा के बारे में गांधी को दूसरा बड़ा फैसला अफ्रीका प्रवास के दौरान अपने बच्चों की पढ़ाई के बारे मे लेना पड़ा | कस्तूरबा को पढ़ाई का शौक नहीं था इसलिए यह फैसला गांधी को ही करना था। उनके सामने बच्चों की शिक्षा के लिए दो विकल्प थे। एक गौरों के स्कूल, जहां पहले तो प्रवेश ही कठिन था। यदि गांधी के प्रभाव से वह संभव भी होता तो वहां भारतीय बच्चों के साथ वैसे ही व्यवहार की संभावना थी जैसा गांधी के साथ पहले दर्जे की टिकट लेकर ट्रेन में बैठने पर हुआ था। दूसरा विकल्प मिशनरी स्कूल थे ,जहाँ प्रवेश तो आसान था लेकिन हिंदी और गुजराती में पढ़ाई ठीक से नहीं हो सकती थी | इसलिए गांधी ने बच्चों की पढ़ाई घर पर रहकर अपनी तरह से कराने का तीसरा विकल्प चुना। गांधी ने खुद स्वीकार किया है कि बाद में उनके बच्चे उनके फैसले से खुश नहीं थे। डिग्री के अभाव में ऐसे बच्चों का एक तरह की हीन भावना से ग्रसित होना स्वाभाविक भी है लेकिन गांधी का दृढ मत था कि गुलाम क्लर्क पैदा करने वाली अंग्रेजी शिक्षा और केवल अक्षर ज्ञान सार्थक जीवन के लिए नाकाफी है | गांधी व्यक्ति को संस्कारित करने और स्वरोजगार मे सक्षम बनाने वाली शिक्षा के पक्षधर थे | वे मानते थे कि स्कूल में विधिवत पढ़ाई किये बिना भी कस्तूरबा, उनके बच्चे और उनके बहुत से मित्रों के बच्चे ग्रेजुएट और बैरिस्टरी आदि की पढ़ाई पढे लोगों से कतई कम नहीं थे। गांधी जी ने 1920-21 मे जब छात्रों से स्कूल कालेज छोड़कर असहयोग आंदोलन में शरीक होने की अपील की थी उसके पीछे भी उनकी यही मंशा थी कि ऐसी पढ़ाई छोड़ने मे कोई हर्ज नहीं है जो हमें गुलाम बनाती है।

कालांतर में गांधी ने इसी तरह की संस्कारित करने और आत्म निर्भर बनाने वाली शिक्षा के कई प्रयोग अपने अफ्रीका और भारत के आश्रमों और चंपारन के आंदोलन के दौरान वहां के पिछड़े इलाके में भी किये। गांधी के बाद नारायण देसाई सरीखे गांधी विचार मे आस्था रखने वाले बहुत से लोगों ने भी अपनी अपनी तरह से गाँधी की नई तालीम को आगे बढ़ाने के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में कई प्रयोग किए हालाँकि कालांतर में लोगों की अरूचि के कारण यह प्रयोग बहुत सफल नहीं हो पाए | इसका खामियाजा हम अपने बच्चों को नकलची बंदर बनाकर भुगत भी रहे हैं |

गांधी जी के वर्धा आश्रम मे अभी भी छोटे स्तर पर यह कार्य क्रम चलता है, हालाँकि वर्तमान बाजारू दौर में यह सात्विक प्रयास ऊंट के मुंह मे जीरे जैसा ही है |

२६. कर्तव्य और सेवा को समर्पित गांधी

पहले अफ्रीका और फिर भारत में गांधी ने हिंदुस्तानियों और विशेष रूप से तरह तरह के अत्याचार और अन्याय से प्रताडित लोगों के अधिकारों और मानवीय गरिमा के लिए अंग्रेजों और देशवासियों से लगातार संघर्ष किया। सतही तौर पर देखने से ऐसा लगता है कि गांधी अधिकारों के प्रति अधिक सजग थे। वास्तविकता इससे अलग है। गांधी के जीवन में बहुत से ऐसे प्रसंग हैं जहां वे सबसे अधिक जोर कानून के पालन, कर्तव्यों के निर्वहन ,अपने दोषों को दूर करने ,रचनात्मक काम और सेवा कार्य पर देते हैं। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के आचरण की बात हो या ग्राम सेवा से जुड़े सेवकों का जिक्र हो गांधी हमेशा कर्तव्य और सेवा पर बल देते हैं | उनका पूरा रचनात्मक कार्यक्रम इन्हीं दो बिंदुओं पर केंद्रित है।

अफ्रीका प्रवास के दौरान भी वे कर्तव्य और सेवा के प्रति बहुत सजग थे | गांधी के अफ्रीका प्रवास के पहले हिन्दुस्तानी समुदाय के बारे में अंग्रेजों की यह धारणा थी कि वे गंदगी पसंद हैं और अक्सर अधिकारों की माँग करते रहते हैं | किसी हद तक यह सही भी है। गांधी ने खुद महसूस किया था कि भारतीय बस्तियों में काफी गंदगी रहती है। डरबन में एक बार प्लेग का खतरा था | उन दिनों गांधी ने सफाई अधिकारियों की सहायता के लिए हिंदुस्तानी लोगों को अपनी बस्तियों को साफ रखने के लिए समझाने के लिए घर घर दौरे का अभियान चलाया। बहुत से लोगों को यह ठीक नहीं लगा | कुछ ने इस अभियान की उपेक्षा की और कुछ ने तो उन्हें अपमानित भी किया लेकिन गांधी इस सेवा कार्य को अपना पावन कर्तव्य समझकर करते रहे |

इसी तरह बोअर युद्ध के दौरान गांधी की आत्मा गरीब बोअर लोगों के साथ थी लेकिन फिर भी अंग्रेजी हुकूमत की प्रजा होने के कारण उन्होंने खुद आगे बढ़कर घायल अंग्रेज सैनिकों की सेवा का कार्य किया

जिसमें उनकी टुकड़ी ने मृत सैनिकों के शव भी ढोये थे। इस सेवा कार्य के लिए गांधी के साथ बहुत से गिरमिटिये भी जुट गए थे। गांधी के इस तरह के सेवा कार्य करने और उनमें हिन्दुस्तानी समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने के कारण अंग्रेजों के मन में गांधी और हिंदुस्तानियों के लिए अच्छे भाव पैदा हुए थे|

बाद में भारत आने पर आजादी के आंदोलन में जुडने पर भी गांधी आम भारतीयों को अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करते रहते थे। 1909 में लिखी प्रसिद्ध कृति "हिंद स्वराज" में भी गांधी जी ने वकीलों और डाक्टरों आदि को आड़े हाथों लेते हुए उन्हे अपने पेशे के कर्तव्यों के प्रति आगाह किया है|

दुर्भाग्य से आज भी हमारे समाज को इस दिशा में बहुत कुछ बदलने की जरूरत है। आज भी हम अपने अधिकारों के प्रति जितने सजग रहते हैं कर्तव्यों के प्रति उतने ही उदासीन दिखते हैं|

२७. दाम्पत्य जीवन और शादी के बारे में विचार

गांधी इस बात से काफी व्यथित रहते थे कि भारतीय लोग अपने बच्चों की शादी उस कच्ची उम्र में कर देते हैं जब न उनको शादी जैसे लंबे और पवित्र गठबंधन की कोई समझ होती है और न वे कच्ची उम्र में अपने बच्चों के अभिभावक धर्म का निर्वाह करने में सक्षम होते हैं। जब गांधी विलायत में बैरिस्टरी की पढ़ाई करने गये थे कस्तूरबा की गोद में बडा बेटा हरिलाल छोड़कर गये थे। बचपन में हरिलाल को न गांधी का अधिक साथ मिला और न निरक्षर माता के साथ रहते हुए उसकी शुरूआती पढ़ाई हो पायी। शायद बहुत से अन्य कारणों के साथ यह कारण भी एक कारण हो सकता है जिससे हरिलाल बाद में विद्रोही हुए, जिससे गांधी, कस्तूरबा और गाँधी के नजदीकी रिश्तेदारों और शुभचिंतकों को बडा कष्ट पहुंचा। गांधी के विरोधी आज भी हरिलाल को लेकर गांधी को कटघरे में खड़ा करने की कौशिश करते हैं|

गांधी का प्रारंभिक दाम्पत्य जीवन भी खटपट वाला ही रहा | सामान्यतः परंपरागत शादियों में पत्नी पति से उम्र में छोटी होती है और भारतीय संस्कार भी उसे पति के पीछे चलने वाली सहायक मानते हैं। कस्तूरबा गांधी से करीब छह महीने बडी थी और उनके स्वभाव में भी दबना नहीं था। गांधी की तुलना में वे अधिक चंचल और बहिर्मुखी थी। गांधी उन्हे आम लोगों की तरह पति को परमेश्वर की तरह मानने वाली आज्ञाकारिनि की तरह बनाना चाहते थे। कस्तूरबा न केवल अपने मन के काम करने की आजादी चाहती थी, वह गांधी की गलत बात का विरोध भी करती थी। इस स्वभावगत अंतर और दौनो के परिवेश और अनुभव जगत के भारी अंतर के कारण भी दौनो में वैचारिक मतभेद थे। हालाँकि कभी कभार कहा सुनी और रूठा मटकी के अलावा दौनो में एक दूसरे के लिए प्रेम और समर्पण का भाव भी था। गांधी कस्तूरबा को पढ़ाने के लिए लिए बहुत उत्सुक रहते थे और कस्तूरबा को सजने संवरने और घर गृहस्थी के लिए संशाधन जमा करने का शौक था|

गांधी और कस्तूरबा के दाम्पत्य जीवन में दो बार बडे झगडे के प्रसंग खुद गांधी ने अपनी आत्म कथा में लिखे हैं | एक बार अफ्रीका के डरबन शहर में रहते हुए कस्तूरबा ने गांधी के एक विदेशी सहयोगी के पेशाब का बर्तन साफ करने में आनाकानी की थी। गांधी ने क्रोधित होकर कस्तूरबा का हाथ पकडकर घर के बाहर कर दिया था | कस्तूरबा ने शालीनता का परिचय देकर बात ज्यादा बढ़ने से रोक ली थी |

दूसरी घटना अफ्रीका से भारत वापसी के समय हुई थी। गांधी ने अफ्रीका के लोगों से विदाई समारोह में मिले सोने चांदी और हीरे के कीमती उपहार एक ट्रस्ट बनाकर बैंक में जमा करने का फैसला किया

था लेकिन कस्तूरबा इन उपहारों और विशेष रूप से खुद को मिले पचास गिन्नी के कीमती हार को अपनी बहुओं और आड़े वक्त के लिए रखना चाहती थी | उन्होंने गांधी को खूब खरी खोटी सुनाई | यह ताना भी दिया कि गांधी उनके जेवर भी हडप गये । इस बार भी अंतत: कस्तूरबा को ही झुकना पड़ा । इन शुरूआती घटनाओं के बाद दौनो एक दूसरे की मनस्थिति को बेहतर समझने लगे थे । अंतिम समय में कस्तूरबा गांधी की मित्र और अनन्य सहयोगी की तरह कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली आदर्श पत्नी बन गई थी |

दाम्पत्य जीवन के बारे मे बाद में गांधी के विचार बहुत स्पष्ट हो गये थे । उनका मानना था कि पति और पत्नी दौनो को एक दूसरे के पूरक और सहायक की तरह होना चाहिए | गांधी का विचार था कि शादी समझदारी की उम्र में होनी चाहिये ताकि दंपति अपने और अपने बच्चों के बारे में उचित निर्णय लेने की स्थिती में हों । गांधी यह भी चाहते थे कि युवा विजातीय शादी करें ताकि समाज मे समरसता आये और जाति की वर्तमान भेदभाव वाली कुप्रथा समाप्त हो | उन्होंने अपने बच्चों की शादी भी दूसरी जातियों में की और यह भी तय किया कि वे केवल विजातीय शादियों में ही शिरकत करेंगे |

२८. आत्म निर्भरता गुलामी से मुक्ति का मार्ग

इंग्लैंड और अफ्रीका प्रवास के दौरान गांधी की समझ मे आया कि सादगी और आत्म निर्भर बनने से तरह तरह की गुलामी से मुक्ति मिलती है। बाद के जीवन में तो सत्य और अहिंसा की तरह सादगी और आत्म निर्भरता भी गांधी के जीवन और विचार के मूल मंत्र बन गए थे|

सादगी का पहला पाठ गांधी ने बैरिस्टरी की पढ़ाई करते समय उन छात्रों से सीखा था जो बहुत किफायत से पढ़ाई करते थे। वहीं से उन्हें आत्म निर्भरता की भी पहली कुंजी मिली थी जब उन्होंने अपना खाना खुद बनाना शुरू कर विलायत में भोजन की सबसे बड़ी समस्या हल की थी|

अफ्रीका में रहते हुए भी उन्हें कुछ कटु अनुभवों ने आत्म निर्भरता का पाठ पढ़ाया था। एक बार एक अंग्रेजी सैलून ने उनके बाल काटने से मना कर दिया था जिससे उन्होंने अपमानित महसूस किया था। उस दिन से गाँधी ने हजामत की तरह अपने बाल भी उल्टे सीधे खुद ही काटना शुरू कर दिया था| इसके बाद तो उन्होंने अपने कपड़े भी खुद धोना और प्रेस करना शुरू कर दिया था। गांधी के वकील साथी उनके कपड़ों और हुलिये की अक्सर मजाक भी उडाते थे लेकिन गांधी उसे विनोद मे यह कहकर टाल देते थे कि मैं आपका मुफ्त में मनोरंजन कर रहा हूँ|

अपने अधिकांश काम खुद कर आत्म निर्भर बनने को गाँधी गुलामी से मुक्त होना कहते थे। कालांतर में उन्होंने चरखे को अपने रचनात्मक कार्यक्रम मे सबसे ऊपर रखकर कपड़े के लिए सभी गरीब लोगों को आत्म निर्भर बनाने का बडा काम किया था। आत्म निर्भरता को गाँधी राजनैतिक आजादी की तरह ही बेहद जरूरी मानते थे|

भारत के गांवो की दशा सुधारने के लिए गांधी की यही योजना थी कि गांव अपने जरूरत की सभी चीजें गांव में ही तैयार करे। ऐसी आत्म निर्भर व्यवस्था में ही वे भारत के लाखों गांवो का उद्धार देखते थे|

आज हमारे गांव जरा जरा सी चीजों के लिए शहरों और महानगरों की तरफ ताकते हैं। आजादी के बाद गांधी के सपनों के गांव बनाने की ठीक से कोई कौशिश ही नहीं हुई। कुछ महानुभावों(नानाजी देशमुख, अन्ना हजारे,पोपटराव आदि चंद लोग) ने व्यक्तिगत स्तर पर जरूर अपने गांव को गाँधी के आत्म निर्भरता के सिद्धांत से विकसित किया है लेकिन जब तक यह काम एक जन आंदोलन की तरह नहीं होगा तब तक भारत की हालत तेजी से नहीं सुधरेगी|

२९. गांधी और गीता

किताबों और विशेष रूप से धार्मिक किताबों का हमारे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। गांधी पर जिस धार्मिक कृति का सर्वाधिक प्रभाव पडा वह निश्चित रूप से गीता ही है। गीता से गाँधी का पहला परिचय थियोसाफिकल संस्था की संगत मे आने से हुआ था। अफ्रीका में गांधी ने गीता को मूल संस्कृत में पढा। उसके 13 अध्याय (कुल 18) उन्होंने कंठस्थ कर लिए थे। गीता के श्लोक याद करने के लिए गांधी प्रतिदिन लगभग आधा घंटा दातुन और स्नान करते समय निकालते थे। यह दृष्टांत हमे गांधी के समय के प्रबंधन की भी विशिष्टता का आभास कराता है। समय का इसी तरह सदुपयोग करने वाले ही एक साथ इतने काम कर पाते हैं।

गीता के गहन अध्ययन ने गांधी जी के विचारों में कई परिवर्तन किये। विशेष रूप से उन्हे गीता के समभाव ने बहुत प्रभावित किया और ईश्वर के प्रति उनकी श्रद्धा निरंतर बढती गयी | उन्होंने अपरिग्रह और संपत्ति के ट्रस्टीशिप का सिद्धांत भी गीता की सीख से ही बनाया |

गीता के अध्ययन के बाद गांधी ने अपनी जीवन बीमा पॉलिसी भी रद्द करा दी थी। उन्होंने अपने भाई को पत्र लिखकर सूचना दी कि अब से वे उन्हें रकम नहीं भेजेंगे क्योंकि अब वह उनकी निजी संपत्ति न होकर समाज के लिए समर्पित होगी। गांधी को यह विश्वास हो गया था कि अब ईश्वर ही उनके घर परिवार का निर्वहन करेगा | नास्तिक लोग इसे गांधी का पागलपन या अंध श्रद्धा कह सकते हैं और उन पर अपने परिवार की उचित देखभाल नहीं करने का आरोप लगा सकते हैं लेकिन यह सत्य है कि गांधी के धार्मिक विचारों मे कटटरता नहीं थी। उनका धर्म प्रेम और उदारता का धर्म है जो पूरी दुनिया को ईश्वर का परिवार मानता है और अपने पराये के अंतर को समाप्त करता है।

गांधी के लिए गीता मनुष्य की आसक्ति खत्म करने वाला अनुपम ग्रंथ है। भारत आने के बाद कौशानी प्रवास में गांधी ने गीता पर आधारित अपनी महत्वपूर्ण कृति "अनाशक्ति योग " की रचना की थी। इस कृति में गाँधी ने गीता के संदेश को बहुत सहज सरल भाषा में प्रस्तुत किया है |

३०. रस्किन की 'अन टू द लास्ट' और गांधी का फीनीक्स आश्रम

साहित्यिक या साहित्येत्तर किताबें किसी व्यक्ति पर कितना असर डालती हैं इस पर विद्वानों में अलग अलग मत हैं। जो यह मानते हैं कि किताबें हमें बहुत गहराई से प्रभावित करती हैं उनके लिए गांधी का उदाहरण दिया जा सकता है। गांधी ने खुद स्वीकार किया है कि उन पर कई कृतियों का बहुत प्रभाव हुआ जिनमें गीता और रस्किन की "अन टू द लास्ट" का उन्होंने विशेष उल्लेख किया है। यह किताब गांधी को उनके सहयोगी पोलाक ने जोहानिस्बर्ग से डरबन की रेल यात्रा के दौरान पढ़ने के लिए दी थी। गांधी ने 24 घंटे की इस यात्रा में एक बार इस किताब को पढना शुरू किया तो एकसाथ पूरा पढ लिया। शाम को डरबन पहुंचने के बाद भी इस किताब ने गांधी को चैन से सोने नहीं दिया और वे रात भर इसी के बारे मे सोचते रहे|

गांधी इसी किताब को यह श्रेय देते थे जिसने उन्हें समाज की सबसे अंतिम पंक्ति पर खडे व्यक्ति की सेवा का अंत्योदय सरीखा सुंदर विचार दिया। सर्वोदय के सिद्धांत में इस किताब से गांधी ने तीन महत्वपूर्ण बातें सीखी-

1- सबके हित में ही हमारा हित है
2- चाहे वकील का पेशा हो या नाई का सबकी कीमत समान होनी चाहिए
3- सबको मेहनत कश मजदूर और किसान की तरह परिश्रम करना चाहिए|

गांधी लिखते हैं पहली बात तो मुझे ठीक से मालूम थी। दूसरी बात की मेरे मन में धुंधली सी छवि थी जो इस किताब ने स्पष्ट की लेकिन तीसरी बात मेरे लिए नई थी। इसे आत्मसात करने के लिए गांधी ने फीनीक्स में किसान जीवन की शुरुआत की थी। गांधी कहते हैं यह किताब उन्हें दीप की तरह रौशनी दिखाने वाली कृति थी|

इस किताब का गाँधी पर ऐसा जादू हुआ कि उन्होंने शहर से दूर गांव में बसने का मन बनाया और इंडियन ओपीनियन साप्ताहिक अखबार भी वहीं से निकालना तय किया| इस काम के लिए 1904 में अफ्रीका के फीनीक्स में पहले बीस और फिर अस्सी एकड़ जमीन खरीद कर सौ एकड़ का कृषि कर्म आधारित फीनीक्स आश्रम का निर्माण हुआ| यह गांधी द्वारा स्थापित और संचालित पहला आश्रम बना जो रस्किन की अन टू द लास्ट कृति को जीवन में अपनाने का एक बडा प्रयोग था|

फीनीक्स आश्रम की स्थापना के साथ साथ गांधी ने खुद अपने और अपने परिवार के बच्चों मे भी परिश्रम की आदत डाली। इसकी शुरुआत आटा पीसने की हाथ चक्की से हुई जिसे खेल खेल में बच्चे

भी चलाने लगे । इसके बाद गांधी धीरे धीरे और भी काम खुद करने की आदत डालने लगे । फीनिक्स आश्रम गांधी के परिवार की मेहनत और बाद में पोलाक के आने से चमक गया । परिश्रम के मामले में यह आश्रम गांधी की पहली प्रयोग स्थली बना |

३१. गांधी और इंडियन नेशनल कांग्रेस

गांधी का इंडियन नेशनल कांग्रेस के कई बड़े नेताओं से अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय की परेशानियों के बारे में व्यक्तिगत स्तर पर पत्राचार और मिलना जुलना हो चुका था, जिनमें फिरोजशाह मेहता, बाल गंगाधर तिलक और गोपाल कृष्ण गोखले जैसे प्रतिभाशाली नाम शामिल थे लेकिन उन्हे कांग्रेस के किसी राष्ट्रीय अधिवेशन में शामिल होने का मौका नहीं मिला था |

यह अवसर उन्हे 1901 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में मिला जिसके अध्यक्ष दीनशा एदल जी वाच्छा थै। गांधी ने इस अधिवेशन के बारे मे लिखा है कि वहां बेहद गंदगी थी और पाखाने तो बहुत ही गंदे थे। बडे नेताओं की खूब पूछ थी। स्वयं सेवकों की हालत यह थी कि किसी को कोई काम बताओ तो वह दूसरे को सौंप देता था और दूसरा तीसरे को | उन्होंने कांग्रेस के मंत्री भूपेंद्र बाबू से कुछ काम मांगा तो उन्होंने दूसरे मंत्री घोषाल बाबू के पास भेज दिया। उन्होंने गांधी को क्लर्क का काम बता दिया जिसमें उन्हें ढेर सारी चिटठियां देखनी थी और महत्वपूर्ण चिटठियां अलग कर जवाब लिखने थे। गांधी को हर काम महत्वपूर्ण लगता था। उन्होंने बड़े योग से यह काम पूरा किया |

दरअसल घोषाल बाबू गांधी से अपरिचित थे। बाद में घोषाल बाबू को गाँधी की असलियत का पता चला तो वे उनसे क्लर्क का काम लेने के लिए लज्जित भी हुए लेकिन गांधी ने उनकी वरिष्ठता का हवाला देकर उन्हें निश्चिंत कर दिया |

गांधी ने यह भी महसूस किया कि कांग्रेस के अधिवेशन में व्यवस्था ठीक नहीं है | लोगों का काफी समय बर्बाद होता है और लगभग सब काम अंग्रेजी में होता है। गांधी इससे व्यथित हुए लेकिन इस अधिवेशन में उनका ध्येय अपने अफ्रीका प्रस्ताव को पेश कर वहां के हिन्दुस्तानी समुदाय की परेशानियों से कांग्रेस को अवगत कराना था। इस प्रस्ताव को प्रस्तुत करने की स्वीकृति फिरोजशाह मेहता दे चुके थे और गोखले ने भी इसे देख लिया था। गांधी देर रात तक इंतजार करते रहे | यह तय नहीं था कि इसे कब और कौन प्रस्तुत करेगा। रात के ग्यारह बज चुके थे | गांधी ने गोखले के पास जाकर धीमी आवाज में जिस समय अपने प्रस्ताव की याद दिलाई उस समय फिरोजशाह मेहता सत्र समाप्ति की तैयारी कर रहे थे। गोखले ने गांधी के प्रस्ताव का जिक्र किया तो उन्होंने गोखले से प्रश्न किया- "आपने देख लिया "। गोखले की सहमति से गाँधी को तुरंत प्रस्ताव पढ़ने का आदेश हुआ। गोखले के समर्थन के कारण सब ने सर्व सम्मति से गाँधी का प्रस्ताव पारित कर दिया |

इस अधिवेशन में गांधी ने यह भी महसूस किया कि कुछ लोग कविता आदि पढने में और भाषण देने मे काफी समय लगा देते हैं लेकिन गांधी को इस महत्वपूर्ण विषय पर अपनी बात रखने के लिए अध्यक्ष ने सिर्फ पांच मिनट दिये। फिर भी गांधी को यह संतोष था कि भारत के बारे में सोच विचार करने वाली इकलौती संस्था कांग्रेस की मुहर भी उनके प्रस्ताव पर लग गई थी |

कुल मिलाकर गांधी का कांग्रेस के बारे मे यह खटटा मीठा सा मिश्रित अनुभव था |

३२. गाँधी और भारतीय राजा महाराजा

गांधी ने काठियावाड की रियासतों के षड्यंत्रों के बारे मे बचपन से देखा सुना था। इनके शिकार गांधी के पिता भी हुए थे |

बाद के दिनों में गांधी को भारत के राजे महाराजों का चरित्र और नजदीक से देखने का मौका मिला। वैसे तो गांधी का सत्य ,अहिंसा , सादगी ,सदाचार और पारदर्शी जीवन राजा महाराजाओं की बनावटी शानोशौकत और शोषण पर आधारित जीवनशैली के धुर विपरीत था और दौनो में लगभग 36 का आंकडा था। सबसे मैत्री और स्नेह संबंध रखने की कौशिश करने और लोगों के हृदय परिवर्तन की सतत कौशिश करने वाले गांधी की जब तब राजे महाराजों से चाहे अनचाहे मुलाकात और वैचारिक मुठभेड़ भी होती रहती थी |

1901 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन के बाद गांधी करीब एक महीने कलकत्ता ही रूक गये थे ताकि वहां के प्रमुख लोगों और चैंबर आफ कामर्स जैसी संस्थाओं के पदाधिकारियों आदि से मिल सकें | गांधी इंडिया क्लब में ठहरे थे। यह क्लब भारत के संभ्रांत लोगों के ठहरने का अड्डा था। गांधी उनसे भी मेल जोल बढाना चाहते थे |

उन ही दिनों कलकत्ता में लार्ड कर्जन का दरबार लगा था | अधिकांश राजा महाराजा भी उनकी शान में कसीदे पढने और अपनी राजभक्ति का प्रदर्शन करने के लिए वहां ठहरे थे। गांधी ने देखा आम तौर पर भारतीय पोशाक पहनने वाले राजे महाराजे लार्ड के दरबार में मत्था टेकने के लिए धोती कुर्ता त्याग कर पतलून चौगा और खानसामो जैसी टोपी पहन कर जा रहे थे | उनमें से कुछ ने स्वीकार भी किया कि दरबार में उनकी स्थिति खानसामो जैसी ही है। यह सब जहालत उन्हें अपनी संपत्ति और उपाधियां बचाने के लिए करनी पड़ती है | गांधी को यह सब देखकर बहुत दुख हुआ। उन दिनों तक भी गांधी अंग्रेजी हुकूमत को भारत की भलाई के लिए उचित मानते थे इसलिए वे इन राजा महाराजाओं के आचरण पर ही दुखी थे जो अपनी सत्ता बचाने के लिए अपनी अस्मिता दांव पर लगाए हुए थे। बाद में एक ऐसा ही अवसर काशी के हिंदू विश्व विद्यालय की लार्ड हार्डिंग द्वारा नींव रखे जाते समय हुआ था। वहां गांधी जी को इस विश्व विद्यालय के संस्थापक मदन मोहन मालवीय जी ने विशेष आग्रह से बुलाया था। गांधी ने राजा महाराजाओं को स्त्रियों की तरह आभूषण पहने देखकर कटाक्ष किया था कि धन, मान और सत्ता के लोभ लौगों से कैसे कैसे पाप कराते हैं। इन राजाओं को नामर्दी सूचक आभूषण पहनने पडते हैं |

काशी विश्वविद्यालय के इस भव्य समारोह में गांधी जी ने बहुत सख्त लहजे में भाषण दिया था जिसे सुनकर सभा में सन्नाटा छा गया था और कई राजा महाराजा तमतमाकर बाहर चले गए थे |

३३. एक बार फिर दक्षिण अफ्रीका में

गांधी ने एक बार फिर से भारत में अपनी वकालत जमाने की कौशिश की। परिजनों, मित्रों और विशेष रूप से गोखले जी की सलाह पर उन्होंने बम्बई में काम जमाना शुरू किया। मुंबई में जमने के पीछे मूल भावना यही थी कि यहां रहकर परिवार का गुजारा भी हो सकता है और देशवासियों की भी यथा संभव सेवा की जा सकती है |

पिछली बार बम्बई में उनके पैर नहीं जम सके थे लेकिन इस बार उनका काम ठीक से चल निकला | अफ्रीका के पुराने मुवक्किलों से उन्हें गुजारे लायक काम मिल जाता था। गांधी अब एक स्थान पर स्थिर होना चाहते थे |

गांधी के भाग्य में स्थिरता शायद थी ही नहीं | यह भी कह सकते हैं कि उनका स्वभाव ही ऐसा था कि लोगों की सेवा का कोई भी अवसर मिलते ही वे अपने सुख चैन को तुरंत दांव पर लगा देते थे। इस बार भी यही हुआ। अफ्रीका से एक बार फिर बुलावा आ गया | चेम्बरलेन अफ्रीका आ रहे थे। उनसे मिलने के लिए हिंदुस्तानी लोगों का एक डेलिगेसन तैयार करना था इसलिए अफ्रीका के हिंदुस्तानी समुदाय को लगा कि इस काम के लिए गांधी का वहां होना जरूरी था क्योंकि उन्हें लगता था कि यह काम गांधी ही ठीक से कर सकते हैं। गांधी के लिए अपने पारिवारिक दायित्व और समाज सेवा के काम में जब जब चुनाव करने का अवसर आया उन्होंने सार्वजनिक काम को हमेशा अपने निजी जीवन के पहले किया। इसलिए इस बार भी गांधी ने आनन फानन अपना जमा जमाया दफ्तर समेटा और एक बार फिर अफ्रीका का रूख किया |

गाँधी इस बार अपने साथ कुछ नौजवानों को भी ले गये थे। इन नौजवानों में एक मगनलाल गांधी भी थे जो कालांतर में उनके साथ रहते हुए गांधी के बडे विश्वास पात्र बने |

३४. इंडियन ओपीनियन साप्ताहिक अखबार की शुरुआत

गांधी ने अफ्रीका के पहले प्रवास के दौरान ही समाचार पत्रों का महत्व समझ लिया था। उन्होंने समय समय पर अपने विचार लोगों तक पहुंचाने के लिए समाचार पत्रों में लेख भेजे थे | इन लेखों के कारण देश विदेश में काफी लोग गांधी और गांधी के विचार जानने लगे थे |

जब मदनजीत सिंह ने इंडियन ओपीनियन साप्ताहिक अखबार निकालने के लिए गांधी से सलाह ली तो उन्होंने इस अखबार के प्रकाशन मे हर संभव सहायता करने का आश्वासन दे दिया। मदनजीत सिंह छापाखाना चलाते थे इसलिए अखबार निकालने में खास दिक्कत नहीं हुई। इस तरह 1904 में गांधी के अप्रत्यक्ष नियंत्रण में एक ऐसे साप्ताहिक समाचार पत्र का शुभारंभ हुआ जिसका प्रकाशन लाभ के उद्देश्य से न होकर पूरी तरह अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय की सेवा के पवित्र उद्देश्य से हुआ था |

इंडियन ओपीनियन के संपादक मनसुखलाल नाजर थे लेकिन उन्हें अफ्रीका के हिन्दुस्तानी समुदाय की ज्यादा जानकारी नहीं थी। इसलिए इसके अधिकांश लेख लिखने की जिम्मेदारी गांधी पर ही थी | धीरे धीरे इस अखबार को जारी रखने की आर्थिक जिम्मेदारी भी गांधी के कंधो पर आ गयी। अखबार जारी रखने में काफी दिक्कतें थी लेकिन अखबार को बीच में बंद करने से हिन्दुस्तानी समाज की आवाज बंद हो जाएगी जिसके कारण समाज का अहित होगा, इसलिए गांधी इसे जारी रखने के लिए निरंतर खर्च करते थे। एक समय तो ऐसा भी आया जब उनकी सारी बचत इसी काम मे खर्च हो जाती थी। गांधी ने लिखा है- इस अखबार में हर सप्ताह मैं अपनी आत्मा उडेलता था। इसके लगभग हर अंक में गांधी के लेख छपते थे |

बाद में गांधी ने "यंग इंडिया" और "हरिजन" अखबार भी निकाले। इन अखबारों में गांधी ने विपुल लेखन किया | गांधी वांगमय का एक बड़ा हिस्सा इन अखबारों में प्रकाशित लेख आदि ही है। अच्छी पत्रकारिता करने के इच्छुक युवा पत्रकारों के लिए गांधी की पत्रकारिता और संपादकीय दृष्टि एक आदर्श स्तंभ है | गांधी ने अपनी संपादकीय दृष्टि का सुंदर उदाहरण अपनी कालजयी कृति "हिंद स्वराज" में भी प्रस्तुत किया है जो 1909 में पाठक संपादक संवाद शैली में लिखी गई थी।

३५. गांधी का संबल कस्तूरबा

प्रारंभिक दाम्पत्य जीवन में गांधी और कस्तूरबा में वैचारिक मतभेद ,स्वभाव गत अंतर एवं कच्ची उम्र की कच्ची समझ के कारण सामान्य दंपतियों की तरह छोटे मोटे झगडे हुए थे, लेकिन समय के साथ साथ दौनो के बीच अदभुत सामंजस्य हो गया था। इसी कारण गांधी अपने जीवन में इतनी सफलता अर्जित कर पाए थे। कस्तूरबा शुरू से ही गांधी से अधिक बहादुर और बहिर्मुखी थी। निरक्षर होते हुए भी उन्होंने अफ्रीका जैसे अपरिचित देश में कई बार गांधी की अनुपस्थिति में घर परिवार और आश्रम संभाला। गांधी के जेल जाने पर घबराई नहीं और गाँधी जब जोहानिसबर्ग आ गये तो कस्तूरबा फिनिक्स में रही।

कस्तूरबा अपने इरादों में भी बहुत दृढ़ और बेहद हिम्मती थी। गांधी ने लिखा है कि एक बार डरबन मे कस्तूरबा की सर्जरी करनी पडी। बिना क्लोरोफार्म की सर्जरी के दर्द को भी उन्होंने हिम्मत से सहन कर लिया।

कस्तूरबा की गंभीर बीमारी में दो बार ऐसे भी क्षण आये जब गांधी भी किंकर्तव्यमूढ से हो गये लेकिन कस्तूरबा के दृढ निश्चय ने उन्हें उबार लिया। डरबन के अस्पताल में इलाज के दौरान वहां के डाक्टर का मत था कि उन्हें बचाने के लिए बीफ टी(गौमांस का शोरबा)देना पड़ेगा। गांधी से डाक्टर इसकी अनुमति चाहते थे। जब गांधी को यह पता चला कि डाक्टर ने बिना अनुमति लिए कस्तूरबा को शोरबा दिया है तो उन्होंने इसे मरीज के साथ दगा बताया। डाक्टर इसे मरीज की जान बचाने के लिए अपना धर्म बता रहे थे। गांधी ने कस्तूरबा को समझाने की कोशिश की लेकिन कस्तूरबा ने साफ मना कर दिया। डाक्टर इस हालत में शोरबा पिलाए बिना मरीज को अस्पताल में रखने को तैयार नहीं था। गांधी असमंजस में थे लेकिन कस्तूरबा ने तुरंत फिनिक्स जाने का फैसला ले लिया। वहां वे पानी के उपचार से ठीक भी हो गयी।

गांधी और कस्तूरबा के दाम्पत्य जीवन में कुछ ऐसी भी घटनाएँ घटी जिन्हें गांधी घर के सत्याग्रह कहते हैं। गांधी मानते थे कि कस्तूरबा सत्य के प्रति बहुत आग्रही थी। सही बात पर वे हमेशा अडिग रहती थी चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा।

एक बार गांधी ने स्वास्थय लाभ के लिए कस्तूरबा को नमक और दाल छोडने की सलाह दी। कस्तूरबा ने कहा - ये दो चीज तो आप भी नहीं छोड सकते | गांधी ने तभी दोनों को त्यागने का व्रत ले लिया। कस्तूरबा को गाँधी का त्याग देखकर बड़ा अफसोस हुआ | उन्होंने यह दौनो चीज छोड दी और गाँधी

से अनुरोध किया कि वे अपना व्रत तोड़ दें लेकिन गांधी भी उतने ही दृढ़ संकल्पी थे उन्होंने भी आजीवन यह व्रत निभाया। बाद के सालों में दौनो इसी तरह एक दूसरे के पूरक बन गए थे |

इसी तरह जब कस्तूरबा 1942 के "अंग्रेजों भारत छोड़ो" आंदोलन में आगा खान पैलेस में नजरबंद थी तब भी उन्होंने पेंसिलिन के इंजेक्शन लेने से साफ मना कर दिया था। अपने अंतिम समय में कस्तूरबा गांधी की मित्र की तरह हो गई थी और उनकी लगभग हर बात से सहमत होती थी । कस्तूरबा को याद करते हुए नारायण देसाई बताते थे कि वर्धा आश्रम में उनकी रसोई में सबको मन माफिक व्यंजन मिलते थे | वे सब आश्रम वासियो की पसंद से वाकिफ थी कि किसे चाय पसंद है और किसे काफी। गांधी की सेवा टहल के साथ साथ उन्हें अपने पूरे परिवार की भी बराबर चिंता रहती थी।

वे गांधी के लिए सबसे बडा संबल थी। वे एक ऐसी महान स्त्री थी जिसने घर परिवार से लेकर समाज सेवा को बराबर साध लिया था। हम उनमें भारतीय नारी के तमाम आदर्शों के दर्शन पाते हैं ।

३६. अफ्रीका का तीसरा दौरा

अफ्रीका में हर बार गांधी इस इरादे से जाते थे कि एक साल में वहां का काम खत्म कर वापस भारत आकर अपनी वकालत जमाने की कौशिश करेंगे लेकिन इस तीसरे दौरे में संभवतः उनके मन मे वहां अधिक समय बिताने का विचार था इसलिए अपने साथ कुछ नौजवानों को भी ले गये थे ताकि उन्हें भी वहां जमा सकें।

अफ्रीका पहुंचते ही गांधी जीजान से अपने काम में जुट गए | उन्हें चेंबरलेन से मुलाकात करने वाले डेलिगेसन का मसौदा तैयार करना था | चेम्बरलेन की यात्रा का मूल मकसद अफ्रीका से साढ़े तीन करोड़ पौंड की वसूली करना और वहां के गौरों को खुश करना था। उन्होंने हिंदुस्तानियों के प्रतिनिधियों को खास तबज्जो नहीं दी और यही कहकर टरका दिया कि उन्हें भी शांति बरकरार रखने के लिए गौरों को खुश रखना चाहिए।

नेटाल के बाद चेंबरलेन को ट्रांसवाल जाना था | युद्ध के बाद वहां की हालत बहुत खराब हो गयी थी। वहां जाने के लिए परवाने की जरूरत पड़ती थी | गौरों को तो परवाना आसानी से मिल जाता था लेकिन हिन्दुस्तानी गिरमिटिया समाज के लिए यह बहुत मुश्किल से मिलता था। गांधी ने इस काम के लिए सुपररिंटेंडेट अलेक्जेंडर से मदद मांगी और अलेक्जेंडर ने गांधी को परवाना दिला दिया। गांधी हालाँकि ट्रांसवाल पहुंच गए थे लेकिन उन्हें यह कहकर वहां के डेलिगेसन में शामिल नहीं होने दिया कि वे नेटाल में चेंबरलेन से मिल चुके हैं। गांधी को बहुत से लोगों ने ताना भी दिया क्योंकि गांधी ने बोअर युद्ध के दौरान अंग्रेजों का साथ दिया था और अब वही अंग्रेज उनके साथ ऐसा रूखा व्यवहार कर रहे थे।

इस बार गांधी को भी लगा कि अब उन्हें अफ्रीका में काफी समय देने की आवश्यकता है तभी यहां रह रहे भारतीयों की ठीक से सेवा संभव होगी। इसलिए उन्होंने मित्रों से सलाह मशविरा कर यहां लंबे समय तक रूकने का निर्णय किया ताकि इस बार लंबी लड़ाई लडी जा सके। उन्होंने यहां के बार में रजिस्ट्रेशन कराने के बाद जोहानिस्बर्ग में दफ्तर खोलकर वकालत शुरू कर दी | खुद अपने पैर जमने के बाद कस्तूरबा और बच्चों को भी वहीं बुला लिया। अब अफ्रीका सही अर्थ में गाँधी का दूसरा घर हो गया।

३७. जूलु विद्रोह और गाँधी का सेवा दल

गांधी ने बोअर युद्ध के दौरान हिन्दुस्तानी समुदाय के कई साथियों को साथ लेकर युद्ध में घायल अंग्रेज सैनिकों की सेवा का कार्य किया था। अपने उसी अनुभव के आधार पर जूलु विद्रोह के समय भी उन्होंने घायलों की उसी तरह सेवा कार्य की इच्छा जताई। उन्हें इसकी इजाजत भी मिल गई | इस बार गांधी और उनके साथियों को सैनिक उपाधियां और वर्दी भी मिली | गांधी को सार्जेंट मेजर की पदवी मिली थी।

गांधी ने मौके पर पहुंचकर यह अनुभव किया कि इस इलाके में युद्ध या विद्रोह जैसी स्थिति नहीं है। हुआ यह था कि एक नये कर के विरोध में जूलु सरदार ने अपने लोगों को कर न देने की सलाह दी थीऔर कर वसूली के लिए गये एक सार्जेंट की हत्या कर दी थी | उसके बाद बहुत से लोगों को बेरहमी से पीटा गया था और बंदी बनाया गया था। इन लोगों की चोट के घाव पक गए थे।

अंग्रेजो ने 1857 में भारत के पहले स्वाधीनता संग्राम को भी इसी तरह की बेरहमी के साथ कुचला था और उसे भी गदर और विद्रोह का ही नाम दिया था। चाहे भारत हो या अफ्रीका अंग्रेजों की नीति लगभग एक ही थी | वे अपनी तरफ से चाहे कितनी भी ज्यादती और अत्याचार करें उसे अनुशासन के लिए जरूरी मानते थे और शोषित जनता उनके अन्यायी कानून या कर का विरोध करे तो उसे ऐसी सजा देते थे कि आने वाले समय में कोई उसकी पुनरावृत्ति की हिम्मत न करे।

गांधी ने यह साफ महसूस किया कि जुलू जनता के साथ एकतरफा अन्याय हुआ है इसलिए उन्होंने बहुत खुशी के साथ जुलू घायलों की सेवा की। बहुत से अंग्रेज सैनिक उनकी टुकड़ी को सेवा कार्य से रोकने की कौशिश भी करते थे और जूलु लोगों के लिए बहुत अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते थे। गांधी इस तरह की हरकतों से विचलित हुए बगैर मन से घायलों की सेवा करते थे।

इस समय तक भी गांधी अंग्रेजों की हुकूमत को मोटा मोटी ठीक ही मानते थे | उनकी धारणा थी कि भले ही बहुत से अंग्रेज बाकी जनता के प्रति दुर्भावना रखते हैं फिर भी अंग्रेजी शासन में कानून का राज है | यही कारण था कि अंग्रेजी शासन के खिलाफ गांधी के मन में नफरत का लेशमात्र भी भाव नहीं था। वह दौर तो प्रत्यक्ष रूप से 1942 में ही आया जब उन्होंने "अंग्रेजों भारत छोड़ो" और "करो या मरो जैसे नारे दिए।

३८. गांधी और ब्रह्मचर्य

ब्रहम्चर्य को लेकर गांधी को अफ्रीका प्रवास के दौरान ही आकर्षण हो गया था। समय के साथ यह आकर्षण धीरे धीरे और प्रबल होता चला गया | भारतीय धार्मिक परंपरा में विषय भोग पर संयम और ब्रहमचर्य का बहुत महत्व है और इसे ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत जरूरी बताया गया है। बाल ब्रहमचारियो को भी इसीलिए बड़े आदर के साथ देखते हैं।

दाम्पत्य जीवन के प्रारंभिक वर्षों में गांधी भी कस्तूरबा के संग साथ के लिए बहुत लालायित रहते थे। विषय भोग के प्रति अपनी आसक्ति को उन्होंने अपनी कमी के रूप में भी स्वीकार किया है। जब गांधी के पिता अंतिम सांस ले रहे थे उस समय गांधी कस्तूरबा के साथ सहवास में थे। उन्हें लगता था कि कमजोरी के ऐसे ही क्षण में बडे पुत्र हरिलाल का आगमन हुआ है इसीलिए उसमें तामसिक प्रवृत्तियां आई हैं | उन्होंने इसे अपना पाप भी कहा है। गांधी के परिवार में चार पुत्र होने के बाद जूलु विद्रोह के दौरान सेवा करते समय गांधी को शिद्दत के साथ यह महसूस हुआ कि समाज की सेवा और विषय भोग एक साथ संभव नहीं हैं। इसी दौरान उन्होंने इस मुद्दे पर काफी चिंतन किया और अपने साथियों से भी विचार विमर्श किया। उन्होंने महसूस किया कि समाज सेवा के लिए ब्रहमचर्य जरूरी है। जैसे ही विद्रोह की समाप्ति के बाद गांधी फीनीक्स आश्रम पहुंचे उन्होंने ब्रहमचर्य का व्रत ले लिया। गांधी जी की मान्यता थी कि ब्रहमचर्य रहित जीवन पशुवत जीवन है और संस्कारित मनुष्य को यह शोभा नहीं देता कि आजीवन विषय भोग में ही फंसा रहे। बाद के वर्षों में तो गांधी ने ब्रहमचर्य के लिए और भी कई प्रयोग किए जिनमें कुछ प्रयोगों के लिए उन्होंने अपने नजदीकियो की भी आलोचना और विरोध सहा। आजकल तो ये प्रयोग गांधी के विरोधियों के लिए ब्रहमास्त्र की तरह हैं जिनसे वे गांधी के सम्मान को तार तार करना चाहते हैं और इन प्रयोगों को गाँधी के सैक्स के प्रयोग कहकर तरह तरह से बदनाम करते हैं।

ऐसा लगता है कि गांधी ब्रहमचर्य के प्रति भी सत्य और अहिंसा की तरह ही आकर्षित थे। उन्होंने सत्य और अहिंसा को तो अपने जीवन में काफी पहले और आसानी से पूरी तरह आत्मसात कर लिया था लेकिन ब्रहमचर्य को साधने में अधिक समय लगा। बाद के दिनों में अपने ब्रहमचर्य को परखने के लिए ही उन्होंने कम उम्र युवतियों के साथ सोने के प्रयोग किये थे जिन्हे कुछ लोग बड़ा चढाकर गांधी के विरोध में पेश करते हैं।

कस्तूरबा ने भी गांधी के ब्रहमचर्य के व्रत में बराबर साथ दिया।

३९. एशियाटिक बिल और गाँधी का पहला सत्याग्रह

22 अगस्त 1906 में ट्रांसवाल सरकार के नये ऐशियाटिक बिल का मसौदा प्रकाशित हुआ था। इस बिल के प्रावधान हिन्दुस्तानी समुदाय के लिए अन्याय पूर्ण थे जिनके अनुसार एक निश्चित अवधि के अंदर आठ साल से अधिक उम्र के हिंदुस्तानियों को ऐशियाटिक विभाग के दफ्तर में जाकर नये परवाने लेने थे। इसके लिए उन्हें पुराने परवाने जमा कराने थे और पहचान के लिए अपने हाथों की उंगलियों की छाप देनी थी और शरीर के निशान आदि की जानकारी देनी थी।

इस कानून का उल्लंघन करने वालों के लिए कडी सजा की धाराएं थी। उदाहरण के लिए अधिकारी रास्ते चलते लोगों की चैकिंग कर सकते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि हिन्दुस्तानी लोगों को हर समय परवाना साथ लेकर घर से बाहर निकलना पड़ेगा। इसके अलावा अधिकारियों द्वारा हिन्दुस्तानी समुदाय के घरों में घुस कर भी परवाने की चैकिंग की जा सकती है और जिन लोगों ने परवाना नहीं निकाला है उन्हें यहां रहने का अधिकार नहीं होगा और उन्हें जेल भी हो सकती है।

इस कानून का विरोध करने के लिए एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें गांधी ने सब लोगों को इस बिल के पारित होने के बाद होने वाली परेशानियों के बारे में विस्तार से समझाया और यह प्रस्ताव रखा कि यह बिल धारा सभा में पारित न हो इसके लिए हर संभव प्रयास करेंगे। सर्व सम्मति से यह निर्णय भी लिया गया कि बिल पास होने की स्थिति मे परवाना निकालने कोई भी हिन्दुस्तानी ऐशियाटिक विभाग के दफ्तर में नहीं जाएगा। यह भी तय किया गया कि लोग इस काम के लिए जेल जाने के लिए भी तैयार रहेंगे |

इस तरह के आंदोलन को लोग सामान्यतः पैसिव रैजिस्टैंस कहते थे। गांधी इसके लिए कोई उचित नाम सोच रहे थे। मगनलाल गांधी ने सदाग्रह नाम सुझाया जिसका अर्थ शुभ आग्रह होता है। गांधी ने इसमें थोडा बदलाव कर सत्याग्रह नाम दिया। यही नाम गांधी के बाद के आंदोलनों में भी प्रचलित हो गया और आज भी शांति प्रिय आंदोलन के लिए प्रयुक्त होता है।

४०. पहली जेल यात्रा

जुलाई 1907 में ट्रांसवाल के कई शहरों में ऐशियाटिक विभाग के दफ्तर खुले लेकिन गांधी और उनके स्वयं सेवकों ने हर दफ्तर के बाहर पिकेटिंग कर वहां जाने वाले लोगों को समझाना शुरू किया। इसका यह असर हुआ कि आशा से बहुत कम लोगों ने परवाने निकाले। अधिकारियों ने तय किया कि कुछ नेताओं को गिरफ्तार कर लोगों को डराया जाना चाहिए। जरमिस्टन में काफी हिन्दुस्तानी रहते थे। वहां राम सुंदर पंडित बहुत जोरदार ढंग से विरोध कर रहे थे । उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । इस आंदोलन में गिरफ्तारी का यह पहला मुकदमा था इसलिए बहुत चर्चित हो गया। जिस दिन पंडित को जेल की सजा हुई आंदोलन कारियों ने वह दिन बड़े जोश के साथ मनाया। लेकिन गांधी और आंदोलन कारियों का उत्साह कुछ दिन बाद ही ठंडा पड गया। पंडित जेल के कष्ट सहन नहीं कर पाया और उसने खुद को सत्याग्रह से अलग कर सजा से मुक्ति पा ली।

गांधी ने अपनी आत्म कथा में पंडित के लिए खोटा सिक्का शब्द का इस्तेमाल किया है। इस घटना के बाद गांधी ने लिखा है कि शुद्ध आंदोलन में शुद्ध लोगों की ही भर्ती की जानी चाहिए।

इस घटना के बाद अधिकारियोंने अधिकांश नेताओं को नोटिस जारी किया जिसमें उन्हें अमुक तिथि तक परवाना नहीं बनवाने के लिए ट्रांसवाल से बाहर निकलने की चेतावनी थी। गांधी भी इन लोगों में शामिल थे। गांधी ने अदालत से अनुरोध किया कि इस कानून का उल्लंघन करने के लिए मुझे कड़ी से कडी सजा दी जाए। गांधी गिरफ्तार को कर लिया गया।

यह गांधी की पहली गिरफ्तारी और पहली जेल यात्रा थी। इसकेबाद तो अफ्रीका और भारत में जेल उनका दूसरा घर ही हो गई थी। एक पैर आश्रम और दूसरा जेल में जैसी हालत थी।

हर दिन काफी लोग गिरफ्तारी दे रहे थे। जेल के अंदर नये लोग बाहर के उत्साह की खबरें ला रहे थे | अंततः सरकार को समझौते के लिए झुकना पड़ा | गांधी जी को जनरल स्मटस से मुलाकात के लिए प्रीटोरिया लाया गया | गांधी के सुझाव पर समझौते के मसौदे में कुछ परिवर्तन किये गये और सभी कैदियों को रिहा कर दिया गया। यह तय हुआ कि हिन्दुस्तानी लोग स्वेचछा से परवाने निकालेंगे और उसके बाद उस खूनी कानून को रद्द कर दिया जाएगा जिसका विरोध हो रहा था।

४१. मीर आलम का हमला

हिन्दुस्तानी समुदाय के लिए बनाये गये जिस नये कानून के विरोध में गाँधी की अगुवाई में शांति प्रिय आंदोलन हुआ था उसकी समाप्ति इस समझौते पर हुई थी कि यदि हिन्दुस्तानी समाज स्वेच्छा से अपना पंजीकरण करा लेता है तो इस कानून की कडी धारा खत्म कर दी जाएंगी। इसलिए गांधी ने लोगों को विश्वास में लेने के लिए सबसे पहले अपना पंजीकरण कराने की योजना बनाई थी और वे अपने कुछ साथियों के साथ ऐशियाटिक मामलों के दफ्तर जा रहे थे। दफ्तर के बाहर उन्हें मीर आलम दिखाई दिया। मीर आलम हटटा कटटा पठान नौजवान था। उसकी आदत थी कि गांधी जी को देखते ही सलाम करता था लेकिन उस दिन उसने गांधी जी को सलाम नहीं किया। गांधी ताड गये कि मीर आलम भी उन लोगों में शामिल हो गया है जो गांधी के परवाना बनवाने से सहमत नहीं हैं। गांधी ने खुद पहल कर मीर आलम को सलाम किया | जवाब में उसने भी सलाम किया और चुपचाप गाँधी के पीछे चलने लगा। थोड़ी देर बाद गांधी के सिर पर पीछे से एक लाठी पडी। गांधी बेहोश होकर गिर पडे। उसके बाद भी गांधी और उनके साथ चल रहे ईशप मियाँ और थंबी नायडू पर भी मीर आलम और उसके साथियों ने लाठी और लात घूंसो से कई वार किये।

गांधी को होश आया तो उन्होंने सबसे पहले मीर आलम के बारे मे ही पूछा | लोगों ने बताया कि वह पकड़ा गया है। गांधी ने उनसे कहा कि उसके खिलाफ हम मुकदमा नहीं चलायेंगे। वह भला आदमी है | लोगों के बहकावे में आकर गलती कर बैठा है।

गांधी के पास दो विकल्प थे। पुलिस उन्हे मेडिकल सहायता के लिए थाने ले जाना चाहती थी और वहां पहुंचे गांधी के मित्र और प्रशंसक पादरी रेवरेंड डोक उनकी देखभाल के लिए उन्हें अपने घर ले जाना चाहते थे। गांधी ने डोक के घर जाना पसंद किया। डोक दंपति ने गांधी की बहुत सेवा की।

अपने मित्र के पास पहुँचकर गांधी ने दो काम किये। ऐशियाटिक दफ्तर के अधिकारी से अनुरोध कर सबसे पहले अपने नाम का परवाना निकालने का अनुरोध किया और एटार्नी जनरल को पत्र लिखकर मीर आलम के खिलाफ मुकदमा नहीं चलाने की सिफारिश की। दूसरी तरफ गौरों के एक दल ने गांधी की इस अपील का कडा विरोध किया और मीर आलम पर सार्वजनिक स्थल पर हिंसा करने के लिए कडी सजा की माँग की। अंततः मीर आलम को इस अपराध की सजा तो हुई लेकिन वह गांधी द्वारा माफ किये जाने पर हमेशा हमेशा के लिए गांधी का भक्त बन गया।

४२. टालस्टाय फार्म की स्थापना

अफ्रीका के सत्याग्रह आंदोलन में काफी हिन्दुस्तानियों की गिरफ्तारी हो रही थी | इस आंदोलन में जेल जाने वालों के परिवारों को आर्थिक सहायता देनी पड़ती थी। इस आर्थिक भार को कम करने के लिए गांधी ने टाल्सटाय फार्म की स्थापना की थी ताकि वहां गिरफ्तार हुए लोगों के परिवार सामुहिक रूप से रहते हुए कम खर्च में मेहनत मशक्कत कर सादगी के साथ जीवन निर्वाह कर सकें। फीनीक्स आश्रम की तरह टाल्सटाय फार्म भी गांधी की एक महत्वपूर्ण प्रयोगशाला ही थी जिसमें मेहनतकश सादा जीवन और बच्चों की अच्छी शिक्षा के प्रयोग किये गये थे।

इस फार्म की स्थापना गांधी के सहयोगी कैलनबैक के सहयोग से संभव हुई थी जिन्होंने अपनी 1100 एकड जमीन इस फार्म के लिए उपलब्ध करायी थी।

टालस्टाय फार्म पर गाँधी ने दो प्रमुख प्रयोग किए थे | पहला यह कि सत्याग्रह में शामिल लोगों के परिवार घर के मुखिया की अनुपस्थिति (जेल या सेवा काम में बाहर निकलने) में किस तरह एक बडे संयुक्त परिवार की तरह बिना धर्म, जाति और क्षेत्रीय भेदभाव के मिल जुलकर शांति और सादगी के साथ मेहनत मशक्कत करके आत्म निर्भरता के साथ जीवन निर्वाह कर सकते हैं | यहां के निवासियों को सादा भोजन दिया जाता था | आटा पीसने की हाथ चक्की पर मेहनत करनी पड़ती थी। बीमार लोगों के अलावा सबको जोहानिसबर्ग बहुत सवेरे उठकर पैदल ही जाना होता था। काफी पैदल चलने, मेहनत करने और सादा भोजन से सब स्वस्थ रहते थे।

बच्चों की पढ़ाई के लिए भी मातृभाषा में पढ़ाई की व्यवस्था करने की कोशिश की गई थी। विभिन्न राज्यों के विभिन्न भाषा बोलने वाले बच्चों के लिए तमिल, हिंदी और गुजराती आदि मे ही पढ़ाई का इंतजाम किया था।

फार्म में तीसरा महत्वपूर्ण काम इसे स्वावलंबी बनाने का था। इसके लिए जूते चप्पल बनाकर बेचने का काम शुरू किया। सुतारी का काम भी खुद ही किया। हालाँकि बहुत से और भी कामों में उलझे रहने के कारण गांधी और कैलनबैक यहां का पूरा काम नहीं देख पा रहे थे और जैसा आदर्श गांधी यहां स्थापित करना चाहते थे वह तो नहीं हो सका लेकिन गांधी को यह संतोष था कि यहाँ रहने वाले लोग और विशेष रूप से बच्चे एक परिवार की तरह रहना सीख गये थे और उनके मन मे असहिष्नुता का भाव नहीं था।

इस आश्रम मे गांधी ने आहार आदि के संबंध में भी काफी प्रयोग किये। गांधी ने कहीं पढ़ा था कि गाय भैंस का पूरा दूध निकालने के लिए इन पशुओं के साथ क्रूर व्यवहार करते हैं। यह जानकर गांधी ने दूध पीना छोड़ दिया था। भारत आने पर गाँधी ने खुद बकरी पालकर बकरी का दूध शुरू किया था। जिन लोगों ने गांधी को देखा है वे बताते हैं कि गांधी अपनी बकरी का बहुत ध्यान रखते थे।

४३. अफ्रीका में विवाह पंजीकरण का भेदभाव वाला कानून और महिलाओं का विरोध

अफ्रीका के सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले ने भी गांधी के एक आंदोलन को जन्म दिया था। इस फैसले के अनुसार केवल ईसाई धर्म के अनुसार की गई शादियों को मान्य माना गया था और अन्य धर्मों के अनुसार हुई शादियों को मान्य नही माना गया था। हिंदुस्तानी समुदाय में हिंदुओं ,मुसलमानों और पारसियो की अचछी खासी संख्या थी। इस नये कानून से इन सबके विवाह अमान्य हो जाने थे जिससे इन विवाहों से उत्पन्न संतति को भी संपत्ति में अधिकार मिलना मुश्किल था। गांधी के रहते ऐसे कानून का विरोध होना लाजमी था।

गांधीके इस आंदोलन ने हिन्दुस्तानी समुदाय की महिलाओं को भी आंदोलित किया था। इसके पहले के आंदोलन में हिन्दुस्तानी समुदाय की महिलाओं की सक्रिय भागीदारी नहीं हुई थी और जेल की कठिनाइयों के मददे नजर महिलाओं को मुकदमे और गिरफ्तारी के झंझटो से दूर ही रखा गया था |

इस आंदोलन में सबसे पहले टालसटाय फार्म मे रहने वाली महिलाओं को निमत्रिंत किया गया था। उनमें आंदोलन के लिए पूरा जोश था। सभी महिलाओं को पहले ही आगाह कर दिया गया था कि जेल जाने पर उन्हे काफी कष्ट हो सकते हैं जिनमें खराब खाना और मेहनत के काम के अलावा जेल अधिकारियो द्वारा अपमानित भी किया जा सकता है। इस सब के बाद भी गोदी में छोटे बच्चे वाली महिलाओं ने भी आंदोलन में शरीक होने की तैयारी कर ली थी।

आंदोलन के लिए तैयार इन बहनों ने बिना परवाने फेरी लगाई तो इन्हें गिरफ्तार नहीं किया। इसके बाद गांधी ने फिनिक्स की बहनों को ट्रांसवाल में प्रवेश करने के लिए कहा। गांधी को उम्मीद थी कि या तो नेटाल में ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उनकी यह भी योजना थी कि यदि इनकी गिरफ्तारी न हो तो ये कोयले की खदानो में काम करने वाले गिरमिटिया मजदूरों को खदानो का काम छोडने के लिए तैयार करेंगी।

फीनिक्स आश्रम की महिलाओं के दल में कस्तूरबा भी शामिल थी। इन महिलाओं को ट्रांसवाल मे बिना परवाने के दाखिल होने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया गया और तीन महीने की सजा दी गई। सजा पाने वाली बहनों में 18 साल की वालियाम्मा आर मनुस्वामी मुदलियार की कहानी बड़ी मार्मिक है | वह जेल में जान लेवा बुखार से पीड़ित हो गई थी। जेल से बाहर आने के कुछ दिन बाद ही वह चल बसी | गांधी उससे मिलने गए तो उन्होंने पूछा - "जेल जाने का पश्चाताप तो नहीं है | " उसने बड़े

गर्व से कहा- "मैं तो दुबारा भी मौका मिला तो जेल जाने को तैयार हूं "। गांधी ने कहा- "वहां मौत आ जाए तो"?वह बोली- "देश के लिए कौन नहीं मरना चाहेगा" |

यही था गांधी और उनके आंदोलनों का जादू जो सात समंदर पार गई महिलाओं को भी इतना बहादुर बना रहा था।

४४. गांधी की इंग्लैंड यात्रा और 'हिंद स्वराज' की भूमिका

अफ्रीका के हिंदुस्तानियों के दुख दर्द को इंग्लैंड के शासकों और प्रबुद्ध वर्ग को समझाने के प्रयोजन से 1909 में गांधी ने इंग्लैंड का महत्वपूर्ण दौरा किया था। वे ट्रांसवाल से इंग्लैंड आने वाले एक डेलीगेसन के सदस्य की हैसियत से आये थे और इस दौरान लगभग चार महीने वहां रहे थे। इस दौरे में वे ऐसे बहुत से भारतीयों से मिले थे जो भारत में अंग्रेजी राज के घोर विरोधी थे और देश को जल्दी से जल्दी आजादी दिलाने के लिए हिंसा के इस्तेमाल के भी पक्षधर थे। काफी अंग्रेजों से भी उन्होंने अफ्रीका और भारत की विभिन्न गतिविधियों पर चर्चा की थी।

गांधी ने इन सब लोगों की बातों को बहुत ध्यान से सुना था और उन्हें अफ्रीका के सत्याग्रह मे अपनाई गई अपनी रणनीति के बारे मे भी विस्तार से समझाने की कोशिश की थी। कुछ लोग गांधी की बातों और सत्याग्रह के विचार से सहमत हुए और कुछ इसे व्यर्थ मानते थे। उन दिनों भारत में भी कांग्रेस मे मोटामोटी दो दल थे जिन्हे नरम और गरम दल के नाम से जाना जाता था |

गांधी ने अपने इस प्रवास में काफी समय डाक्टर प्रान जीवन मेहता के साथ बिताया था जिनका रूझान गरम दल की तरफ था। गांधी से लंबे विमर्श के बाद उनके विचारों में भी कई परिवर्तन हुए थे और गाँधी से उनकी दोस्ती और प्रगाढ हो गई थी।

इस प्रवास में गांधी ने पश्चिम की सभ्यता का भी बारीकी से विश्लेषण किया था और भारतीय सभ्यता और संस्कृति से उसकी तुलना करने का प्रयास किया था। उन्होंने यह भी महसूस किया कि जिस अंग्रेजी हुकूमत को वे काफी संवेदनशील और बेहतर मानते हैं वह वास्तव में वैसी उद्दात नहीं है। गांधी अपने इस दौरे की असफलता से निराश भी थे क्योंकि यहां उन्हें कोरे आश्वासन के अलावा कुछ नहीं मिला था।

इंग्लैंड से वापस लौटते समय उनके मन मे बहुत से विचार उमड़ घुमड रहे थे जिन्हे वे सब लोगों से साझा कर उनकी प्रतिक्रिया जानना चाहते थे। जहाज की यात्रा के एकांत में उन्होंने अपने विचारों को लेखों की शक्ल में कागज पर उतारना शुरू किया तो बीस अध्याय की एक अनुपम कृति का सृजन हुआ

जिसका नाम गांधी ने "हिंद स्वराज" रखा | हिंद स्वराज गांधी विचार का ऐसा बीज रूप है जिस पर देश विदेश के बहुत से चिंतको ने कुछ उसी तरह से बडे बडे टीका ग्रंथ लिखे हैं जैसे गीता आदि पर लिखे गए हैं। इसीलिए मुझे यह छोटी सी किताब गांधी की गीता सरीखी लगती है।

४५. 'हिंद स्वराज' पुस्तक में गाँधी का वैचारिक चिंतन

हिंद स्वराज शायद गांधी की इकलौती ऐसी कृति है जिसमें गांधी ने गागर में सागर भरी है। मुझे यह कृति गांधी विचार की गीता सरीखी लगती है जिसे गांधी गीता कहा जा सकता है।

यह किताब लिखने से पहले गांधी अंग्रेजी सभ्यता की चकाचौंध से अभिभूत थे। इसका शायद सबसे बड़ा कारण यही था कि बैरिस्टरी की पढ़ाई के दौरान उन्होंने इंग्लैंड में ज्यादातर अच्छा अच्छा ही देखा था और बैरिस्टरी की पढ़ाई के साथ साथ उन्हें धर्म सहित देश दुनिया की और भी बहुत सी बातों का ज्ञान वहीं हुआ था।

इसके बाद जब गांधी ने अफ्रीका में गौरों की सरकार की रंग भेद नीति और हिंदुस्तानियों के साथ अन्याय का साक्षात अनुभव किया तो उन्हें समझ में आया कि अंग्रेजी सभ्यता की चकाचौंध सतही है और यह सभ्यता और अंग्रेजी शासन मेहनतकश समाज के शोषण पर टिका है | इसके बरक्स भारतीय सभ्यता और संस्कृति मूलतः सत्य ,अहिंसा और सहिष्णुता का संदेश देती है | गांधी की इस कृति को हम उनकी सर्वोत्तम वैचारिक और जीवन दर्शन कृति भी कह सकते हैं क्योंकि इसमें उन्होंने अपने समग्र विचार संक्षेप में उडेल दिये हैं | बाद के लेखों और साक्षात्कारों में गांधी ने बार बार यह माना है कि 1909 में इसे लिखने के बाद आजीवन वे खुद इस कृति में लिखे को ही जीते रहे। यह कृति गांधी की कथनी और करनी में समानता का भी ऐतिहासिक दस्तावेजी प्रमाण है |

20 अध्याय में लिखी इस 80 पृष्ठ की छोटी सी कृति में हमें गाँधी के विचारों और अनुभवों का निचोड मिलता है। मुझे यह कृति निम्न तीन महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्रित लगती है -

1. इसके माध्यम से गाँधी हमें बताना चाहते हैं कि हम अपनी किन कमियों के कारण गुलाम बने। इसमें वे हमे डाक्टरों, वकीलों और न्यायिक व्यवस्था आदि की बड़ी कमियों के बारे मे बताते हैं।

2. वे हमे यह भी बताते हैं कि हम सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर अपनी कमियों को दूर कर कैसे स्वराज प्राप्त कर सकते हैं।

3. और स्वराज प्राप्ति के बाद गांधी के सपनों का भारत कैसा होना चाहिए इसकी झलक भी इस कृति में मिलती है।

इस कृति में गांधी कांग्रेस के बुजुर्ग नेताओं की सराहना करते हुए चेताते हैं कि हम अहिंसा की अपनी संस्कृति की पुरानी राह पकड़ कर ही असली स्वराज पा सकते हैं हिंसक क्रांति से नहीं। वे आत्म

निर्भरता और सहिष्णुता की भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पश्चिम की मशीनी सभ्यता (जिसे वे शैतानी सभ्यता कहते हैं) से बहुत बेहतर मानते हैं।

इस कृति को एक तरफ जहां टालस्टाय जैसी महान विभूतियों ने बहुत पसंद किया वहीं गोखले और नेहरू को यह अधिक प्रभावी नहीं लगी लेकिन गांधी इस कृति में अभिव्यक्त अपने विचारों से आजीवन चिपके रहे। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध और इक्कीसवीं सदी में इस कृति पर बहुत से चिंतको और लेखकों ने कई किताबें लिखी हैं जिनमें न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी, कांतिभाई शाह, गिरिराज किशोर और विनोद कुमार बरनवाल की कृतियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बाबा आमटे ने मुझे एक आत्मीय मुलाकात में स्वार्थ, शोषण हिंसा के वर्तमान परिदृश्य में इसकी और अधिक प्रासंगिकता बताई थी। 2009 में इस कृति के शताब्दी समारोह में "शब्दयोग" पत्रिका ने भी हिंद स्वराज पर केंद्रित एक विशेषांक प्रकाशित किया था जिसका अतिथि संपादन मैंने किया था। इस अंक में भी कई गांधीवादी विद्वानों ने इस कृति में व्यक्त गांधी के विचारों की वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में दिनों दिन बढती उपयोगिता बताई है |

मुझे लगता है हम भारतीयों के लिए यह गांधी की अवश्य पठनीय कृति है।

४६. जनरल स्मट्स की वादाखिलाफी

गांधी और उनके साथियों के साथ जनरल स्मटस ने मुलाकात के बाद जो वादे किए थे उन्ही के आधार पर गाँधी ने अफ्रीका में रह रहे अधिकांश हिंदुस्तानियों को इस बात के लिए राजी कर लिया था कि वे स्वेच्छा से अपने परवाने बनवा लें ताकि उसके तुरंत बाद अफ्रीका का यह खूनी कानून वापस लिया जा सके। इसी वजह से मीर आलम और उसके साथियों ने गांधी के फैसले से असहमति जताने के लिए उन पर कातिलाना हमला भी किया था।

जब गांधी के अनुरोध पर अधिकांश लोग परवाने बनवा चुके थे तो सबको उम्मीद थी कि जनरल स्मटस अब यह बिल वापस ले लेंगे लेकिन ऐसा हुआ नहीं | जनरल ने यह बिल वापस नहीं लिया और नये बिल में उसे जस का तस रखा। जनरल की वादाखिलाफी से गाँधी को जबरदस्त धक्का लगा और उन्होंने सरकार को अल्टीमेटम दिया कि यदि एक निश्चित समयावधि में समझौते का पालन नहीं हुआ तो सब लोग अपने परवाने सामूहिक रूप से आग के हवाले कर देंगे।

सरकार ने इसे हल्के में लिया और तार द्वारा उत्तर दिया जिसमें हिन्दुस्तानी समाज के निश्चय के प्रति खेद व्यक्त किया और अपना फैसला बदलने मे असमर्थता व्यक्त की। इस तार को पढकर गांधी ने हिंदुस्तानियों की सभा को सुनाया | सभा को शायद यही उम्मीद थी | सरकार का जवाब सुनते ही लोग खुश होकर परवाने जलाने के लिए तैयार हो गये।

इस सभा में मीर आलम भी उपस्थित था। उसने सार्वजनिक रूप से माना कि उससे गांधी पर हमला करने की भूल हुई है। उसने नया परवाना तो लिया ही नहीं था लेकिन अपना पुराना परवाना भी आग के हवाले करने के लिए गांधी को दे दिया। गांधी ने मीर आलम को आश्वसत किया कि उनके मन में उसके लिए जरा भी रोष नहीं था |

लगभग दो हजार परवाने जलाने के लिए कमेटी के पास आ गये थे। उन्हें एक कढाई में डालकर उनके ऊपर घासलेट डाला गया | गांधी ने दियासलाई से आग दी। इस सभा की कार्रवाई का समाचार पत्रों ने खूब प्रचार किया |

जनरल स्मटस ने इमीगरेंटस रेस्ट्रिक्सन एक्ट नाम का एक नया बिल भी पेश किया जिसके बाद एक भी हिन्दुस्तानी के लिए ट्रांसवाल में प्रवेश करना असंभव था। इसका भी कडा विरोध हुआ और कुछ सत्याग्रहियो ने ट्रांसवाल में प्रवेश की कोशिश की। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

गांधी की भी दूसरी बार गिरफ्तारी हुई ।

४७. गाँधी का मजदूर मार्च

गांधी ने अपनी आत्म कथा में इसे भव्य मार्च कहा है। मुझे यह भारत के प्रसिद्ध दांडी मार्च से भी अधिक भव्य और दिव्य लगता है। गांधी ने इस मार्च को दांडी मार्च की तरह पहले से योजना बद्ध नहीं किया था बल्कि यह स्वत:स्फूर्त था क्योंकि इसे आनन फानन में मजबूरी में किया गया था। गांधी के आव्हान पर अफ्रीका में न्यूकैसल की खदानो के पहले सैकड़ों और फिर हजारों मजदूर काम छोड़कर आ गये थे | गांधी के पास इतने मजदूरों की हड़ताल संभालने के लिए कोई पहले से तैयार योजना नहीं थी इसलिए यह तय किया गया कि इन्हे भी फीनिक्स के 16 सत्याग्रहियों की तरह ट्रांसवाल में प्रवेश करने के अपराध में जेल जाने दिया जाए ताकि इतने लोगों के रखरखाव की व्यवस्था का सरकार पर दबाव बने। गांधी ने सब मजदूरों को ठीक से समझाकर ट्रांसवाल की तरफ मार्च शुरू किया। गांधी के पास इन्हें पैदल चलाने के सिवाय कोई और रास्ता नहीं था। न रास्ते के भोजन की अच्छी व्यवस्था थी और न ट्रेन से ले जाने के लिए धन इसलिए अपंगो को ट्रेन से भेजकर बाकी सभी को पैदल चलाया।

रास्ते के गांव और कस्बों के पडाव में एक तरफ जहाँ चार्ल्सटाउन के हिन्दुस्तानी व्यापारियों ने धन, भोजन और रूकने की जगह देकर मदद की वहीं वाक्सरस्ट के गौरों ने हिंसा की धमकी देकर इस कारवाँ को डराने की कोशिश की लेकिन गांधी के नेतृत्व में कम में भी खुश रहकर गुजारा करते हुए मजदूरों ने अपना पैदल कूच अनुशासन में रहते हुए जारी रखा |

गांधी ने ट्रांसवाल सरकार को पत्र लिखकर सूचना दी कि हमारे मजदूर साथियों का ट्रांसवाल में प्रवेश वहां बसने के लिए नहीं है | यह आवाज तो हमें सरकार के वचन भंग के विरोध में उठानी पडी है। यदि सरकार तीन पौंड का कर माफ कर दे तो यह सत्याग्रह बंद कर दिया जाएगा और सभी मजदूर हड़ताल समाप्त कर वापस काम पर लौट जाएंगे। हम बाकी दुखों को दूर करने के लिए मजदूरों को सत्याग्रह में शामिल नहीं करेंगे।

न सरकार बहुत जल्दी पसीजने वाली थी और गाँधी के पास इंतजार करने का समय नहीं था इसलिए तय किया कि यदि सरकार ट्रांसवाल मे प्रवेश पर भी गिरफ्तार नहीं करती तो सबको टालस्टाय फार्म पर ले जाया जाएगा क्योंकि इतने लोगों की कहीं दूसरी जगह स्थाई व्यवस्था संभव नहीं थी | टालस्टाय फार्म पर पहुंचने में प्रतिदिन 20 से 24 मील चलते हुए आठ दिन की यात्रा करनी थी।

जिस तरह गांधी के लिए करीब पांच हजार लोगों के लिए व्यवस्था करना आसान नहीं था उसी तरह सरकार के पास भी इतनी भीड़ के लिए जेल की व्यवस्था करना टेढी खीर था। इतने लोगों की व्यवस्था को लेकर दौनो पक्षों की हालत एक सी थी।

इस कूच में कुछ भले अंग्रेजों ने भी गांधी की मदद की थी। चार्ल्सटाउन के डाक्टर ब्रिस्को ने जरूरी दवाइयों की व्यवस्था कर दी थी। उसके बाद अगले पड़ाव वाक्सरस्ट के एक गोरे भटियारे ने हर स्थान पर डबल रोटी पहुंचाने का करार कर लिया था।

गांधी ने सरकार को पत्र और तार तो भेजे ही थे फिर भी उन्होंने जनरल स्मट्स को टेलीफोन से भी संपर्क करने की कोशिश की। हालाँकि उसके रूख को देखते हुए समझौते की उम्मीद कम ही थी लेकिन गांधी हर संभव प्रयास करने की कोशिश कर रहे थे। गांधी का यह प्रयास भी सफल नहीं हुआ | स्मट्स ने गांधी से फोन पर बात करने से भी मना कर दिया।

अब इस कूच को गिरफ्तारी होने या टालसटाय फार्म तक पहुंचने तक जारी रखने के अलावा कोई और चारा नहीं था | गांधी के नेतृत्व में जुलूस पूरे उत्साह से आगे बढ़ रहा था |

४८. चार दिन में तीन बार गिरफ्तारी

गांधी और अफ्रीका की सरकार अपनी अपनी जगह कूच को क्रमश: सफल और असफल बनाने की पूरी कौशिश कर रहे थे। सरकार की तरफ से संवादहीनता के कारण दौनो को एक दूसरे के इरादे का पता नहीं था। गांधी ने अपनी गिरफ्तारी की हालत में भी कूच को सही नेतृत्व देने की महाभारत जैसी तैयारी की हुई थी कि कूच के किसी नेता की गिरफ्तारी के बाद अगले क्रम के नेता कौन कौन होंगे। गांधी के गिरफ्तार होने पर पी के नायडू को नेतृत्व संभालना था और उनकी गिरफ्तारी के बाद क्रम के अगले नेता को | वाक्सरस्ट के नाले को पार कर कूच ट्रांसवाल में प्रवेश कर गया था | वहां पुलिस के कुछ घुडसवार थे लेकिन इतनी भीड़ को संभालना उनके बस में नहीं था। शाम तक यह दल अगले पडाव पासफोर्ड पहुंच गया। जब रात में सब सो गये तब एक गोरा सिपाही गांधी को गिरफ्तार करने आया | गांधी ने पास सोये नायडू को जगाकर कहा- अभी लोगों को सोने दें। सुबह सबको गिरफ्तार करें तो आप सब गिरफ्तार हो जाना वर्ना आगे बढ जाना |

अगले दिन गांधी को अदालत में पेश किया गया | सरकारी वकील ने गांधी की जमानत अर्जी का विरोध किया लेकिन गांधी ने अपनी गिरफ्तारी के विरोध में दल के हजारों लोगों और महिलाओं एवं बच्चों की जिम्मेदारी का हवाला दिया | उन्हें जमानत मिल गई | कैलनबैक ने मोटर गाडी से गाँधी को अगले पडाव पर पहुंचा दिया | यात्रा में उनके साथ दि ट्रांसवाल लीडर अखबार का विशेष संवाददाता भी था। उसने इस घटना का सुंदर विवरण प्रकाशित किया |

गांधी की गिरफ्तारी के बाद अगले ही दिन रिहाई से जनता में जोश आ गया | सरकार को लगा कि गांधी को स्वतंत्र रखना ठीक नहीं | इसलिए अगले दिन स्टैंडरटन में उन्हें दुबारा गिरफ्तार किया गया | इस बार पुलिस की जगह मजिस्ट्रेट खुद गिरफ्तार करने आया था जिसे गांधी पहचानते थे | गांधी ने उनसे मजाक में कहा- "आप खुद मुझे पकड़ने आये हैं | इससे तो मेरा दर्जा बढ गया। " पहले दिन वाले तर्क के कारण गांधी को फिर जमानत मिल गई और वे पुनः काफिले के साथ मिल गये।

अगले दिन पोलाक गांधी से मिलने टीकवर्थ आये क्योंकि गोखले पोलाक को हिन्दुस्तान बुला रहे थे। यहां पर एक बार फिर से गाँधी को गिरफ्तार कर लिया गया | यह चार दिन में गांधी की तीसरी गिरफ्तारी थी। गांधी ने लोगों को समझाना शुरू किया तो उन्हें कहा गया कि गिरफ्तारी के बाद वे भाषण नहीं दे सकते | पोलाक के नेतृत्व में काफिला हेडलबर्ग पहुंचा जहाँ दो स्पेशल ट्रेन लोगों को गिरफ्तार कर वापस नेटाल लाने के लिए तैयार खड़ी थी | सब लोग शांति से गिरफ्तार होकर ट्रेन में सवार हो गये।

४९. अफ्रीका आंदोलन की सफलता और गाँधी का काम पूरा

गांधी और मजदूरों के काफिले की गिरफ्तारी के बाद गांधी के दोनों प्रमुख सहयोगियों पोलाक और कैलनबैक को भी गिरफ्तार कर लिया गया था। अफ्रीका की सरकार ने गांधी पर नेटाल छोड़ने के लिए मजदूरों को लालच देने का आरोप भी लगाया था।

मजदूरों के साथ अंग्रेज अधिकारियों ने और भी अधिक जुल्म किया। उन्होंने न्यू कैसल की खदानो को तार की जाली से घेरकर जेल बनाकर मजदूरों को कैद में रखा और खदानो के यूरोपियन कर्मचारियों को उनका वार्डन बना दिया | मजदूरों को खदानो में काम करने का आदेश हुआ | मना करने पर उनकी कोडों से पिटाई की गई। कैदी मजदूरों की हालत पहले से भी बदतर हो गयी थी | अब वे पूरी तरह गुलाम बना दिये गये थे |

भारतीय मूल के मजदूरों पर अत्याचार के समाचार भारत पहुंचने पर लगभग सारा हिन्दुस्तान भड़क उठा। अफ्रीका के मजदूरों का मामला हिन्दुस्तान का प्रमुख मुद्दा बन गया | इस घटना का यह भी असर हुआ कि दिसम्बर 1913 मे मद्रास के ऐतिहासिक भाषण में लार्ड हार्डिंग ने भी अफ्रीका की नीतियों की आलोचना की और सत्याग्रह के सविनय अवज्ञा आंदोलन का समर्थन किया। इस का दबाव भी अफ्रीका सरकार पर पड़ा और सरकार को अंततः झुकना पड़ा। गांधी सहित सभी कैदियों को रिहा कर दिया गया और काले कानून सहित तीन पौंड का कर भी समाप्त हो गया | हिंदुस्तानी समुदाय के लोगों के लिए अफ्रीका में संपत्ति खरीदने का सुभीता हो गया।

इस सत्याग्रह का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि हिन्दुस्तानी लोगों में गजब की एकता हुई और गौरों और जेल का भय समाप्त हो गया। अब वे अत्याचार के विरोध में शांति प्रिय आंदोलन का महत्व समझ गये थे। गांधी की लोकप्रियता में भी इस आंदोलन के बाद चार चाँद लग गए थे |

अफ्रीका में गांधी जिस काम के लिए इतने साल रूके थे वह पूरा हो गया था। अब गोखले जैसे नेता गांधी की भारतीय कांग्रेस के पटल पर उपस्थिति चाहते थे और गाँधी खुद भी अफ्रीका के अपने सफल प्रयोग भारत में करना चाहते थे। भारी मन से उन्होंने अफ्रीका छोड़कर भारत आने का फैसला किया |

५०. इंग्लैंड के रास्ते भारत आगमन

अफ्रीका के काम से मुक्त होकर गांधी ने इंग्लैंड होते हुए भारत आने का कार्यक्रम बनाया था | अफ्रीका में गाँधी ने अपनी अंतिम लड़ाई लगभग 8 साल लडी थी और वहां उन्होंने अपने जीवन के 21 बेशकीमती साल बिताए थे। गांधी ने अपनी आत्म कथा में स्वीकार किया है कि अफ्रीका में ही उन्हें अपने जीवन का लक्ष्य समझ में आया था इसलिए अफ्रीका छोड़कर भारत आते वक्त उन्हें हर्ष के साथ काफी दुख भी था।

गोखले उन दिनों इंग्लैंड में थे इसलिए गांधी उनसे मिलने के बाद ही भारत आने वाले थे। गांधी 6अगस्त 1914 को इंग्लैंड पहुंचे | इसी बीच 4अगस्त 1914 को प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत हुई थी। अफ्रीका के सत्याग्रह की सफलता के बाद भी गांधी की ब्रिटिश राज के प्रति आस्था बरकरार थी। विश्व युद्ध के संकट के समय गांधी संशय की स्थिति में थे। एक तरफ उनका अहिंसा के प्रति समर्पण था जो युद्ध का विरोधी था और दूसरी तरफ अंग्रेजी राज के प्रति निष्ठा उनसे न चाहते हुए भी युद्ध में मदद की मांग करती थी | सोच विचार कर गाँधी ने इंग्लैंड में रहकर युद्ध के दौरान उसी तरह के सहयोग की पेशकश की जैसी वे अफ्रीका में रहते हुए बोअर युद्ध और जूलु विद्रोह के समय कर चुके थे | संकट के इस काल में गांधी और उनके हिंदुस्तानी साथियों की इस पेशकश को अंग्रेज अधिकारियों ने साभार स्वीकार कर लिया | गांधी ने इंग्लैंड में रहकर यह काम पूरे मनोयोग से शुरू कर दिया था लेकिन इस बीच वे काफी बीमार हो गये और उनकी पसलियों में सूजन आ गयी | डाक्टर की सलाह थी कि उन्हें ठंड के कारण तकलीफ हो रही थी इसलिए यह काम बीच में छोड़कर उन्हें भारत आना पड़ा | भारत पहुंचने पर सबसे पहले उन्होंने अपने गुरु गोखले से मिलने के लिए पूना जाने का कार्यक्रम बनाया। भारत में अपनी नई पारी की शुरुआत वे गोखले जी के निर्देशानुसार ही करना चाहते थे।

गोखले और फिरोज शाह मेहता ने गांधी के सम्मान में एक सभा आयोजित की थी | अफ्रीका में विजयी गांधी के सम्मान में देश मे कई सभाएं हुई थी। इसी कडी में गुजराती समाज ने भी एक सम्मान सभा आयोजित की थी जिसकी अध्यक्षता जिन्ना ने की थी। भारत आने के बाद गांधी गोखले की सलाह से ही आगे का कार्यक्रम तय करना चाहते थे। बीमार होकर बिस्तर पकड़े गोखले चाहते थे कि गांधी भी उनकी संस्था "सर्वेंट आफ इंडिया " में आ जाएँ | उन्होंने गांधी को एक साल राजनीति से दूर रहकर भारत भ्रमण करने की सलाह भी दी थी जिसका गांधी ने अक्षरश: पालन भी किया। गोखले ने गांधी से यह भी कहा कि वे भारत में चाहे जहाँ अपना आश्रम बना लें जिसका खर्च गोखले उठाएँगे।

५१. स्थाई रूप से भारत में

विलायत से बम्बई पहुंच कर गाँधी अपने गुरु गोखले की सलाह से ही भारत में जन सेवा के काम करना चाहते थे | गोखले और उनके कुछ साथियों की इच्छा थी कि गांधी उनकी संस्था भारत सेवक समाज के सदस्य के रूप में देश सेवा के काम करें। गांधी खुद भी ऐसा ही चाहते थे लेकिन यह संभव नहीं हो सका | इस संस्था के कुछ लोगों को गाँधी के काम करने के तौर तरीकों से ऐतराज था क्योंकि गोखले की संस्था के नियम कायदे उनसे अलग थे | गांधी भी यह नहीं चाहते थे कि उनके कारण इस संस्था के अंदर कोई मतभेद हो | गांधी को भारत में एक आश्रम बनाकर अफ्रीका के फीनीक्स आश्रम से भारत आये अपने साथियों की भी समुचित व्यवस्था करनी थी।

गांधी का मन था कि अफ्रीका के फीनिक्स आश्रम और टालस्टाय फार्म की तरह भारत मे भी एक उसी तरह का आश्रम स्थापित कर अपने अधूरे प्रयोग पूरे करें | यह आश्रम वे गुजरात में अहमदाबाद के आसपास खोलना चाहते थे क्योंकि गुजराती होने के कारण वहां उन्हें नया काम शुरू करने में आसानी थी। दूसरे वहां के मिल मालिकों से आर्थिक सहयोग मिलने की संभावना थी और वहां हथकरघा के बहुत से कामगार थे जिनके साथ खादी का काम किया जा सकता था | गोखले ने गांधी को कहा कि उनके आश्रम के लिए वे धन उपलब्ध करायेंगे | गांधी के लिए इससे बेहतर क्या हो सकता था | न धन इकट्ठा करने की आवश्यकता थी और अनुभवी गोखले जी का मार्ग दर्शन मिल गया था। गोखले के आशीर्वाद और सहयोग से शुरू हुए काम और आश्रम को सफल होना ही था |

गोखले की एक और महत्वपूर्ण सलाह मानकर एक साल गाँधी ने केवल भारत भ्रमण किया और इस दौरान न कोई सभा आदि की और न किसी मुद्दे पर अपने विचार रखे | गांधी के लिए यह दौरा बहुत अच्छा रहा | बैरिसटरी की पढ़ाई करने के बाद गांधी का अधिकांश समय अफ्रीका के हिंदुस्तानी समुदाय की लड़ाई लडते हुए अफ्रीका में ही बीता था इसलिए उन्हें भारत की जमीनी हकीकत का वैसा अनुभव नहीं था जैसा अफ्रीका के हिंदुस्तानी समुदाय की समस्याओं का था। एक साल के इस दौरे ने उन्हें अपने देश की रग रग से वाकिफ करा दिया था और एक साथ वे पूरे देश की नब्ज पहचानने लगे थे। कालांतर में भारत में बहुत जल्दी गांधी की लोकप्रियता का शायद यह भी एक प्रमुख कारण बना |

५२. देश भ्रमण पर

पहली बार जब गांधी अफ्रीका गये थे तब वे पहले दर्जे में ही रेल यात्रा करना पसंद करते थे लेकिन जैसे जैसे उन्होंने समाज सेवा की राह में कदम बढाया उन्होंने अपने सभी खर्च कम से कम कर दिये थे । 1915 में भारत आकर भी उन्होंने ऐसी ही सादगी से रहने की जीवन शैली अपनाई थी । यात्रा के लिए वे तीसरे दर्जे का टिकट लेते थे । तीसरे दर्जे की हालत उन दिनों भी कमोबेश वैसी ही थी जैसी आजकल अनारक्षित जनरल डिब्बे की रहती है ।

गांधी ने अपनी आत्म कथा में दो घटनाओं का जिक्र किया है जो उस दौरान तीसरे दर्जे के यात्रियों की दुर्दशा और आम जनता की कमियों का सटीक चित्रण है । शांति निकेतन से लौटते समय वे टिकट लेने में होने वाली धक्का मुक्की का जिक्र करते हुए कहते हैं कि टिकट खिड़की पर बलवान लोग मेरे जैसे कमजोर को धकियाकर बार बार पीछे कर देते थे । गाड़ी आने पर उसमें चढने के लिए भी गाली गलौज होती थी | जो अंदर घुस जाते थे वे बाहर वालों को घुसने नहीं देते थे । गांधी ने लिखा है कि कस्तूरबा के साथ भीड़ के कारण वे तीसरे दर्जे के डिब्बे में नहीं घुस पाए और तीसरे दर्जे के टिकट पर डयोढे दर्जे के डिब्बे में बैठ गये तो गार्ड ने ज्यादा टिकट वसूली के बाद ही दम लिया | गांधी ने यह कहकर विरोध किया कि तीसरे दर्जे में बैठने की जगह ही नहीं है तो उसने नीचे उतारने की धमकी दे दी । मुगलसराय स्टेशन पर गाँधी तीसरे दर्जे के डिब्बे में बैठ गये तो भी उसने उनसे वसूला अधिक किराया वापस नहीं किया ।

ऐसा ही विवरण गांधी ने कराची से लाहौर होते हुए कलकत्ता जाने का दिया है जब उन्हें लाहौर से दिल्ली के लिए आते समय खिड़की के रास्ते डिब्बे में घुसाने के लिए मदद करने वाले मजदूर को बारह आने देने पडे थे । डिब्बे में घुसने के बाद अंदर बैठे लोगों ने उन्हें ठीक से खड़ा भी नहीं होने दिया । बाद मे जब उन्हें गांधी का परिचय मिला तब जरूर उन्हें शर्मिंदगी हुई ।

देश आजाद हुए लगभग सात दशक होने को आए लेकिन आजकल भी हालात कमोबेश वैसे ही हैं । रेलवे विभाग की जिम्मेदारी बनती है कि टिकट देने के बाद लोगों को बैठने की ठीक व्यवस्था होनी चाहिए और जनता को भी सभ्य और सौम्य बनना चाहिए | गांधी के देश में धक्का मुक्की और गाली गलौज नहीं होना चाहिये |

५३. भारत में गांधी का पहला आश्रम

गोखले के आशीर्वाद और एक साल भारत भ्रमण के बाद गांधी ने अहमदाबाद के पास कोचरब में पहला आश्रम बनाया | इस आश्रम में भी गांधी और उनके सहयोगी पच्चीस स्त्री पुरुषों को एक परिवार के रूप में एक ही रसोई के साथ रहना था। अहमदाबाद के लोगों ने आश्रम स्थापित करने के लिए खूब मन से सहयोग दिया था और सब काम गांधी के हिसाब से पूरा हो रहा था। गांधी यहां से कताई और खादी का काम शुरू करना चाहते थे ताकि वस्त्रों के लिए विलायत पर निर्भरता कम हो और गरीब लोग इस काम में रोजगार पा सकें और आत्म निर्भर बन सकें। आश्रम का नाम भी दक्षिण अफ्रीका के शांति प्रिय आंदोलन की पद्धति के आधार पर सत्याग्रह आश्रम रखा गया |

कुछ दिन बाद ठक्कर जी ने एक अंत्यज परिवार को गाँधी जी की स्वीकृति लेकर आश्रम मे रहने के लिए भेजा। उन दिनों गुजरात सहित लगभग पूरे देश में निम्न वर्ग की कई जातियों के साथ छूआछूत का आम माहौल था। बचपन में गांधी ने अपने घर में भी यह सब होते हुए देखा था इसलिए उन्हें यह अत्याचार अच्छा नहीं लगता था। अफ्रीका के आश्रमो में उन्होंने खास तौर पर इसका ध्यान रखा था कि किसी को अस्पर्श्यता का दंश नहीं झेलना पडे।

आश्रम में आये अंत्यज परिवार में दूदाभाई, उनकी पत्नी दानी बहन और बेटी लक्ष्मी तीन जन थे। गांधीजी की बारीक नजर ने देखा कि उनके परिवार के लोग प्रत्यक्ष में तो कुछ नहीं कहते लेकिन इस अंत्यज परिवार के लिए वह उदासीन हैं। जैसे ही आसपास के लोगों को इस परिवार की बात मालूम हुई तो लोगों ने आश्रम से अपने हाथ खींच लिये | कूएं पर पानी भरना मुश्किल हो गया। लोग उन्हे गालियां देते लेकिन गांधी के आग्रह से आश्रम वासी शांत रहते। आश्रम के लोगों के बहिष्कार जैसी हालत हो गई। मगनलाल ने गांधी को बताया कि अगले महीने आश्रम का खर्च चलाने के लिए पैसे नहीं हैं।

संकट की इस घडी में एक सज्जन अपनी कार से आए और आश्रम को आर्थिक मदद की पेशकश की। वे आश्रम के अंदर भी नहीं आये बाहर से ही गांधी से बात कर अगले दिन तेरह हजार रूपये दे गये | इस रकम से आश्रम चलाने के लिए लगभग एक साल का खर्च आ गया। गांधी को इन अदभुत दानी से बहुत संबल मिला। उन्होंने दूदाभाई को भी समझाया कि छोटे मोटे अपमान सहन कर लिया करें | गांधी जान रहे थे सदियों सहस्त्राब्दियों से जड जमाए कुसंस्कारों की मोटी जंजीरें रातों रात नहीं टूटती। लोगों को बदलने में,उनका हृदय परिवर्तन होने में समय लगता है। और चीजें अच्छाई की तरफ बदल रही थी। इसीलिए तो आश्रम में सब धर्मों और जातियों के लोग साथ रहने लगते थे।

५४. चंपारन सत्याग्रह की शुरुआत

चंपारन (बिहार)के किसान नील की खेती की बेगार जैसी प्रथा से बहुत परेशान थे। वहां तीन कठिया नाम का कडा कानून था | इसके अनुसार हर किसान को 3/20 हिस्से में नील की खेती करना अनिवार्य था। एक बीघा जमीन में 20 कठठे भूमि होती है। नियम यह था कि प्रति बीघा तीन कठठे जमीन में नील की खेती करनी है। इसके मालिक निलहे अंग्रेज कहलाते थे जो आनाकानी करने वाले किसानों को तरह तरह के अत्याचार से परेशान करते थे।

चंपारन के एक जागरूक किसान राजकुमार शुक्ल ने गांधी के आंदोलनों के बारे में सुन रखा था। उन्हें उम्मीद थी कि एक बार गांधी यहां आकर किसानो की व्यथा देख लें तो वे इन गरीब किसानों को इस कुप्रथा से आजादी दिला सकते हैं | उन दिनों भारत में गांधी को बहुत लोग नहीं जानते थे क्योंकि गांधी के अफ्रीका प्रवास के दौरान किये गये आंदोलनों से हिंदुस्तान के पढे लिखे लोग और कांग्रेस के बडे नेता ही अधिक परिचित थे।

राजकुमार शुक्ल की गाँधी से पहली छोटी सी मुलाकात कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में दिसंबर 1916 में हुई थी | उन दिनों गांधी के भाषणों के भारत में बहुत चर्चे थे। काशी में भी 4 फरवरी 1916 में जहाँ वे काशी विश्वविद्यालय के स्थापना समारोह में इसके संस्थापक मदनमोहन मालवीय जी के विशेष आग्रह पर आये थे गांधी का बडा ओजस्वी भाषण हुआ था जिसमें उन्होंने भारत के राजे महाराजों को खरी खरी सुनाई थी जिससे कई लोग तिलमिलाकर सभा छोड गये थे।

राजकुमार शुक्ल की गाँधी से पहली मुलाकात सामान्य ही रही | गांधी ने उन्हें कोई निश्चित आश्वासन नहीं दिया था और कहा था कि जब भी समय मिलेगा वे चंपारन का कार्यक्रम बनाएँगे। राजकुमार शुक्ल भी पक्के इरादे वाले किसान थे | उन्होंने गांधी का तब तक पीछा नहीं छोड़ा जब तक गांधी ने उन्हें 1917 में कलकत्ता कार्यक्रम के बाद चंपारन आने की तारीख तय नहीं कर दी।

राजकुमार शुक्ल कलकत्ता से गाँधी को पटना लाए। पटना में गांधी के रूकने की पहले से कोई व्यवस्था नहीं थी इसलिए शुक्ल गांधी को बाबू राजेन्द्र प्रसाद के घर ले गये। राजेन्द्र बाबू पटना के बडे वकील थे। उन दिनों उनके यहां भी आम घरों की तरह छूआछूत का माहौल था | राजेन्द्र बाबू घर में नहीं थे इसलिए नौकर ने गांधी की जाति की जानकारी नहीं होने के कारण उनहें घर की बजाय बाहर का ही पाखाना इस्तेमाल करने के लिए कहा | गांधी इस तरह की चीजों को दिल पर नहीं लेते थे। उन्होंने नौकर

की आज्ञा का सहर्ष पालन किया क्योंकि वह तो अपने मालिकों के कहे अनुसार उनके लिए वफादारी से काम कर रहा था।

पटना में गांधी ने अधिक वक्त जाया नहीं किया और चंपारन की राह पकड़ी।

चंपारन का इलाका और यहां की समस्या गांधी के लिए एकदम नई थी इसलिए गांधी कम समय में अधिक से अधिक लोगों से मुलाकात कर समस्या की जड देखना समझना चाहते थे। पटना से गाँधी सीधे मुजफ्फरपुर पहुंचे। वहां आचार्य कृपलानी जी ने गांधी को यहां की समस्या की गंभीरता के बारे में बताया और कई लोगों से गाँधी का परिचय कराया। वहीं गांधी से मिलने दरभंगा से बाबू बृजकिशोर और राजेन्द्र प्रसाद भी पहुंच गये | पहली ही मुलाकात में सब लोग गांधी से ऐसे जुड़े कि यह जुडाव आजीवन रहा और समय के साथ और प्रगाढ होता चला गया।

बृज किशोर बाबू कुछ गरीब किसानों के मुकदमे लडते थे इसलिए किसानों में उनकी अच्छी पैठ थी। उन्होंने गांधी को इन मुकदमों की जानकारी दी। गांधी मुकदमों के पक्ष मे नही थे | उनका मत था कि गरीब किसानों को निर्भयता के साथ इस तीन कठिया प्रथा का विरोध कर इसे खत्म कराना चाहिए तभी सही लाभ होगा। बरसों से दबे कुचले किसानों के लिए अंग्रेजों का विरोध आसान काम नहीं था लेकिन गांधी ऐसे कठिन काम अफ्रीका में कर चुके थे इसलिए उन्हें यहां भी सफलता की उम्मीद थी। गांधी ने यह भी महसूस किया कि यह काम एक दो दिन में संभव नहीं है इसलिए उन्होंने अपनी योजना बदलकर यहां काफी समय रूकने का फैसला किया।

५५. चंपारन के आंदोलन ने बदला गांधी का नजरिया

चंपारन का आंदोलन लंबा चला | बाद में वहां गांधी के अन्य सहयोगियों के साथ कस्तूरबा भी आ गयी थी। गांधी ने अपने साथियों को समझा दिया था कि इस काम में उन्हें जेल भी जाना पड़ सकता है। बृजकिशोर जैसे कई लोग इसके लिए भी तैयार थे और उन्होंने गांधी को हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया था।

गांधी ने किसानों, मालिकों और कमिश्नर तीनों पक्षों से बातचीत की। अंग्रेज मालिकों को उनके और किसानों के बीच में गांधी का दखल पसंद नहीं था। उधर किसानों की निरक्षरता और गरीबी को देखकर गांधी ने वहां तीन कठिया के खिलाफ आंदोलन का काम करते हुए शिक्षा आदि के रचनात्मक काम शुरू करने का भी तय किया। वे चाहते थे कि इन कामों में महिलाओं की भी भागीदारी होनी चाहिये। कस्तूरबा को महिलाओं को आंदोलन से जोड़ने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। भीतिहरवा गांव में कस्तूरबा को यहां की महिलाओं की बातचीत में यह पता चला कि कि महिलाओं के पास पहनने के लिए एक भी ढंग की साडी नहीं है। घर के अंदर तो जैसे तैसे चल जाता है ऐसी हालत में बाहर कैसे निकलें। उन्होंने कहा- गाँधी से हमें कपड़े दिलाओ तो हम भी बाहर आएंगी।

चंपारन के गांवो मे गांधी ने भारत की गरीब जनता की असलियत पहली बार देखी थी। उन्हें खुद पर शर्म भी आई कि हमारे भाई बहन इस हालत में गुजर करते हैं और हम इतनी बड़ी पगड़ी पहनते हैं। कालांतर में गांधी ने देश के गरीब देहातियों की ऐसी ही दयनीय हालत देख देखकर एक दिन अचानक पगड़ी और लंबी धोती कुर्ता हमेशा के लिए त्याग कर सबको चौंका दिया। चंपारन के आंदोलन ने गाँधी का हुलिया भी बदला और नजरिया भी। गांधी खास की श्रेणी से आम में आ गये और अंत तक आम ही बने रहे।

गांधी ने चंपारन जिले के मुख्यालय मोतीहारी में गोरखबाबू के यहां डेरा डाला था। कुछ ही दिनों में यह घर भीड़ का अड्डा बन गया | इस इलाके में गांधी के आगमन के पहले कांग्रेस की कोई पहचान नहीं थी। गांधी के आने से पूरा इलाका कांग्रेस के रंग में रंग गया था। इसी वजह से चंपारन के प्रशासन ने गांधी को यह इलाका छोडने का आदेश दिया लेकिन गांधी ने यह आदेश मानने से इंकार कर दिया | गांधी पर मुकदमा हुआ लेकिन यह मुकदमा टिक नहीं पाया | अंततः उन्हें वहां रहकर किसानों पर किये गये अत्याचारों के अध्ययन की इजाजत मिल गई |

गांधी ने बड़ी मेहनत से एक सच्ची रिपोर्ट पेश की। गवर्नर एडवर्ड गेट ने फ्रैंक स्लाई की अध्यक्षता में एक समिति बनाई जिसमें गांधी को भी सदस्य बनाया गया। इस समिति ने गांधी की रिपोर्ट सही मानते हुए तीन कठिया कानून रद्द करने की सलाह दी जिसे गवर्नर ने मान लिया | इस तरह सौ साल पुराने कानून का अंत हुआ।

यहां भी गांधी के सत्य और अहिंसा पर आधारित आंदोलन की जीत हुई और गाँधी के ही शब्दों में नील का दाग धुल गया।

गांधी ने यहां शिक्षा आदि के जो रचनात्मक काम शुरू किये थे उन्हें तो वे अन्य व्यस्तताओं के कारण बहुत आगे नहीं बढ़ा सके लेकिन इस आंदोलन ने गांधी को भारत के गरीबों का सबसे विश्वसनीय शुभचिंतक बना दिया था।

५६. अहमदाबाद की मजदूर हड़ताल और गांधी का पहला उपवास

अहमदाबाद के मजदूरों की हड़ताल के मामले में गांधी के लिए बडा धर्म संकट पैदा हो गया था। एक तरफ उनका दिल मजदूरों के लिए धडकता था जिनकी तनख्वाह उनकी जरूरतों की तुलना में काफी कम थी और वे काफी समय से तनख्वाह बढाने की वाजिब मांग कर रहे थे। गांधी इसीलिए इस मामले में मजदूरों की रहनुमाई करने के इच्छुक थे।

दूसरी तरफ मिल मालिकों के साथ भी गांधी के मधुर संबंध थे इसलिए उनके साथ सीधी लडाई आसान नहीं थी। अहमदाबाद के मिल मालिकों से गाँधी को आर्थिक मदद भी मिलती थी।

एक संकट यह भी था कि अनसुइया बहन मजदूर संघ के साथ थी और उनकी लडाई अपने भाई के साथ थी | गांधी चाहते थे कि मालिकों और मजदूरों के बीच पंच नियुक्त हो जाएं तो यह मामला शांति से निबट सकता है लेकिन मिल मालिकों ने पंच की बात स्वीकार नहीं की।

बातचीत से रास्ता बनता न देख गांधी ने मजदूर नेताओं को हड़ताल की सलाह दी। गांधी ने हड़ताल को सफल बनाने के लिए मजदूरों के सामने कुछ शर्तें भी रखी जिनमें हड़ताल के दौरान शांति और धैर्य की बात प्रमुख थी। यह हड़ताल 21 दिन चली। इस बीच भी गांधी ने मालिकों के साथ बातचीत की लेकिन वे भी जिद पर अडे थे इसलिए बात नहीं बनी।

पहले दो हफ्ते हड़ताल ठीक से चली। उसके बाद मजदूरों के कदम लडखडाने लगे। कुछ मजदूर काम पर जाने लगे और हडताली उनसे ईर्ष्या करने लगे। बल्लभ भाई पटेल ने मजदूरों को म्युनिसपैलिटी में वैकल्पिक रोजगार दिलाने की कौशिश की। मगनलाल ने मजदूरों को आश्रम में रेत भराई के काम पर लगाया जिसकी शुरुआत अनसुइया बहन ने खुद रेत की टोकरी उठाकर की। गांधी ने मजदूर संघ की एकता खंडित होती देख फैसला होने तक उपवास की घोषणा कर दी | गांधी के उपवास का दोहरा असर हुआ। मजदूरों ने फिर से दृढ़ रहने का निश्चय किया और गांधी के स्नेही मिल मालिकों ने भी पंच बनाना स्वीकार कर लिया। गांधी को केवल तीन दिन उपवास करना पडा | मालिकों और मजदूरों के बीच फैसला हो गया। मालिकों ने मजदूरों को मिठाई खिलाकर हडताल खत्म होने का जश्न मनाया।

हालाँकि यह हड़ताल और गांधी का उपवास अपने प्रयोजन में सफल रहे थे फिर भी गांधी जी का मन दुखी था क्योंकि उन्हें लगता था कि मिल मालिकों के साथ उनकी मित्रता के कारण उनके उपवास से उन पर अतिरिक्त दबाव पडा है जो अपने मित्रों के साथ ज्यादती के समान है। यही गांधी की वह सूक्ष्म नैतिकता है जो उन्हें अपने तमाम समकालीन महानुभावों से अलग करती है |

५७. खेडा किसान सत्याग्रह

इधर गांधी के उपवास के बाद अहमदाबाद के मिल मजदूरों की हड़ताल खत्म हुई थी और उधर खेडा के किसानों की समस्या गांधी के सामने आ गई। खेडा जिले में अकाल जैसे हालात बन गए थे। किसानों की फसल का बहुत नुकसान हुआ था | पाटीदार कह रहे थे कि फसल एक चौथाई से भी कम रह गई है लेकिन सरकारी अधिकारियों के अनुसार इतना नुकसान नहीं हुआ था। उन दिनों यह कानून था कि यदि आपदा के कारण फसल एक चौथाई रह जाएगी तो उस साल लगान नहीं लिया जाएगा। सरकार ने सही स्थिती जानने के लिए किसानों का पंच नियुक्त करने का सुझाव भी नहीं माना।

इस मामले में गांधी के सहयोगियों में सरदार बल्लभ भाई पटेल ने अपनी वकालत दांव पर लगा दी थी। महादेव देसाई जो अपनी अंतिम सांस तक गांधी के सचिव रहे वे भी इस आंदोलन में अग्रनी भूमिका निभा रहे थे। इसकी शुरुआत नडियाद के अनाथाश्रम में हुई थी जहाँ किसानों ने एक सामूहिक प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए थे। इसमें लिखा था कि हमारे गांव में फसल एक चौथाई से कम हुई है इसलिए लगान एक साल के लिए मुलतवी होना चाहिए। यदि सरकार इसके लिए हमें दंडित भी करती है तो हम दंड सहन करेंगे लेकिन लगान नहीं भरेंगे।

खेडा आंदोलन के लिए बम्बई के सेठों ने काफी आर्थिक मदद की थी। शुरू शुरू में यह आंदोलन बहुत सफल रहा लेकिन आंदोलन की सफलता से घबराई सरकार ने भी काफी सख्ती की और कुर्की करके किसानों के पशु तक बेच डाले। सख्ती के सामने कुछ किसान टूटने लगे।

गाँधी की सलाह पर मोहनलाल पंडया ने, जो इस आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता थे, कुर्की का आदेश हुए प्याज के खेत की फसल काटी | सरकार ने उन पर प्याज की चोरी का मामला दर्ज किया। इस मामले में उनके समर्थकों की भारी भीड़ जुटी और उन्हें प्यार से प्याज चोर की उपाधि देकर जय जयकार किया। दूसरी तरफ शंकर लाल बैंकर की जमीन जोतने वाले किसान ने अपनी लगान जमा करा दी | बैंकर ने इस गलती का प्रायश्चित यह जमीन जनता को दान कर किया।

गांधी इस आंदोलन को भी समझौता कर समाप्त करना चाहते थे। अंतत: तहसीलदार और कलेक्टर के साथ यह लिखित सहमति बनी कि जिन किसानों की हैसियत लगान देने की है यदि वे लगान जमा करा दें तो बाकी गरीब जनता का लगान माफ कर दिया जाएगा | इस तरह कुल मिलाकर गांधी का यह आंदोलन भी सफल रहा |

खेडा आंदोलन पर इस आंदोलन में शरीक रहे शंकर लाल पारिख ने एक महत्वपूर्ण किताब लिखी है |

५८. विश्व युद्ध में सैनिक भर्ती में गांधी की भूमिका

1918 के आसपास पहला विश्व युद्ध जोर पकड़ रहा था। इस युद्ध के लिए अंग्रेजों को हिंदुस्तान से भी काफी संख्या में सिपाही भर्ती करने की जरूरत महसूस हो रही थी। कांग्रेस के अधिकांश सदस्यों की तरह उन दिनों गांधी भी अंग्रेजी राज की तमाम बुराइयों के बावजूद यह मानते थे कि जर्मनी और इटली आदि की तानाशाही की तुलना में अंग्रेजों का शासन भारत सहित अन्य गुलाम देशों के लिए मौजूदा विकल्पों में बेहतर विकल्प है। गांधी ने अपने गृह राज्य सहित देश के कई इलाकों मे राजे रजवाडों के अराजक शासन को भी नजदीक से देखा था जिनकी तुलना में उन्हें काफी हद तक नियम कानून के तहद काम करने वाला अंग्रेजी राज उचित लगता था। इसीलिए गांधी ने विश्व युद्ध के संकट के समय अंग्रेजों की मदद के लिए सैनिकों की भर्ती के लिए जन अभियान चलाया। इस सिलसिले में उन्होंने इस शर्त के साथ वायसराय के साथ हुई बैठक में हिस्सा लिया था कि वे अपनी बात हिंदुस्तानी भाषा में रखेंगे।

वायसराय से मुलाकात के बाद गाँधी गुजरात के अंदरूनी इलाकों में घूम घूम कर युवा पीढ़ी को फौज में भर्ती के लिए तैयार करने के काम में पूरे मनोयोग से जुटे थे क्योंकि उन्होंने तत्कालीन वाईसराय लार्ड चेम्सफोर्ड को विश्व युद्ध में भारतीयों के सक्रिय समर्थन का वचन दिया था। गांधी ने सरदार वल्लभभाई पटेल आदि साथियों से विचार करने के बाद तय किया कि सबसे पहले खेडा के युवाओं से फौज में भर्ती के लिए अपील करेंगे जहां कुछ समय पहले किसान आंदोलन में लोगों ने बढ चढकर भाग लिया था। इस काम के लिए कुछ लोग गांधी से असहमत भी थे क्योंकि यह हिंसा में भागीदारी करना था और लोगों में खेडा के किसान आंदोलन के दौरान अंग्रेजी राज के अत्याचार के कारण आक्रोश भी था। गांधी को बहुत अच्छा प्रतिफल नहीं मिला। जिस तरह से खेडा आंदोलन में लोगों ने मदद की थी इस काम के लिए लोगों में वैसा उत्साह नहीं था।

इस अभियान में गाँधी लोगों को दो बातें समझा रहे थे। अंग्रेजों ने भारतीयों को निरस्त्र कर दिया था। गांधी फौज में भर्ती होने वाले युवाओं को अस्त्र की शिक्षा के लिए प्रेरित कर रहे थे ताकि संकट के समय यह शिक्षा रक्षा के लिए काम आ सके। दूसरे गांधी मानते थे कि अंग्रेजों का साथ देने से उनके साथ आपसी विश्वास कायम होगा। गांधी ने गुजरात के कमिश्नर के साथ एक सभा को संबोधित करते हुए यह भी कहा था कि अंग्रेजों ने भारत में कई दुष्कृत्य किये हैं लेकिन कुछ अच्छे काम भी किये हैं। यह अवसर दौनो के संबंध और बेहतर बनाएगा। गाँधी की स्पष्टवादिता से अंग्रेज कमिश्नर भी प्रभावित हुए थे हालाँकि कुछ लोगों ने गांधी के इस निर्णय की आलोचना भी की थी।

५९. गाँधी की बकरी और उसका जीवन रक्षक दूध

अंग्रेजी फौज के लिए रंगरूटों की भर्ती करने के लिए लौगों को समझाने की कोशिश करने में गाँधी ने बहुत मेहनत की थी | गांधी की आदत थी कि वे जो भी काम अपने ऊपर लेते थे उसे पूरा करके ही दम लेते थे | इस काम की भागदौड़ में उन्होंने ठीक से भोजन नहीं किया और अधिकांश समय भुनी हुई मूँगफली और नींबू के पानी पर ही निर्भर रहे | मूंगफली के अधिक सेवन से उन्हें जबरदस्त पेचिस की शिकायत हुई | गांधी बीमारी में अंग्रेजी दवाओं के सेवन से परहेज करते थे और देशी इलाज से ही काम चलाते थे। इस बीमारी में भी वे अल्पाहार से अपना उपचार कर रहे थे | इस बीच एक दिन कस्तूरबा के अनुरोध और स्वाद के लोभ में उन्होंने गरिष्ठ भोजन कर लिया जिससे उनकी तबियत और खराब हो गई।

गाँधी ने अपनी आत्म कथा में लिखा है कि वे खुद को मृत्यु के आगोश में जाते महसूस कर रहे थे। गंभीर बीमारी के उन दिनों में शंकर लाल बैंकर आदि कई लोगों ने उनकी बहुत सेवा की और डाक्टर दलाल आदि कई डाक्टरों ने उनकी जांच की। कमजोरी की हालत में उन्हें दूध के सेवन के लिए कहा गया। अफ्रीका प्रवास के दौरान गांधी गाय या भैंस के दूध को त्यागने की प्रतिज्ञा कर चुके थे | गांधी के लिए "प्रान जाए पर वचन न जाए" जान देकर भी पूरा करने वाला मंत्र था। इसलिए भैंस या गाय के दूध के सेवन का प्रश्न ही नहीं था। तभी कस्तूरबा की सलाह पर डाक्टर दलाल ने गांधी को बकरी का दूध पीने के लिए राजी किया।

सिद्धांत के हिसाब से तो गांधी इसे भी गलत ही मानते थे लेकिन "सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे" कहावत की तर्ज पर गाँधी ने बकरी का दूध पीने की हामी भर दी।

बाद के वर्षों में तो गांधी और उनकी बकरी का चोली दामन जैसा साथ हो गया। गांधी अपने लिए जीवन दायी दूध देने वाली बकरी की बडे मन से सेवा करते थे। गांधी के सहयोगियों ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि बकरी को चारा या पानी पिलाने के लिए गांधी जरूरी बैठक को भी बीच में छोड़ कर उठ जाते थे। ऐसे दृष्टांत गांधी के अनन्य पशु प्रेम को दर्शाते हैं।

६०. रोलेट एक्ट और गाँधी का साहस

गाँधी की तबियत सुधर रही थी और वे अखबार आदि पढने लगे थे | इसी दौरान उनकी नजर रौलेट कमैटी की रिपोर्ट पर पड़ी। इस रिपोर्ट ने गांधी को बैचैन कर दिया। उन्होंने उमर सोबानी, शंकर लाल बैंकर और बल्लभ भाई पटेल से सलाह मशविरा कर तय किया कि यदि सरकार इस कमैटी की रिपोर्ट लागू करेगी तो कुछ लोगों को इसके खिलाफ सत्याग्रह करने के लिए तैयार रहना चाहिए | गांधी ने इस काम को ठीक से अंजाम तक पहुंचाने के लिए एक छोटी सभा का आयोजन किया जिसे सत्याग्रह सभा का नाम दिया।

इन्हीं दिनों मद्रास में राजगोपालाचार्य ने वकालत शूरू की थी और देश सेवा में भी सक्रियता करने लगे थे। मद्रास से मिले निमंत्रण पर गाँधी अस्वस्थता के बावजूद मद्रास आये थे। इसी दौरान यह रिपोर्ट गजट में छपी और कानून बन गया। गांधी के सत्य और अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह आंदोलन से अभी कुछ लोग सहमत नहीं थे। रौलेट कमैटी की सिफारिश लागू होने से गाँधी की चिंता और चिंतन बढ गया। रात में अर्द्ध निद्रा की हालत में उन्हें पूरे देश में हडताल करने की घोषणा का विचार सूझा। सुबह जल्दी उठ कर उन्होंने राजगोपालाचार्य से यह विचार साझा किया कि सब लोग एक दिन का उपवास रखें और कोई काम धंधा न कर हडताल करें। मुस्लिम एक दिन से अधिक उपवास (रोजा) नहीं रखते इसलिए गांधी ने एक दिन के उपवास का सुझाव दिया ताकि इस विरोध में हिंदु मुसलमान सब शामिल हो सकें और हडताल को धर्म युद्ध और आत्म शुद्धि के साथ लागू किया जा सके | राजगोपालाचार्य गांधी के सुझाव से सहमत थे | पहले 30 मार्च 1919 का दिन तय किया गया लेकिन तैयारी के लिए कुछ और समय देने के लिए अंतत: 6 अप्रैल 1919 का दिन हडताल के लिए तय हुआ। कम तैयारी के बावजूद गांव से शहर तक भारत के इतिहास में पहली बार अभूतपूर्व और ऐतिहासिक हडताल हुई। गांधी अपनी आत्म कथा में लिखते हैं- "वह भव्य दृश्य था"।

गाँधी के नेतृत्व में यह देश की एकजुटता की भी ऐतिहासिक शुरूआत थी।

६१. हिंसा को पहाड़ सी भूल मानना

गाँधी के सत्याग्रह आंदोलन में सत्य और अहिंसा दो ऐसे मूल तत्व थे जिन पर आंदोलन की नींव टिकी थी | दक्षिण अफ्रीका के हिंदुस्तानी समुदाय की लड़ाई लडते हुए गांधी को यह विश्वास हो गया था कि ऐसा अहिंसक आंदोलन भी जन सहयोग से सफलतापूर्वक चलाया जा सकता है इसीलिए उन्होंने भारत में खेडा और चंपारन के किसान आंदोलन में अपने इसी अस्त्र का प्रयोग किया था।

खेडा के किसान आंदोलन के दौरान कुछ आंदोलनकारी अहिंसा को पूरी तरह आत्मसात नहीं कर सके थे। दूसरी तरफ कुछ लोग अंग्रेजों की सख्ती के सामने झुक गये थे और उन्होंने लगान जमा कर दिया था। गांधी के लिए अहिंसक आंदोलन में सरकार की सख्ती के सामने झुकना और हिंसा करना दौनो ही बडे दोष थे | सत्याग्रही के लिए गांधी कष्ट से टूटने और हिंसक होने को आंदोलन की कमजोरी मानते थे।

अहमदाबाद और खेडा के आंदोलनों में गाँधी को यह देखकर बहुत निराशा हुई थी कि काफी लोग सत्याग्रह में सत्य और अहिंसा पर अधिक समय तक टिक नहीं पाते। इसीलिए उन्होंने यह स्वीकार किया कि उन्होंने सत्याग्रह शुरू करने के पहले लौगों को ठीक से तैयार नहीं किया था। इसीलिए गांधी ने निश्चय किया कि आगे कोई आंदोलन खडा करने के लिए सबसे पहले वे सत्याग्रहियों का दल तैयार करने की आवश्यकता है |

गांधी यह भी मानते थे कि सत्याग्रही को दूसरे की गज वत (हाथी जैसी बडी) भूल भी रजवत (धूल सी हल्की)माननी चाहिए और अपनी रजवत भूल पहाड जैसी माननी चाहिए | गांधी यही सिद्धांत अपने ऊपर भी लागू करते थे इसीलिए वे अपनी और अपने परिजनों की छोटी सी गलती को भी बढा कर पेश करते थे और दूसरे की बड़ी गलती को भी छोटी मानकर माफ कर दिया करते थे | यही चीजें गांधी को अपने तमाम समकालीन नेताओं से अलग करती थी और यही मूल्य उन्हें आज भी भीड़ से अलग करते हैं |

गाँधी के इस गुण का विनोबा जी भी बहुत आदर करते थे क्योंकि गांधी अपने सहयोगियों की तो बडी गलतियों को भी अक्सर नजरअंदाज कर देते थे लेकिन अपनी छोटी सी गलती को भी बहुत बडा करके सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते थे। अपनी आत्म कथा में भी उन्होंने बहुत बेबाकी के साथ अपनी कमियों और कमजोरियों को जिस साहस के साथ लिखा है वैसा साहस बहुत कम लोग जुटा पाते हैं।

६२. कांग्रेस के विधान और जलियावाला स्मारक के निर्माण में गांधी की भूमिका

कांग्रेस के1901के कलकत्ता अधिवेशन में गाँधी ने देखा था कि इस संस्था के कार्यक्रम में बहुत खामियां थी। कांग्रेस के काम को सुचारु रूप से चलाने के लिए न कोई स्पष्ट विधान था और न कांग्रेस के अधिवेशन में चुस्त दुरुस्त व्यवस्था के लिए समुचित प्रबंध थे। गांधी की आदत कांग्रेस की तत्कालीन कार्यप्रणाली के विपरीत हाथ में लिए हर काम को सलीके से पूरा करने की थी।

कांग्रेस की दशा और दिशा सुधारने का पहला बडा अवसर गांधी को 1919 में कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन के बाद मिला। इस अधिवेशन में सम्राट द्वारा किये गये सुधारों को लेकर कांग्रेस में गहरे मतभेद थे। कांग्रेस का एक दल जिसकी अगुवाई देशबंधु चितरंजन दास और लोकमान्य तिलक करते थे उसका मत था कि इन सुधारों की उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि यह असंतोषजनक हैं | दूसरी तरफ गांधी का मत था कि असंतोषजनक होने के बावजूद इन सुधारों को स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। गांधी देशबंधु जैसे दिग्गजों से मतभेद नहीं चाहते थे इसलिए वे अपना प्रस्ताव लाने से बच रहे थे लेकिन मोतीलाल नेहरू और मदन मोहन मालवीय ने उन्हें प्रस्ताव लाने के लिए कहा | जिन्ना ने भी प्रस्ताव का समर्थन किया। प्रस्ताव पर होने वाले भाषणों में काफी तल्खी आ रही थी, तभी मदन मोहन मालवीय की सूझबूझ से दौनो पक्षों ने सर्व सम्मति से एक सुझाव के साथ प्रस्ताव पारित करा दिया | इस अधिवेशन में गाँधी का एक तरह से एक बड़े नेता के रूप में प्रवेश हुआ था।

गाँधी ने खुद माना है कि दो काम वे अच्छे से कर सकते हैं- एक मुंशी का काम और दूसरा समाज सेवा के लिए चंदा इकट्ठा करने का काम। चंदे के मामले में गाँधी केवल मालवीय जी को अपने से थोड़ा बेहतर मानते हैं जिन्होंने चंदा इकट्ठा कर बनारस हिंदू विश्वविधालय की स्थापना की थी। इस अधिवेशन के बाद गांधी को यह दौनो काम मिल गये थे। जलियावाला कांड का भव्य स्मारक बनाने के लिए चंदा इकट्ठा करने के काम में भी वे ट्रस्टी बने थे और कांग्रेस का विधान बनाने की भी जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गयी थी। इस के पहले गोखले द्वारा बनाये गये चंद नियमों के आधार पर कांग्रेस का काम चल रहा था | गांधी ने लोकमान्य के प्रतिनिधि केलकर जी और देशबंधु के प्रतिनिधि आई बी सेन के साथ मिलकर कांग्रेस का विस्तृत विधान बनाया। इस काम को गाँधी ने अपनी आत्म कथा में भी भी महत्वपूर्ण माना है | गांधी इसे ही कांग्रेस में अपना सच्चा प्रवेश मानते हैं। यह सच भी है। बाद के वर्षों

में कांग्रेस लगभग हर बडे काम में गाँधी जी की तरफ ही देखती थी और गांधी के नेतृत्व में ही चंद संभ्रांत लोगों तक सीमित कांग्रेस आम जनता की आवाज बन गयी थी |

६३. नवजीवन और यंग इंडिया अखबार

प्रसिद्ध शायर अकबर इलाहाबादी ने शायद वह शेर गांधी के लिए ही लिखा था- "जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो"। अहिंसा में अटूट विश्वास रखने वाले गांधी भी अखबार को तोप के मुकाबले अधिक असरदार अहिंसक हथियार मानते थे इसीलिए उन्होंने अफ्रीका में मौका मिलते ही 1904 में इंडियन ओपिनियन साप्ताहिक अखबार की शुरूआत की थी।

1915 में अफ्रीका का काम पूरा होने पर हमेशा के लिए भारत आने के बाद यहां भी गांधी ने मौका मिलते ही नवजीवन और यंग इंडिया अखबारों की शुरुआत की ताकि अपने लेखों के माध्यम से वे जनता से सीधे संवाद कर जनता को जागरूक कर सकें और अपने विचारों और आंदोलनों का प्रचार प्रसार कर सकें | यह दौनो अखबार बांबे क्रानिकल अखबार निकालने वाले उमर सुभानी के थे जो उन्होंने गांधी को सौंप दिये थे। गांधी के हाथ में आते ही इन अखबारों की किस्मत चमक गयी थी। गांधी ऐसे पारस व्यक्ति थे जिनके सानिध्य में जड या चेतन जो भी आया वही सोने सा चमक गया चाहे वह अखबार हो या गाँधी के करीबी जन।

गाँधी ने नवजीवन और यंग इंडिया अखबारों से जनता को सत्याग्रह की शिक्षा दी ताकि सविनय अवज्ञा के दौरान सत्याग्रही अपने शांति प्रिय आंदोलन को ठीक से चला सकें। यंग इंडिया की तुलना में नवजीवन की बिक्री काफी तेजी से बढी थी। एक समय इन अखबारों की बिक्री चालीस हजार तक पहुंच गई थी लेकिन गांधी के जेल जाने पर यह काफी कम हो जाती थी। यह तथ्य प्रमाणित करता है कि गांधी के लेख ही इन अखबारों की जान थे |

गाँधी ने अपने अखबारों में विज्ञापन कभी नहीं लिए | उनका मानना था कि विज्ञापन के अभाव में ही वे अपने विचारों की स्वतंत्रता की रक्षा कर सके। गांधी के इस निर्णय को हम आज की पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य मे देखें तो हमे आसानी से समझ मे आ जाएगा कि सरकार और निजी संस्थानों के विज्ञापन के कारण अखबारों की निष्पक्षता कैसे गिरवी रख दी जाती है और मीडिया ने बढते विज्ञापनों के दबाव में कितनी तेजी से अपनी विश्वसनीयता कम कर दी है।

६४. गाँधी की आत्म कथा और सार्वजनिक जीवन

गाँधी उन लोगों में नहीं थे जो अपने जीवन में किये गये छोटे मोटे कामों और सामान्य से अनुभवों को बढ़ा चढाकर खुद को महानायक के रूप में स्थापित करने और दूसरों को नीचा दिखाने के लिए आत्म कथा लिखते हैं। जिस पुस्तक को हम गांधी की आत्म कथा कहते हैं उसे गांधी "माय एक्सपेरिमैंट विद ट्रूथ " यानि "मेरे सत्य के प्रयोग " नाम देते हैं। क्योंकि इस कृति में गांधी ने अपने सत्य के प्रयोगों का लेखा जोखा प्रस्तुत किया है इसलिए यह कृति गांधी की आत्म कथा सी बन गई है।

गाँधी की आत्म कथा देश और दुनिया की कई भाषाओं में अनुदित होकर करोड़ों पाठकों द्वारा पढी जाने वाली संसार की बेहद लोकप्रिय और सर्वाधिक पढ़ी गई कृतियों में शुमार है। गांधी की आत्म कथा सबसे पहले धारावाहिक के रूप में नवजीवन अखबार में प्रकाशित हुई थी।

बोम्बे सर्वोदय मंडल के संचालक तुलसीदास सौमैया जी बताते हैं कि अकेले मुंबई के गाँधी बुक डिपो से हिंदी ,अंग्रेजी, गुजराती और मराठी भाषाओं में इस किताब की हजारों कापी बिक चुकी हैं। इस किताब को पढकर महाराष्ट्र की जेलों में बंद कई खूंखार अपराधियों का हृदय परिवर्तन हुआ है और ऐसे लोग अहिंसा के रास्ते पर आ गये हैं। लक्ष्मण गोले नाम के एक भाई तो अपराध का मार्ग छोड़कर गांधी के प्रचारक बन गए हैं और देश भर की जेलों में घूम घूम कर और भी अपराधियों की जीवन दिशा बदलने का सार्थक काम कर रहे हैं।

अपनी आत्म कथा में गाँधी ने मुख्यतः अपने जीवन के उन प्रसंगों और प्रयोगों का जिक्र किया है जिनमें उन्होंने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर सफलता पाई है ,चाहे वह उनकी वकालत के मामले हों या अफ्रीका के हिंदुस्तानी समुदाय की लड़ाई हो या भारत में चंपारन और खेडा के गरीब किसानों और अहमदाबाद के मिल मजदूरों के हक की लड़ाई हो।

अपनी आत्म कथा में गाँधी ने मुख्यतः अपने अफ्रीका प्रवास के जीवन और भारत के स्वाधीनता संग्राम के शुरूवात के दिनों की घटनाओं का जिक्र किया है। उनका कहना है कि 1920-21 के बाद का उनका जीवन इतना सार्वजनिक था कि उसे सभी जानते हैं। यह बात गांधी के सहयोगी भी कहते हैं कि साबरमती और वर्धा आश्रम में गांधी का जीवन खुली किताब की तरह था। यहां तक कि उन्होंने अपने ब्रह्मचर्य के प्रयोग भी सार्वजनिक रूप से किये थे जिनसे उनके कुछ सहयोगी भी नाराज थे।

६५. हिंदू मुसलमान एकता के अथक प्रयास

गाँधी ने लगभग सभी धर्मों के अध्ययन से यह मर्म समझ लिया था कि सभी धर्मों में सभी मनुष्यों की समानता और भाईचारे की भावना प्रबल है। भारतीय समुदाय की एकजुटता के महत्व को भी उन्होंने अफ्रीका प्रवास के दौरान ठीक से जान लिया था। अफ्रीका के हिंदुस्तानी समुदाय में भी भारत की तरह सबसे अधिक संख्या हिंदू और मुसलमानों की ही थी। अफ्रीका के सत्याग्रह में जब गांधी से नाराज मुसलमानों के एक दल के आक्रोशित युवा मीर आलम ने गांधी पर हमला किया था तो गांधी ने उस पर मुकदमा नहीं किया था क्योंकि उससे अफ्रीका में रह रहे लोगों की हिंदू मुसलमान एकता खतरे में पड सकती थी।

भारत में अंग्रेज काफी पहले से हिंदू मुसलमान एकता के दुश्मन थे | बंगाल का विभाजन उन्होंने दौनो समुदायों को अलग करने के उद्देश्य से ही किया था। अंग्रेजों की बांटो और राज करो की इसी नीति के कारण कालांतर में धार्मिक आधार पर मुस्लिम लीग और हिदू महासभा का गठन किया गया था। दूसरी तरफ गांधी इन दौनो कौमों को एक रखने की हर संभव कौशिश कर रहे थे।

1918 में जब गांधी को वायसराय ने युद्ध सहायता परिषद की बैठक में आमंत्रित किया था तो गांधी असमंजस में थे क्योंकि इस बैठक में तिलक और अली बंधुओं(शौकत अली और मुहम्मद अली) को नहीं बुलाया था। गांधी चाहते थे कि हिंदू और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने वाले इन लोगों को परिषद में रखना चाहिए। अली बंधु खिलाफत आंदोलन के मुखिया थे | गांधी ने खिलाफत के समर्थन में वायसराय को पत्र भी लिखा था | धार्मिक आस्था का मामला होने के कारण कांग्रेस के काफी सदस्य खलीफा के अधिकार की बहाली के इस आंदोलन का समर्थन करने के पक्ष मे नहीं थे | गांधी हिंदू मुसलमान एकता के लिए मुसलमानों के इस आंदोलन का समर्थन कर रहे थे क्योंकि वे मानते थे कि इन दौनो कौम की एकता देश के उज्जवल भविष्य के लिए बेहद जरूरी है।

आजादी से कुछ समय पहले तक भी गांधी जीजान से इस प्रयास में लगे रहे कि धर्म के आधार पर देश का बंटवारा न हो लेकिन नियति को यह मंजूर नहीं था | अंग्रेजों की कुटिलता, मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा की निरंतर बढती कटुता और कुछ नेताओं की राजनैतिक महत्वाकांक्षा के कारण गांधी को इस काम में सफलता नहीं मिली। गांधी के लिए देश का बंटवारा और उसके बाद हुआ खूनखराबा उनके जीवन का सबसे बड़ा आघात था जिससे वे अंतिम समय तक बेहद बेचैन रहे |

६६. छूआछूत का प्रबल विरोध

गाँधी को हिंदू धर्म की जिस परंपरा से भयंकर विरक्ति थी वह अस्पर्श्यता थी | भारतीय जनमानस में गहरे व्यापत छूआछूत को गाँधी अपने धर्म की सबसे बड़ी विकृति मानते थे | गांधी ने बचपन से अपने घर में भी इस गलत परंपरा को देखा था। गांधी अपने हम उम्र अछूत साथी के साथ अकसर खेलते थे लेकिन उनकी माँ को यह पसंद नहीं था और उस बालक के साथ खेलने के बाद गांधी की माँ उन्हें पुनः शुद्ध करने के लिए स्नान कराती थी | इस घटना से गाँधी को बहुत दुःख होता था इसीलिए अफ्रीका प्रवास के दौरान स्थापित किये आश्रमो में गाँधी ने हर धर्म और जाति के लोगों को एक साथ रखा था ताकि अपने देश की इस गलत परंपरा को यहां तोड़ सकें।

भारत लौटने पर गाँधी को छूआछूत का विरोध करने पर काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा लेकिन वे इस मामले में कोई समझौता करने को तैयार नहीं हुए। भारत में गाँधी ने अपना पहला आश्रम अपने परिजनों और अफ्रीका के सहयोगियों के लिए शुरू किया था। आश्रम के प्रारंभिक दिनों में ही छूआछूत को लेकर एक बडा संकट हुआ। आश्रम में गाँधी ने एक दलित परिवार को भी रख लिया था जो गांधी के परिजनों और स्वर्ण दान दाताओं को पसंद नहीं था। हालत यहां तक बिगड गये कि आश्रम के लोगों के लिए कूए से पानी लेना मुश्किल हो गया और यह खबर अहमदाबाद में फैलने से दान दाताओ ने भी दान देना बंद कर दिया।

चौतरफा दबाव और आश्रम की अर्थ व्यवस्था चरमराने पर भी गांधी इस जिद पर अडे रहे कि चाहे आश्रम के सब निवासी छोडकर चले जाएँ या एक भी पैसा दान न मिले लेकिन दूदाभाई, दानी बहन और उनकी बच्ची लक्ष्मी के इस अंत्यज परिवार को आश्रम में ही रखा जाएगा और उनकी रसोई भी अलग नहीं होगी। गांधी ने अपने साथियों से यहां तक कह दिया था कि चाहे हमे आश्रम छोड़कर अंत्यजों की बस्ती में जाना पडे लेकिन इस परिवार को नहीं छोडेंगे। बाद मे जब गांधी और कस्तूरबा ने हरिजन बच्ची लक्ष्मी को गोद लिया तो इस बात से नाराज होकर गांधी की विधवा बहन जो आश्रम में रहती थी उन्होंने आश्रम छोड दिया था। गांधी ने अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए बहन की नाराजगी को भी नजरअंदाज कर दिया था लेकिन लक्ष्मी का त्याग नहीं किया।

जब अंत्यज परिवार को आश्रम में रखने पर गाँधी के आश्रम से लगभग सभी दानदाताओं ने किनारा कर लिया था ऐसे आडे वक्त में अहमदाबाद के एक व्यापारी ने खुद आगे बढ़कर आश्रम को एकमुश्त लगभग एक साल तक के लिए काफी रकम दे दी और आश्रम आर्थिक तंगी से बंद होने से बच गया।

इसके बाद तो धीरे धीरे बहुत से लोग गांधी के छूआछूत विरोध से सहमत होते गए और गांधी का छूआछूत विरोधी आंदोलन गति पकड़ गया। कालांतर में साबरमती और वर्धा आश्रम में कभी किसी से छूआछूत नहीं बरती गई थी और गांधी और उनके सहयोगियों ने बिहार और दक्षिण भारत के कई मंदिरों में दलितों के प्रवेश के लिए कई सफल आंदोलन चलाए।

यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि दलित जातियों के उत्थान के लिए इतना कष्ट सहने वाले महात्मा गाँधी को दलित राजनीति के कारण कुछ स्वार्थी लोग दलित विरोधी कहने में भी संकोच नहीं करते |

६७. साबरमती आश्रम की शुरूआत

अफ्रीका के फिनिक्स और टाल्सटाय आश्रमों की स्थापना और कुशल संचालन के बाद गांधी को नया आश्रम स्थापित करने के लिए अच्छा खासा अनुभव हो गया था। अफ्रीका के काम निबटाकर गांधी जब भारत लौटे तो उन्होंने अपने अफ्रीका के साथियों को अगली व्यवस्था होने तक टैगोर के शांति निकेतन में भेज दिया था। गांधी कुछ समय राजकोट में बिताने के बाद खुद भी शांति निकेतन आए थे।

टैगोर और उनके शांति निकेतन से गाँधी को बहुत लगाव था लेकिन टैगोर और शांति निकेतन के अभिजात्य तौर तरीकों से गाँधी के काफी मतभेद भी थे। गांधी नौकरों से चाकरी कराने के विरोधी थे और अपने काम खुद करने के पक्षधर थे। शांति निकेतन में प्रवास के दौरान गांधी ने वहां भी अपनी सादगी और अपने काम खुद करने की आदत से छात्रों को प्रभावित कर दिया | वे अपनी रसोई खुद बनाने लगे। गांधी के इस प्रभाव से टैगोर भी चमत्कृत हुए थे।

गाँधी गुजरात में भी कोई ऐसी ही जगह खोज रहे थे जहां शहर के बाहर अपने परिजनों और सहयोगियों के साथ रहकर सादगी और आत्म निर्भरता के प्रयोगों के साथ समाज सेवा के काम किये जा सकें | साबरमती के तट पर गाँधी को जो जगह मिली वह दूधेश्वर शमसान घाट और सैंट्रल जेल के पास थी जिसमें कांटो वाले बबूल के जंगल थे | बबूल के कांटो के अलावा यहां सांपो और पास के गांव के चोरी में निपुण एक बदनाम जाति का भी आतंक था। चुनौतियों से दो दो हाथ करने में गाँधी को मानो जीवन का असली आनंद मिलता था। गांधी ने इस डरावने बीहड जंगल को ही चुनकर साबरमती के मंगल मे तब्दील किया था और अपने चालीस साथियों को निर्भयता का पाठ पढ़ाया था। बचपन में हम लोगों ने अलीबाबा और चालीस चोर कहानी पढी थी | साबरमती आश्रम के निर्माण की कहानी गांधी और उनके चालीस स्वयंसेवकों की कहानी है।

आश्रम के शुरूआत में तंबू और छप्पर में रसोई से काम चलाया जाता था | बाद में बा और बापू के लिए "हृदय कुंज" का निर्माण हुआ जो कालांतर में देश का हृदय कुंज बन गया। बाकी सहयोगियों के लिए भी धीरे धीरे सादे घर बनाने का काम हुआ।

आश्रमवासियों को अनुशासित जीवन जीना था। सुबह चार बजे सबको जगाने के लिए घंटी बजती थी और रात के नौ बजे सोने की घंटी बजती थी। सुबह शाम दो बार प्रार्थना की जाती थी जिसमें गीता का पाठ प्रमुख था।

गाँधी के अफ्रीका प्रवास और भारत वापसी की घटनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण करने पर यह सहज ही आभास होता है कि भारत लौटने पर गाँधी अपने अफ्रीका के अनुभवों को ही कुछ सुधार के साथ भारत में दोहरा रहे थे | साबरमती आश्रम इस नई यात्रा का पहला बडा पडाव था जो आज गांधी को चाहने वालों के लिए एक बडे तीर्थ स्थल की तरह है |

६८. जलियांवाला बाग कांड और गांधी

पंजाब के सिक्ख समुदाय के पवित्र शहर अमृतसर के जलियांवाला बाग में अंग्रेजों की क्रूरता के वीभत्स निशान आज लगभग सौ साल बाद भी जस के तस अंकित हैं। भारत में अंग्रेजी शासन की ऐसी क्रूरता संभवतः कहीं और नहीं हुई। 13 अप्रैल 1919 का दिन बैशाखी त्यौहार का पंजाबी समुदाय की खुशियों का दिन था। उस दिन अमृतसर के पवित्र स्वर्ण मंदिर से थोड़ा दूर जलियांवाला बाग में एक शांतिपूर्ण सभा आयोजित की गई थी जिसमें छह हजार लोगों की भीड़ जुटी थी। इस बाग में आने और जाने का इकलौता रास्ता एक संकरी गली है और यह बाग चारों तरफ से ऊंची दीवारों से घिरा है। सभा में कुछ ही भाषण हुए थे कि बिना किसी चेतावनी के जनरल डायर ने भीड़ पर मशीन गन से गोली बरसाने का आदेश दे दिया। गली के द्वार से गोलियाँ चलने से बाहर निकलने का रास्ता बंद हो गया था। लोगों में भगदड मच गई थी। हजारों लोग गोली लगने और कुचलने से मर गये और कई हजार बुरी तरह घायल हुए।

गाँधी जैसे अहिंसा के पुजारी के लिए इस तरह की बर्बर हिंसा अकल्पनीय और असहनीय थी | वे यथा शीघ्र पंजाब जाना चाहते थे लेकिन पंजाब का गवर्नर अडयार गांधी का कट्टर विरोधी था | उसका मानना था कि गांधी यहां आये तो जबरदस्त अशांति होगी क्योंकि वह गांधी को ही फसाद की जड मानता था। उन दिनों अधिकांश पंजाबी नेता जेलों में बंद थे। वहां पहुंचने वाले बाहरी नेताओं में मदनमोहन मालवीय और दीनबंधु एंड्रयूज प्रमुख थे। दीनबंधु के पत्रों से गाँधी को पंजाब के इस जघन्य कांड की जानकारी मिली तो गांधी बेहद विचलित हो गये | वायसराय की अनुमति के बाद अक्टूबर 1919 में ही गांधी अमृतसर आ सके | भारत के नेताओं ने इस कांड की जांच के लिए बनी हंटर समिति की जांच का बहिष्कार किया था। गांधी ने पंजाब के गांव गांव घूमकर विस्तृत जांच रिपोर्ट बनाई थी। इस रिपोर्ट के बाद इंग्लैंड की संसद में डायर पर केस चला था और उस हत्यारे को सेवा से बर्खास्त किया गया था। टैगोर ने भी हिंसा की इस जघन्य घटना के विरोध में सर की उपाधि वापस कर दी थी। गाँधी ने बाद में जलियांवाला बाग का स्मारक बनाने के लिए चंदा इकट्ठा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस जघन्य हत्या कांड ने गांधी की अंग्रेजी शासन के प्रति आस्था भी लगभग खत्म कर दी थी |

६९. खादी के लिए चरखे की तलाश

खादी गांधी के लिए भारत की आजादी के आंदोलन का सबसे बड़ा रचनात्मक कार्यक्रम था। भारत के गांव देहात के लिए गांधी खादी को कई बडी समस्याओं का समाधान मानते थे। गांधी ने देखा था कि भारत के सात लाख गांव के अधिकांश निवासी अर्धनग्न अवस्था में रहते हैं और जरूरत भर के कपडों के अभाव में महिलाओं के लिए तो घर से बाहर निकलना भी मुश्किल है। दूसरी तरफ गांव के अधिकांश लोगों के पास काफी खाली समय है जिसका उपयोग वे अपने परिवार के लिए सूत कातकर खादी का कपड़ा बनाने में कर सकते हैं। ऐसा करने से खासतौर पर बहनों को रोजगार भी मिलेगा और कपड़ों के मामले में गांव और पूरा देश आत्म निर्भर हो सकते हैं।

गाँधी कांग्रेस के स्वयं सेवकों को भी खादी के रचनात्मक कार्यक्रम में शामिल करना चाहते थे ताकि वे आजादी के लिए लोगों को जागरूक भी कर सकें और खाली समय में खादी के प्रचार प्रसार का रचनात्मक कार्यक्रम चला सकें।

गाँधी को मालूम था कि प्राचीन काल में भारत में घर घर चरखा और खादी का काम किया जाता था लेकिन अंग्रेजी शासन के दौरान विदेशी मिलों के कपड़े ने इस स्वदेशी उधोग को समाप्त कर दिया था। 1915 में भारत आने पर गाँधी ने चरखे की खोज शुरू कर दी थी। 1917 में भरूच में गाँधी की मुलाकात गंगा बहन से हुई थी। गंगा बहन ने ही बीजापुर से गाँधी को चरखा खोजकर दिया था। गांधी केवल चरखे की खोज पर ही नहीं रूके | बम्बई प्रवास में मनि भवन में रहते हुए वे कपास से पूनी और सूत बनाने की कला भी जानने के लिए उत्सुक थे ताकि खादी बनाने के लिए मिलों के सहारे न रहना पडे और गांव के किसान अपने खेतों की कपास से खादी के कपडे बनाकर वस्त्र के लिए आत्म निर्भर बन सकें।

गाँधी अपने इस प्रयास में सफल भी हुए। कालांतर में एक तरफ खादी से भारतीय जनता में कपड़े का स्वावलंबन हुआ और दूसरी तरफ इंग्लैंड की कपड़ा मिलों की बिक्री लगातार कम होने से हालत पतली हो गई। बाद में 21 अगस्त 1924 के यंग इंडिया में गाँधी ने "खादी क्यों" लेख भी लिखा था। खादी के बारे में गाँधी का आग्रह इतना अधिक था कि कालांतर में खादी कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की पहचान बन गई।

७०. हडताल में हिंसा से व्यथित गांधी और अहिंसा के प्रयास

रौलट एक्ट के विरोध में गाँधी के आव्हान पर बेहद सफल देश व्यापी हडताल के बाद अंग्रेजी शासन गांधी से बेहद चौकन्ना हो गया था और उनकी हर गतिविधि पर नजर रखी जाने लगी थी। पहले हडताल 30 मार्च 1919 को होनी थी इसलिए दिल्ली में स्वामी श्रद्धानंद और हकीम अजमल खान ने जामा मस्जिद से एक बडी सभा को संबोधित किया था। इस जुलूस पर गोलीबारी की गई थी। इसी तरह पंजाब में भी सैफुददीन किचलू और डाक्टर सत्यपाल आदि के हिंदु मुस्लिम एकता प्रयासों से अंग्रेजी शासन परेशान था। इस दौरान गांधी दक्षिण भारत के दौरे से लौटकर बम्बई आ गये थे और वहां उन्होंने 6 अप्रैल को चौपाटी की रेत पर सभा आयोजित की थी जिसमें गांधी और सरोजनी नायडु के ओजस्वी भाषण हुए थे | इस सभा में अंग्रेजों द्वारा प्रतिबंधित हिंद स्वराज और सर्वोदय पुस्तकों की दस हजार प्रतियाँ बिकी थी।

7अप्रैल को गाँधी अपने सचिव महादेव देसाई के साथ बम्बई से दिल्ली के लिए रेल से निकले थे लेकिन दिल्ली पहुंचने से पहले ही गांधी को पलवल में रेल रोककर उतार लिया गया था और उन्हें मालगाड़ी में बिठाकर बम्बई लाया गया था। बम्बई में गाँधी पुलिस कमिश्नर के दफ्तर में आए तो उनके साथ भारी जन सैलाब था | पुलिस कमिश्नर ने गांधी पर शांति भंग कर अशांति फैलाने का आरोप लगाया था जबकि गांधी ने हर पल लोगों से शांति बरकरार रखने की अपील की थी। इस दौरान काफी अफवाहें भी फैल गई थी। अहमदाबाद में इस अफवाह से कि गांधी और अनुसुइया बहन को गिरफ्तार कर लिया गया है मजदूरों ने हिंसक प्रदर्शन किया और एक सार्जेंट की हत्या कर दी | बीरमगाम में भी एक सरकारी अफसर की हत्या कर दी गई थी और नडियाड में हिंसा पर उतारू भीड़ ने रेल की पटरी उखाड़ दी थी।

गाँधी ने अहमदाबाद पहुंच कर पुलिस कमिश्नर से माफी माँगी और मजदूरों को अपना गुनाह कबूल करने की सलाह दी। गांधी के अनुरोध पर शांति तो हो गई लेकिन आंदोलन बंद करना पडा। गांधी ने जनता को समझदार किये बगैर आंदोलन करना अपनी बडी भूल माना और स्वीकार किया कि देश की जनता अभी अहिंसक आंदोलन के लिए ठीक से तैयार नहीं है। अभी जनता को अहिंसक आंदोलन के लिए ठीक से तैयार करने की आवश्यकता है।

७१. असहयोग आंदोलन

गांधी के अफ्रीका से भारत आने के पांच साल भी नहीं हुए थे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कमान पूरी तरह गांधी के हाथ में आ गयी थी। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक कहीं भी किसी बडे आंदोलन की जरूरत हो हर तरफ गांधी के नेतृत्व की बात उठती थी। कहने के लिए पंजाब में लाला लाजपत राय, बम्बई में लोकमान्य तिलक, कलकत्ता में देशबंधु ,मद्रास में राजाजी और इलाहाबाद में मोतीलाल नेहरू आदि बहुत से नेता सक्रिय थे लेकिन खेडा से लेकर चंपारन तक के आंदोलन में जैसी सफलता गांधी को मिली थी वैसी 1885 में कांग्रेस के बनने से 1915 में गांधी के आने तक कभी नहीं मिली थी।

गांधी के आने का सबसे बडा लाभ कांग्रेस को यह हुआ था कि गांधी की वजह से आम भारतीय कांग्रेस से गहरे जुडने लगे थे | यही कारण था कि गांधी के आव्हान पर 1920 में देशव्यापी असहयोग आंदोलन की शुरुआत हुई थी जिसने पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ कर अंग्रेजी शासन को ऐसी ऐतिहासिक चुनौती दी थी जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी।

कांग्रेस के 1920 के नागपुर अधिवेशन में अहिंसक मार्ग से स्वराज प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया था। इसके बाद पूरे देश में असहयोग आंदोलन की जबरदस्त लहर चल पडी थी।

इसी दौरान 1 अगस्त 1920 को तिलक की मृत्यु हो गई थी | बम्बई की चौपाटी पर उनका अदभुत दाह संस्कार हुआ था जिसमें अपने प्रिय नेता को अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए बेतहासा भीड़ जुटी थी। "स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है " नारा देने वाले तिलक के काम को आगे बढ़ाने के लिए गांधी ने स्वराज फंड में एक साल के अंदर एक करोड़ की बडी दान राशि जुटाने का लक्ष्य रखा था। कठिन दिखाई देता यह लक्ष्य भी गाँधी और उनके साथियों के सहयोग से समय रहते पूरा हो गया था। कलकत्ता से 31 जुलाई 1921 को तार से देशबंधु ने सूचित किया था कि बंगाल से 15 लाख मिलने से लक्ष्य से अधिक राशि एकत्र हो गई है। गांधी की लोकप्रियता का यही आलम था कि पारस की तरह वह जिस काम में हाथ डालते वह तदनुरूप पूरा हो जाता था।

असहयोग आंदोलन में नेता और जनता दिल खोल कर समर्थन दे रहे थे। नेताओं में त्याग और सादगी की होड़ लगी थी मानो इन दो मूल्यों में सब एक दूसरे से आगे निकलने की कौशिश कर रहे हैं। देशबंधु चितरंजन दास ने वकालत के साथ कोठी और अन्य संपत्ति का त्याग कर दिया था | उनकी पत्नी वासंती देवी ने मिट्टी के बर्तन में भात पकाया था। देश भ्रमन के दौरान विशेष रूप से ग्रामीण देशवासियों की भयंकर गरीबी का साक्षात्कार होने पर 21 सितम्बर 1921 में मद्रास की सभा में गांधी ने ऊपर का वस्त्र

त्याग केवल घुटने तक की आधी धोती और चप्पल पहन स्वैच्छिक गरीबी अपनाकर सबको चौंका दिया था। इस दिन के बाद गांधी आजीवन एक गरीब देहाती किसान और मजदूर की वेशभूषा ही पहनते रहे। यहां तक कि जब उन्हे गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस का नेतृत्व करने के लिए इंग्लैंड जाना पडा तब भी उन्होंने अपने लिबास में कोई परिवर्तन नहीं किया।

इस दौरान बिहार में चंपारन आंदोलन में अग्रनी भूमिका निभाने वाले राजेन्द्र प्रसाद और बृजकिशोर बाबू ने भी जमीदारी छोड दी। बृजकिशोर बाबू की पुत्री प्रभावती को ,जिनकी शादी बाद में जयप्रकाश नारायण से हुई , गांधी और कस्तूरबा ने अपना लिया।

स्वदेशी शिक्षा के विकास के लिए देश मे पांच विधापीठ अहमदाबाद, बनारस, पटना ,पूना और दिल्ली (जामिया मिलिया) में स्थापित की गई |

त्रिलोकी सिंह आदि विद्वानों का मानना है कि यदि गांधी के असहयोग आंदोलन में हिंसा के कारण बीच में व्यवधान नहीं हुआ होता तो देश 1923 में ही आजाद हो सकता था और उस समय देशबंधु पहले प्रधान मंत्री बनते। नियति को शायद आजादी के लिए भारतीय जनता को काफी इंतजार कराना था इसलिए असहयोग आंदोलन को अचानक बीच में ही रोकना पडा |

७२. चौरा चौरी कांड और असहयोग आंदोलन का अंत

असहयोग आंदोलन पूरे देश में एक नया और अलौकिक उत्साह भर रहा था। दिसम्बर 1921 में कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन मे आंदोलन की बागडोर पूरी तरह से गाँधी को सौंप दी थी। इस अधिवेशन में सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कांग्रेसी सादगी को भी दरकिनार करते हुए भव्य तैयारी की थी। अंग्रेजी शासक कांग्रेस की इस तैयारी से घबरा गए थे और उन्होने कांग्रेस के अध्यक्ष देशबंधु को रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया था | उनकी अनुपस्थिति में हकीम अजमल खान को अध्यक्ष बनाया गया था और आंदोलन की कमान गांधी के हाथ में आ गयी थी।

सब कुछ ठीक चल रहा था तभी चौरा चौरी कांड ने ऐतिहासिक अहिंसक असहयोग आंदोलन का पांसा पलट दिया।

एक शांतिपूर्ण जुलूस के कुछ लोगों के साथ चौरा चौरी थाने के पुलिस कर्मियों की बहस हो गई थी और पुलिस की पिटाई से एक सत्याग्रही की मृत्यु हो गई थी | उसके बाद भारी भीड़ अचानक हिंसक हो गई और उसने थाने को चारों तरफ से घेर कर आग के हवाले कर दिया। इस घटना में थाने के अंदर शरन लिए 20 पुलिस कांस्टेबल और एक उप निरीक्षक जिंदा जल गये। गांधी के पुत्र देवदास ने तार से गाँधी को यह सूचना दी। अहिंसा के पुजारी गांधी के लिए उनके आंदोलन में ऐसी वीभत्स हिंसा असहनीय थी। उन्होंने 5 फरवरी 1922 को यह दुखद समाचार मिलते ही घटना की जिम्मेदारी खुद पर लेकर असहयोग आंदोलन की तुरंत प्रभाव से समाप्ति की घोषणा कर दी और प्रायश्चित के लिए पांच दिन का उपवास रखा।

10 मार्च 1922 को साबरमती आश्रम से गाँधी को गिरफ्तार कर लिया गया और 18 मार्च 1922 को उन्हें 6 साल जेल की सजा सुनाई गई। गांधी की यह अब तक की सबसे लंबी सजा थी। गाँधी के लिए आंदोलन में हिंसा का यह दूसरा और सबसे बड़ा झटका था। उन्होंने जेल में रहते हुए इस बात पर काफी चिंतन मनन और लेखन भी किया। गांधी मानते थे कि अभी भी भारत की जनता सत्याग्रह के अहिंसक अस्त्र का सही इस्तेमाल नहीं सीख पाई है इसीलिए उन्होंने भारत में आगामी सालों में किसी बडे आंदोलन की शुरुआत नहीं की | गांधी मानते थे कि अभी रचनात्मक कार्यक्रम के माध्यम से जनता को अहिंसक आंदोलन के लिए ठीक से तैयार करने की आवश्यकता है। इसीलिए 1924 मे जेल से रिहा होने पर गाँधी ने रचनात्मक कार्यक्रम पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया |

७३. गाँधी का मुकदमा, जेल और रिहाई

गाँधी बैरिसटर होने के नाते अपने मुकदमों की पैरवी खुद ही करते थे । असहयोग आंदोलन में हुई अप्रत्याशित हिंसा की नैतिक जिम्मेदारी गांधी सार्वजनिक रूप से ले चुके थे । गांधी ने जज के सामने भी उसी बेलौस अंदाज मे अपना गुनाह कबूल किया जो उनके दुश्मनों को भी उनका मुरीद बना देता है । गांधी ने कहा कि क्रूर सल्तनत की गुलामी ईश्वर और मानव दौनो की गरिमा के खिलाफ है इसीलिए हमने अहिंसक आंदोलन किया था लेकिन दुर्भाग्य से हमारे लोग भी अहिंसक नहीं रह सके इसलिए मैं अपना गुनाह कबूल करता हूं । गांधी की इस साफगोई से जज ब्रूमफील्ड भी दुखी एवं अभिभूत थे | उन्होंने गांधी के सम्मान में खडे होकर उन्हें छह साल की सजा सुनाई | न्याय के इतिहास में ऐसे मार्मिक उदाहरण बहुत कम होंगे जहां कैदी इतना शालीन होता है |

गाँधी को पहले साबरमती जेल के प्राकृतिक परिवेश में रखा गया था लेकिन बाद में उन्हें पूना के पास यरवदा जेल में स्थानांतरित कर दिया गया | गांधी जेल जीवन के लिए अफ्रीका में ही अभ्यस्त हो गये थे । यरवदा जेल में भी गांधी अधिकांश समय पठन पाठन और चिंतन मनन में व्यतीत करते थे और आगामी योजनाएँ बनाते थे ।

जेल में गाँधी को एपेंडिक्स के ईलाज की आवश्यकता महसूस हुई | पूने के सासून अस्पताल में डाक्टर मेडोक ने उनका एपैंडिक्स का आपरेशन किया ।

5 फरवरी 1924 को उन्हें अस्पताल से ही बिना किसी शर्त रिहा कर दिया गया | स्वास्थय लाभ के लिए कुछ दिन गांधी जूहू में सिंधिया नैविगेशन के शांति कुमार मोरार जी के बंगले पाम वन में रहे ।

गाँधी के जेल प्रवास के दौरान कांग्रेस के नेताओं में चुनाव में हिस्सा लेने के मुद्दे पर गहरा मतभेद हो गया था । जेल में रहते हुए गांधी चुनाव में हिस्सा न लेने के पक्ष में थे लेकिन उनके लिए कांग्रेस के साथियों की एकता इस मुद्दे से भी जरूरी थी |

७४. गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रम

गाँधी और उनके समकालीन राजनेताओं में संभवतःसबसे बडा फर्क यही था कि जहां अधिकांश नेता केवल राजनीति करते थे वहां गांधी राजनीति को एकांगी नहीं मानते थे। गांधी के लिए कोरी राजनीति दो कोडी की चीज थी इसीलिए गांधी के तमाम आंदोलनों में सबसे अधिक जोर रचनात्मक कार्यक्रम का था। अफ्रीका में भी उन्होंने आंदोलनों में हिस्सा लेने वाले लोगों के परिजनों को आत्म निर्भर बनाने के लिए फिनिकस और टालसटाय आश्रमों में खेती बाड़ी और कुटीर उधोग चलाने के रचनात्मक काम किये थे। इसी तरह के प्रयोग उन्होंने भारत आने पर पहले साबरमती और बाद में वर्धा के आश्रमों में भी किये।

गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रम में शामिल महत्वपूर्ण मुद्दोंमें सबसे अधिक जोर खादी पर था। खादी और चरखा गांधी के लिए भारत के अधिकांश गरीब देहाती किसानों और मजदूरों के लिए आर्थिक आजादी और आत्म निर्भरता का सहज सरल साधन थे | खादी के अलावा गांधी का जोर सामाजिक सद्भाव और समानता पर था | भारतीय समाज में व्यापत छूआछूत की भावना को वे हिंदू धर्म के माथे का बड़ा कलंक मानते थे | अपने आश्रम से लेकर सार्वजनिक जीवन तक उन्होंने आजीवन अंत्यजों के बीच रहकर खुद को उदाहरण के तौर पर पेश कर अदभुत काम किया।

परिश्रम और मेहनत के काम को प्रतिष्ठित करने के लिए गांधी ने खुद झाडू उठाकर पाखाना सफाई का सबसे निचले पायदान पर माना जाने वाला काम किया। गांवो के आलस्य और गंदगी को दूर करना भी गाँधी और उनके साथियों के रचनात्मक कार्यक्रम में प्रमुखता से शामिल था।

गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रम में महिलाओं के लिए बराबर अधिकार भी प्रमुख था। अफ्रीका और भारत में गाँधी ने अपनी पत्नी कसतूरबा को भी सहयोगी की तरह अपने हर आंदोलन में साथ रखा और सरोजनी नायडु ,मीरा बहन और सुशीला नैयर आदि बहुत सी महिलाओं को अपने रचनात्मक कार्यक्रम में शामिल किया।

गाँधी मूलतः आध्यात्मिक सख्शियत थे। उनके रचनात्मक कार्यक्रम में सुबह शाम प्रार्थना शामिल थी जिसमें सभी धर्मों के अच्छे दोहे शामिल थे। गांधी की आध्यात्मिकता में धर्म की उदारता और सब धर्मों के लोगों के बीच समानता और सदभावना के पुल थे।

आजादी के आंदोलन के दौरान और आजादी के बाद गांधी कांग्रेस के सच्चे कार्यकर्ताओं से राजनीति से कहीं अधिक रचनात्मक कार्यक्रम के माध्यम से जनता की सेवा की अपेक्षा रखते थे | यही कारण है

कि आजादी के बाद गांधी ने कांग्रेस भंग करने की सलाह दी थी ताकि उसके कार्यकर्ता देहाती इलाकों में जाकर गरीब जनता को असली आजादी दिलाने का अधूरा काम पूरा कर सकें।

मृत्यु से कुछ दिन पहले गांधी ने एक महत्वपूर्ण साक्षात्कार में कहा था कि भारत के करोड़ों लोगों को अभी केवल राजनीतिक आजादी मिली है | अभी उन्हें सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक (आध्यात्मिक) आजादी नहीं मिली | गांधी का समूचा रचनात्मक कार्यक्रम गरीब अधिसंख्य जनता को यही तीन आजादी दिलाने का कार्यक्रम है |

दुर्भाग्य से गाँधी के समय जो काम बाकी रह गया था वह अभी तक बाकी है इसीलिए जब तब समाज सेवी आजादी के एक और आंदोलन की बात करते हैं। हमारे महानगरों की झुग्गी बस्तियों और दूर दराज के देहाती इलाकों में बहुत सी जगह आज भी आर्थिक ,सामाजिक और आध्यात्मिक आजादी नहीं है | यदि हम गांधी के सपनों का भारत बनाने के लिए कृत संकल्पित हैं तो हमें गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रम को पूरी ईमानदारी से आगे बढाना होगा |

७५. स्वराज दल और कांग्रेस के बीच मध्यस्थता

कांग्रेस का 1922 में संपन्न हुआ गया अधिवेशन काफी हंगामेदार रहा। यह गांधी की अनुपस्थिति में हुआ था शायद इसलिए भी इसमें कांग्रेस के अंदर दो गुट बन गये थे। एक गुट की अगुवाई कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू और महामंत्री देशबंधु की जोडी कर रही थी और दूसरे गुट में सरदार बललभ पटेल ,राजेन्द्र प्रसाद और राजा जी आदि थे जिन्हे गांधी के मत का समर्थक माना जा रहा था। नेहरू और देशबंधु गुट चाहता था कि कांग्रेस आगामी विधान परिषद् चुनाव में हिस्सा ले जिससे अपनी बात सशक्त तरीके से रखी जा सके। गांधी चुनाव में हिस्सा लेने के विरोधी थे इसलिए पटेल गुट चुनाव में हिस्सा लेने का विरोधी था। सहमति नहीं बनी तो नेहरू और देशबंधु के प्रस्ताव पर मतदान हुआ जिसमें उनकी हार हुई। दौनो ने अध्यक्ष और महामंत्री पद से त्याग पत्र देकर कांग्रेस खिलाफत स्वराज दल का गठन किया और मोतीलाल नेहरू उसके अध्यक्ष और देशबंधु महामंत्री बने।

गाँधी को कांग्रेस की इस फूट से बहुत दुख हुआ इसलिए उन्होंने जेल से रिहा होकर दौनो दलों में एकता की कौशिश की। गांधी दो खेमो में बंटे नेताओं की एक दूसरे के विरोध में की जा रही बयानबाजी से बहुत व्यथित थे और दौनो के बीच बढ़ती खाई को जल्द से जल्द पाटना चाहते थे | 1924 मे गांधी ने मोतीलाल नेहरू और देशबंधु के साथ एक संयुक्त बयान जारी किया जिसमें कहा गया कि स्वराजी कांग्रेस के अभिन्न अंग हैं | दिसंबर 1924 के कांग्रेस के अधिवेशन में अध्यक्षता करते हुए गांधी ने इस निर्णय को मंजूरी भी दिला दी | कांग्रेस की कार्यकारिनि में भी कई स्वराजियों को स्थान दिया गया। इस तरह से पहले से ही गरम दल और नरम दल में बंटे राष्ट्रीय आंदोलन में एक और बडे बंटवारे को गाँधी ने अपनी सूझबूझ से रोक दिया था। 1925 में देशबंधु के निधन से स्वराज दल को गहरा आघात लगा। गांधी देशबंधु की बीमारी के समय उनके साथ कुछ दिन दार्जिलिंग भी रहे और उनके निधन के बाद उनकी पत्नी से भी निरंतर संपर्क रखा। गांधी का कांग्रेस के लोगों को प्रेम करने का यह मानवीय गुण ही आजादी के आंदोलन में शरीक विभिन्न विचारों के लोगों को एकजुट रख सका।

1922 से 1927 तक का समय कांग्रेस के लिए काफी निराशा और हताशा का समय था। इस दौरान एक बार तो गांधी को भी कहना पड़ा था कि मैं भी अब केवल प्रार्थना पर ही विश्वास करता हूँ।

७६. हिंदू मुस्लिम हिंसा से आहत गांधी का एकता के लिए उपवास

हिंदू मुस्लिम एकता की जितनी कौशिश भारत की आजादी के आंदोलन में अकेले महात्मा गाँधी ने की उतनी यदि कुछ और बडे नेता भी करते तो शायद अंग्रेज भारत के दो टुकड़े न कर पाते। गांधी अपने अफ्रीका के आंदोलन से जानते थे कि बिना हिंदु मुस्लिम एकता के भारत में कोई भी आंदोलन सफल नहीं होगा क्योकि अंग्रेजी शासन शुरू से "बांटो और राज करो" की अनीति अपना रहा था। 1905 में धर्म के आधार पर बंगाल का विभाजन इसी रणनीति के तहत किया गया था। 1924 में नोर्थ वेस्ट फ्रंटियर के कोहाट शहर में जबरदस्त धार्मिक उन्माद हुआ था जिसमें मुस्लिम बाहुल्य इलाकों में काफी संख्या में हिंदू समुदाय की हत्या हुई थी। दंगों की आग तेजी से देश के दूसरे इलाकों मे भी फैल गई थी।

सितम्बर 1924 में दिल्ली में डाक्टर अंसारी के घर गांधी ने 21दिन का उपवास रखा था। गांधी ने इस उपवास को शांति और आत्म शुद्धि के लिए बताया था। इस दौरान गांधी की सलामती के लिए देश भर में प्रार्थना और नमाज अता की गई थी। इस उपवास के दौरान ही इंदिरा गाँधी गांधी के संपर्क में आई थी। गांधी के उपवास से दौनो समुदाय के नेताओं और जनता में गांधी के प्रति सम्मान तो बढ़ा ही था सांप्रदायिक सदभावना भी बढी थी। फिर भी कुछ सांप्रदायिक नेताओं और उनके कट्टर समर्थक जब तब धार्मिक उन्माद बढाने के कुत्सित काम करते रहते थे। इसी तरह के एक षड्यंत्र में 1926 में स्वामी श्रद्धानंद की बीमारी की अवस्था में हत्या कर दी गई थी। गांधी की अनन्य भक्त मीरा बेन स्वामी जी से हिंदी उर्दु सीखती थी। अब्दुल रशीद नाम का एक कट्टर व्यक्ति उनसे मिलने के लिए आया। उसने स्वामी के सेवक गंगा शरन से पानी मांगा और अचानक स्वामी जी को छूरा घोंपकर उनकी हत्या कर दी। मीरा बेन की मदद से घायल गंगा शरन ने अपराधी को हिम्मत दिखाकर पकड़ लिया।

अंग्रेजों ने अब्दुल रशीद को फाँसी देकर उसकी लाश परिजनों को सौंप दी थी जिन्होंने कट्टर पंथियो के साथ मिलकर उसका शहीद की तरह जनाजा निकाला और जनाजे से लौटते वक्त दिल्ली के दरियागंज में उत्पात मचाया।

इसे हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि हिंदु मुस्लिम एकता के लिए सबसे अधिक प्रयास करने वाले महात्मा गाँधी की हत्या भी 1948 में एक कट्टर हिंदु ने की थी।

७७. आत्म चिंतन का एक वर्ष : 1927

1927 में गांधी ने एक साल साबरमती आश्रम में प्रवास का निश्चय किया था। यह वह समय था जिसे इतिहासकार भारत की आजादी के आंदोलन का निष्क्रिय समय कहते हैं। पिछले करीब तीस साल से गाँधी अफ्रीका और भारत में कई आंदोलनों का सफल नेतृत्व कर चुके थे लेकिन चौरा चौरी की हिंसा ने गांधी की सत्याग्रहियो में आस्था की चूल हिला दी थी। दूसरी तरफ कांग्रेस के नेताओं द्वारा भी मानसिक अहिंसा को आत्म सात नहीं किया गया था जिसके कारण वे एक दूसरे से नफरत करते थे और मौका मिलते ही एक दूसरे पर कीचड़ उछालते थे।

गाँधी खुद को भी आगे की लंबी और कठिन लड़ाई के लिए तैयार करना चाहते थे। इस दौरान गांधी ने "यंग इंडिया" और "नवजीवन" में बहुत लेख लिखे। चरखे के बेहतरीन डिजाइन खोजने के लिए 500 रूपये के ईनाम की योजना बनाई ताकि खादी के रचनात्मक काम को आगे बढ़ाने में मदद मिले।

गाँधी के कई सहयोगी भी अपने अपने क्षेत्रों के गुणी विद्वान थे | विनोबा भावे संस्कृत के पंडित थे तो राजेन्द्र प्रसाद रामचरित मानस के प्रवचक एवं काका कालेलकर नक्षत्र विज्ञान और साहित्य के विशेषज्ञ थे। गांधी ने इस दौरान आत्म चिंतन और अपने गुनी मित्रों से विचार विमर्श भी किया।

इसी दौरान 27 जनवरी 1928 को आश्रम में गांधी के पुत्र रामदास की केवल सवा रूपये खर्च से अत्यंत साधारण शादी हुई। बहुत साधारण मंडप में शादी संपन्न हुई। न बारात आदि का तामझाम हुआ और न मेहमान नवाजी में खर्च | दंपति का सत्कार गांधी ने पुत्र को गीता और पुत्र वधू को आश्रम भजनावली और तकली भेंट कर किया। कस्तूरबा ने पुत्र वधू को गाँधी द्वारा काती लाल सूत की साडी, सिंदूर और कांच की लाल चूड़ियां दी। वधू ने मायके से मिली चार सोने की चूडियां भी आश्रम में दान कर दी जिन्हें बाद में स्वराज फंड में जमा करा दिया। गांधी और उनका परिवार इसी तरह सादगी और त्याग के अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करता था।

इतनी सादगी से संपन्न शादी के बाद सुबह सवेरे नव दंपति के हाथ में आश्रम सफाई के लिए झाड़ू भी दे दी गई।

७८. 1928 के कलकत्ता अधिवेशन में डोमिनियन स्टेटस की समय सीमा की चेतावनी

देश की राजनीति ने 1928 में एक बार फिर से करवट बदली थी जिसमें गांधी की केंद्रीय भूमिका बन गई थी। 1928 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में भारतीयों की स्थिति के बारे में अध्ययन कर वस्तु स्थिति बताने के लिए सर साइमन के नेतृत्व में एक कमीशन भेजा था। कांग्रेस ने इस कमीशन के बहिष्कार की अपील की थी क्योंकि कांग्रेस के नेताओं का मानना था कि इस कमीशन को भी खाना पूर्ति के लिए भेजा गया है ताकि भारतीयों की डोमिनियन स्टेटस[१] की मांग को टाला जा सके।

साइमन कमिशन जहां जहां भी गया उसके विरोध में कांग्रेस ने बडे जुलूस निकाले और "साइमन गो बैक " के नारे लगाकर शांतिपूर्ण ढंग से विरोध प्रदर्शन किया। इलाहाबाद में जवाहर लाल नेहरू ने विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया था जिस पर बर्बरता से लाठी चार्ज हुआ था और सिपाहियों ने निरीह भीड़ को घुडसवारों से कुचला था। जवाहर लाल नेहरू भी घायल हुए थे।

साइमन कमीशन के विरोध में पंजाब सबसे अधिक सुलगा था। लाहौर में जुलूस का नेतृत्व करते वयोवृद्ध और पंजाब के अत्यंत लोकप्रिय नेता लाला लाजपत राय पर पुलिस ने बेरहमी से लाठियां बरसाई थी। इस हमले के कुछ दिन बाद ही उनका देहावसान हो गया था।

इस घटना के विरोध में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की केंद्रीय एसेंबली में बम फेंका था। इन साहसी युवाओं का इरादा बम से किसी को नुकसान पहुंचाना नहीं था लेकिन इन्हे लाहौर षड्यंत्र के मामले में गिरफ्तार कर लिया गया था और जेल में तरह तरह की यातना दी जा रही थी।

कलकत्ता में संपन्न दिसंबर 1928 के कांग्रेस अधिवेशन में इसी परिप्रेक्ष्य में गांधी ने एक बार फिर से एक बडे आंदोलन का मोर्चा संभाला था और यह प्रस्ताव पारित कराया था कि यदि एक साल के अंदर अर्थात 1929 के अंत तक भारत को डोमिनियन स्टेटस का दर्जा नहीं दिया गया तो कांग्रेस पूरी आजादी की मांग करेगी।

१ डोमिनियन स्टेटस का मतलब है ब्रिटिश एंपायर के अधीन एक आटोनोमस देश|

७९. गाँधी की छत्रछाया में सरदार पटेल का बारडोली आंदोलन

गुजरात के बारडोली किसान आंदोलन को सरदार बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में हुआ आंदोलन कहा जाता है। इस आंदोलन को भी गांधी के आशीर्वाद से ही शुरू किया गया था।

1928 में सरकार ने वर्तमान गुजरात की बारडोली तहसील की उर्वर जमीन का लगान अचानक 60 प्रतिशत बढ़ा दिया था। अचानक की गई बेतहासा वृद्धि के विरोध में इलाके के काफी किसान आंदोलन शुरू करने के लिए पटेल के पास आए थे। इसके पहले खेडा किसान आंदोलन का गांधी और पटेल को खटटा मीठा अनुभव था क्योंकि उस आंदोलन में सरकार की सख्तीके सामने कुछ किसान डगमगा गए थे शायद इसीलिए इस बार पटेल ने उनसे ठोक बजाकर पूछा था कि क्या वे मरने और जेल के कष्ट सहन करने के लिए तैयार हैं। किसानों के हां कहने के बाद पटेल ने गांधी से आशीर्वाद लेकर इस आंदोलन का नेतृत्व अपने हाथ में लिया था।

इस आंदोलन में गांधी के पुत्र रामदास ने भी अग्रनी भूमिका निभाई थी और वे भी जेल गए थे। आंदोलन की पहली गिरफ्तारी रविशंकर महाराज की हुई थी जिस पर खुशी का इजहार करते हुए गांधी ने कहा था- श्रेष्ठ ब्राह्मन की गिरफ्तारी से इस आंदोलन का शुभारंभ हुआ है |

सरदार पटेल ने बडे कौशल से लगभग तीन सौ कार्यकर्ताओं के माध्यम से तहसील के 130 गांवों में इस आंदोलन को बडी तेजी से फैलाया था। सरकार ने आंदोलन को विफल करने के लिए पटेल की गिरफ्तारी की योजना बनाई। गांधी को जैसे ही पटेल की गिरफ्तारी की संभावना का तार मिला आंदोलन की कमान संभालने गांधी खुद आ गये | गांधी के आगमन से आंदोलन में नया जोश आ गया। गवर्नर ने समझोते के लिए पटेल को पूना आने का निमंत्रण दिया। गांधी के मार्ग दर्शन और पटेल की सूझबूझ से यह आंदोलन भी सफल रहा। इस आंदोलन में सरदार पटेल की पुत्री मनि बहन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और इस आंदोलन की सफलता ने गांधी की छत्रछाया में उभरे सरदार पटेल को भी कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित किया था।

८०. 1928 के कलकत्ता अधिवेशन में गाँधी की अगुवाई में नेहरू पिता पुत्र का समझौता

दिसम्बर 1928 के कलकत्ता अधिवेशन के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू थे। उन्होंने एक रिपोर्ट तैयार की थी जिसमें डोमिनियन स्टेटस की मांग की गई थी। मोतीलाल नेहरू की रिपोर्ट से कांग्रेस के दो लोकप्रिय युवा नेता जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस संतुष्ट नहीं थे। गांधी ने दौनो पक्षों की बात सुनकर एक बीच का रास्ता निकाला था जिसके अनुसार यह रिपोर्ट सरकार को इस शर्त के साथ सौंपनी थी कि एक साल के अंदर भारत को डोमिनियन स्टेटस का दर्जा दिया जाना चाहिए।

जवाहर लाल नेहरू तो यह मान गये थे लेकिन सुभाष चंद्र बोस इससे भी संतुष्ट नहीं थे उन्होंने इस प्रस्ताव पर मतदान की मांग की थी | उन दिनों कांग्रेस लोकतांत्रिक संस्था की तरह काम करती थी इसलिए सुभाष चंद्र बोस की मांग पर मतदान हुआ जिसमें नेहरू के समर्थन में अधिक मत मिले और यह प्रस्ताव पारित कर दिया गया |

1929 में गांधी का यूरोप की यात्रा का कार्यक्रम था लेकिन देश का माहौल गरमाता देखकर उन्होंने इस यात्रा को रद्द कर दिया और भारत भ्रमन का कार्यक्रम बनाया। 1928 के कांग्रेस अधिवेशन के प्रस्ताव में सरकार को डोमिनियन स्टेटस के केवल एक साल का समय दिया गया था। अधिकांश लोगों को यह उम्मीद नहीं थी कि सरकार कांग्रेस की मांग को इतना जल्दी मान लेगी। सरकार के नहीं मानने की स्थिती में कांग्रेस को युवा नेतृत्व की मांग के अनुसार पूर्ण स्वराज की मांग करनी थी और इसके लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाना था।

गांधी की आदत थी कि वह कोई भी काम पूरी तैयारी के बाद ही करते थे। 1922 के चौरी चौरा कांड के बाद दुबारा वैसा बड़ा आंदोलन खडा करने के लिए वे अहिंसक आंदोलन के लिए जनता को ठीक से तैयार करने की आवश्यकता समझते थे। इसीलिए उन्होंने पूरे देश का भ्रमण और प्रचुर मात्रा में लेखन कर जनता को आगामी आंदोलन के लिए अच्छे से तैयार होने के लिए जगह जगह सभाएं आयोजित की थी |

८१. पूर्ण स्वराज की मांग और गांधी के एक और बडे आंदोलन की तैयारी

1928 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन की एक साल के अंदर डोमिनियन स्टेटस देने की मांग ब्रिटिश सरकार ने नहीं मानी थी इसलिए 1929 के लाहोर अधिवेशन में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में 31 दिसंबर की आधी रात को गाँधी का पूर्ण स्वराज की मांग का प्रस्ताव ध्वनि मत से निर्विरोध पारित हो गया। इसी के साथ कांग्रेस की कमान पुरानी पीढ़ी के मोतीलाल नेहरू से युवा पुत्र जवाहर लाल नेहरू के हाथ में आ गयी थी।

कुछ लोग गांधी की पिता से पुत्र को कांग्रेस की कमान सौंपने को कांग्रेस में वंशवाद परंपरा शुरू कराने में सहायक की भूमिका निभाने के लिए जिम्मेदार ठहराकर आलोचना करते हैं। यह लोग शायद जान बूझकर यह भूल जाते हैं कि पिता से पुत्र को यह विरासत आजकल के निर्लज्ज वंशवाद की तरह नहीं मिली थी | जवाहर लाल नेहरू कांग्रेस में काफी समय से सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। साइमन कमिशन के विरोध में इलाहाबाद में पुलिस की मार खाकर गिरफ्तार भी हुए थे। उन्होंने समाजवाद के वैश्विक सम्मेलन में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया था और वामपंथी रूझान के कारण वे युवा वर्ग में बहुत लोकप्रिय थे। इसलिए जो लोग गांधी पर कांग्रेस में नेहरू परिवार के वंशवाद को बढ़ावा देने के आरोप लगाते हैं वे सही नहीं हैं। गांधी के लिए कोई व्यक्ति या परिवार महत्वपूर्ण नहीं था केवल देश और देशवासी सर्वोपरि थे।

पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित होने की अगली सुबह ही रावी नदी के तट पर बहुत हर्ष और उल्लास से भारतीय ध्वज फहराया गया और तय हुआ कि 26 जनवरी को देश भर में राष्ट्रीय ध्वजारोहन के कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे और लोग अपने घरों में भी स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा लेंगे |

खान अब्दुल गफ्फार खान के दल का कांग्रेस में विलय भी इसी अवसर पर हुआ था | जवाहर लाल नेहरू के आव्हान पर स्वराज दल के मंत्रियों और विधान सभा के सदस्यों ने त्यागपत्र दे दिये थे। अंग्रेजों की गुलामी को देश के लिए अभिशाप बताते हुए आजादी मिलने तक असहयोग आंदोलन की योजना बनाई गयी थी | पूरे देश में एक बार फिर से आजादी के आंदोलन के लिए नये उत्साह की लहर फैल गई थी |

८२. नमक सत्याग्रह और गांधी का ऐतिहासिक दांडी मार्च

31 जनवरी 1930 को गांधी ने इरविन को 11 सूत्री न्यूनतम मांग पत्र दिया था लेकिन इरविन ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उधर फरवरी में साबरमती आश्रम में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में गांधी को यह अधिकार दिया गया था कि वे जैसे चाहें वैसे सविनय अवज्ञा आंदोलन का शुभारंभ कर सकते हैं। गाँधी अपने आंदोलन के हर काम बहुत सोच विचार कर पूरी तैयारी के बाद ही शुरू करते थे। इन कामों में उनकी पैनी नजर ऐसे विषय और समस्या खोजती रहती थी जिनमें आम जनता का हित जुडता था। नमक भी रोज इस्तेमाल होने वाली एक ऐसी चीज थी जिससे हर व्यक्ति प्रभावित होता है। अंग्रेजों के नमक कर कानून बहुत कडे थे जिसके अंतर्गत समुद्र के किनारे रहने वाले लोगों को भी नमक बनाने की आजादी नहीं थी। इसीलिए गांधी ने नमक सत्याग्रह की योजना बनाई थी। गांधी का मानना था कि नमक पर कर लगाना कतई उचित नहीं है और यह कर अत्यंत अमानवीय है।

2 मार्च 1930 को गाँधी ने वायसराय को पत्र लिखकर सूचना दी कि 11 तारीख को आश्रम के कुछ साथियों के साथ मैं नमक कानून तोडूंगा | मैं जानता हूँ कि आप मुझे गिरफ्तार करके मुझे ऐसा करने से रोक सकते हैं लेकिन मुझे उम्मीद है कि मेरे बाद भी हजारों लाखों लोग इस काम को अनुशासित तरीके से करने के लिए तैयार रहेंगे | इस नमक कानून तोड़ने में उनको जो भी सजा दी जाएगी उसे भुगतने के लिए वे सब तैयार रहेंगे। गांधी इस कानून को कानून की किताब में कलंक जैसा कहते थे और अंग्रेजी शासन को भारतीयों को गुलाम बनाने वाला शासन कहने लगे थे जिसने भारतीय संस्कृति की चूलें हिला दी हैं और जिसके कारण हमारा आध्यात्मिक अध:पतन हुआ है।

शुरूआत में गाँधी के इस आंदोलन का महत्व बहुत से लोगों की समझ मे नहीं आया था लेकिन ऊपर से साधारण दिखने वाले इस आंदोलन से जुडने के लिए भी साबरमती आश्रम में काफी लोग आ गये थे। गांधी ने उन्हे इस आंदोलन को अहिंसक तरीके से आगे बढाने के लिए समझाया था और जगह जगह नमक बनाकर यह कानून तोड़ने की हिदायत दी थी। साथ ही लोगों को शराब और विदेशी कपडो की दुकानों के विरोध के लिए भी कहा था। लोगों को चाहिए कि वह कर अदायगी भी न करें और वकालत आदि छोड दें | अहिंसक आंदोलन की ताकत बताते हुए गांधी ने कहा था कि यदि भारत के सात लाख गांवो मे हर गांव से दस लोग भी इस आंदोलन में शरीक होंगे तो ऐसी विशाल जन सेना का कोई तानाशाह भी कुछ नहीं कर सकता। अपनी बात बहुत से लोगों को समझाकर 12 मार्च 1930 को सुबह 6 बजे साबरमती आश्रम से 79 यात्रियों ने गांधी की अगुवाई में दांडी के समुद्र तट पर पहुंचनेके लिए 25 दिन की प्रसिद्ध दांडी यात्रा की शुरुआत की थी |

८३. दांडी मार्च की भव्य सफलता

दांडी मार्च की घोषणा के बाद से ही तरह तरह की अफवाह भी फैलने लगी थी- मसलन यह भी अफवाह थी कि सरकार ने यात्रा की शुरुआत से पहले ही गांधी को गिरफ्तार कर तिलक की तरह बर्मा की मांडले जेल भेजने की तैयारी कर ली है। गांधी की यह यात्रा बहुत शान और शांति के साथ आरंभ हुई थी | गांधी के साथ बहुत से लोग यात्रा करना चाहते थे लेकिन गांधी ने सीमित साथियों के साथ ही यह यात्रा संपन्न की थी | अहमदाबाद के बहुत से मजदूरों को गाँधी ने यह समझाकर वापस किया था कि वे अपनी जगह रहकर ही विभिन्न रचनात्मक कार्य करें और नियत तिथी पर प्रतीक स्वरूप नमक कानून का भंग करें। बहुत बडी संख्या में लोग कुछ दूर यात्रा में शिरकत कर यात्रा का उत्साह बढा रहे थे। रास्ते भर लाखों लोगों की भीड़ जुटी और काफी संख्या में पत्रकार आदि भी इस अद्भुत यात्रा की खबरें जुटाने के लिए साथ चल रहे थे। यात्रा के जनसैलाब का सूरत के लोगों ने भव्य स्वागत किया था।

इस यात्रा के विभिन्न पडावों में भी कई यादगार घटनाएँ घटी थी। गजरो गांव के पड़ाव में गांधी ने देखा कि अछूत मानी जाने वाली जातियों के लोग एक कोने में सिमटे हैं। गांधी ने भी उसी कोने में जाकर भाषण दिया और कहा कि हम भी अछूत हैं। इसी तरह भटगांव के पडाव में गांधी की नजर रात के समय काम में जुटी आदिवासी महिलाओं और युवाओं पर पडी तो उन्हे यह देखकर बहुत बुरा लगा। उन्होंने प्रार्थना में कहा- हम लोग भी गरीबों का शोषण करते हैं। यह बहुत गलत है। हम सबको भाई भाई की तरह रहना चाहिए। बाद की यात्रा में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं हुई।

दांडी यात्रा में गांधी से मिलकर आगे की योजना बनाने के लिए मोतीलाल नेहरू और जवाहर लाल नेहरू भी आये थे। यह तय हुआ था कि बडे नेताओं की गिरफ्तारी के बाद दूसरे लोगों और महिलाओं को आगे आकर आंदोलन जारी रखना है।

6 अप्रैल की पूर्व निर्धारित तिथि पर सुबह प्रार्थना और समुद्र स्नान एवं सूर्य को अर्ध्य देने के बाद गांधी ने पास से नमक उठाकर नमक कानून तोडा। उसके बाद हजारों लोगों ने नमक कानून तोडकर आंदोलन को सफल बनाया। गांधी द्वारा उठाए गए नमक की छोटी सी पुडिया 1600 रूपये में नीलाम हुई थी।

८४. दांडी मार्च से घबराई सरकार का गिरफ्तारी अभियान

दांडी में सार्वजनिक रूप से नमक कानून तोड़ने के बाद गांधी ने लार्ड इरविन को अपने सामान्य व्यवहार से इतर उग्र भाषा में पत्र लिखा था कि अब वे धरासना के सरकारी नमक केंद्र की तरफ कूंच करेंगे। गांधी ने विशेष रूप से पत्रकारों को भी कहा था कि अब दुनिया "शक्ति के विरुद्ध सही" (बैटल आफ राइट अगेंस्ट माइट) का युद्ध देखेगी।

गाँधी की इस चेतावनी के बाद सरकार का दमन चक्र शुरू हुआ और 5 मई 1930 की रात गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें स्पेशल गाडी से पूना की यरवदा जेल लाया गया। गांधी के ऊपर देश द्रोह का आरोप लगाया गया था।

गाँधी के पुत्र मनिलाल और सरोजनी नायडु ने गांधी की योजना के अनुसार धरासना नमक केंद्र की तरफ कूंच का कार्यक्रम जारी रखा। इन लोगों पर लाठीचार्ज किया गया जिसमें मनिलाल भी घायल हुए थे। गांधी के दूसरे पुत्र रामदास को भी गिरफ्तार कर लिया गया। जब उन्होंने जेलर के सम्मान में जेल की टोपी नही उतारी तो उन्हे कडी सजा सुनाई गई और उनके घर की जप्ती में घर का सभी सामान जप्त कर लिया गया।

देश के तमाम बडे नेताओं की गिरफ्तारी हो रही थी | कांग्रेस के अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू और उनके पिता मोतीलाल नेहरू भी गिरफ्तार हुए। कांग्रेस की वयोवृद्ध पीढ़ी से लेकर युवाओं तक चार पीढ़ियों के नेताओं की पूरे देश में बडे पैमाने पर गिरफ्तारी हुई। फिर भी महिलाओं और बाहर रहे नेताओं ने शराबबंदी आदि के रचनात्मक कार्यक्रम को जारी रखा। लोगों के अंदर एक बार फिर से जोश का ज्वार उमड पडा और बडी संख्या में लोग अपना सब कुछ त्याग कर देश सेवा के काम में जुट गए।

सरकार के दमन चक्र के बाद भी लोगों के उत्साह में कमी नहीं आ रही थी इसलिए सरकार को भी अंततः गांधी के अहिंसक आंदोलन का लोहा मानना पडा और समझौते के लिए तैयार होना पडा।

८५. गाँधी इरविन समझौता

गाँधी के दांडी मार्च को शुरूआत में सरकार ने बहुत हल्के से आंका था | सरकार को यह उम्मीद नहीं थी कि लगभग एक दशक पहले हुए असहयोग आंदोलन के बाद गांधी ने सत्याग्रहियों की एक बडी फौज तैयार कर दी थी। इस आंदोलन को तेजी के साथ फैलता देखकर सरकार ने इसे कांग्रेस के बडे नेताओं की गिरफ्तारी कर कुचलने की कौशिश की थी लेकिन इस दमन के बाद भी आंदोलन खत्म नहीं हुआ था इसलिए वायसराय इरविन को समझौते के लिए मजबूर होना पडा |

समझौते के लिए सरकार की तरफ से तेज बहादुर सप्रू और जयकर गांधी से बात करने यरवदा जेल आए थे लेकिन दौनो पक्षों में बात नहीं बनी थी। गांधी का पत्र लेकर यह दौनो सरकारी प्रतिनिधि नैनी जेल गए थे जहां मोतीलाल नेहरू और जवाहर लाल नेहरू बंद थे। कांग्रेस के बडे नेताओं को एक साथ विचार विमर्श करने देने के प्रयास में मोतीलाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू और सरदार पटेल को यरवदा लाया गया जहां सरोजनी नायडु भी गांधी के साथ मौजूद थी |

इस बीच मोतीलाल नेहरू को बीमारी के कारण रिहा कर दिया गया और उनकी तबियत खराब होने पर जवाहर लाल नेहरू को भी उनसे मिलने के लिए छोड़ दिया | गांधी भी रिहा होकर इलाहाबाद आ गये थे | मोतीलाल नेहरू को बीमारी से बाहर आने की उम्मीद नहीं थी इसलिए उन्होंने गांधी से कहा था कि मैं तो नहीं देख पाऊंगा लेकिन आपको स्वराज जल्द मिलेगा।

यह सच भी निकला। कुछ दिन बाद मोतीलाल नेहरू चल बसे।

गाँधी दिल्ली में डाक्टर अंसारी के घर ठहरे थे | इस बीच उनकी इरविन के साथ कई मुलाकात हुई और अंत में दौनो पक्षों को मान्य समझौता हुआ।

गांधी और इरविन के मध्य हुआ यह समझौता दौनो पक्षों के बीच फौरी शांति का आधार तो बना था लेकिन काफी लोग इससे सहमत नहीं थे।

गाँधी इरविन समझौते के प्रमुख सूत्र निम्न थे-

1 सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया जाएगा और

2 किसान लगान जमा कराएंगे।

८६. लंदन के गोल मेज सम्मेलन में गाँधी की शिरकत

वायसराय इरविन का गाँधी से अच्छा तालमेल था लेकिन इरविन के बाद विलिंगटन नये वायसराय बने जिनमें वैचारिक कटटरता थी। इस दौरान भारत के भविष्य निर्धारण के लिए लंदन में गोल मेज सम्मेलन के लिए भारत से कई गुटों के प्रतिनिधियों ने शिरकत की थी। गांधी कांग्रेस का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उनके साथ महिलाओं की प्रतिनिधि के रूप में सरोजनी नायडु भी थी। गांधी के सहयोगियों में महादेव देसाई, प्यारे लाल, देवदास और मीरा बेन आदि भी थे | गांधी के साथ सब लोगों ने जहाज के साधारण डैक पर यात्रा की थी।

इस सम्मेलन के पहले की इंग्लैंड यात्राओं में गांधी पश्चिमी रंग ढंग में गये थे लेकिन इस बार उनकी वैसी ही सादगी थी जैसी उन्होंने भारत में रहते हुए अपना ली थी। लंदन प्रवास के दौरान भी वे किसी महंगे होटल की बजाय गरीब बस्ती में रूके थे। यहां तक कि उन्होंने शाही आयोजन के दौरान भी अपनी वही साधारण धोती पहनी थी जो इंग्लैंड जैसे यूरोपीय देश में कौतूहल का विषय थी।

लंदन का गोल मेज सम्मेलन सफल नहीं रहा था। गांधी की आजादी की मांग का अंबेडकर और आगा खान आदि ने समर्थन नहीं किया था। अंग्रेजों के लिए भी यही उचित था कि भारत के लोगों को सांप्रदायिकता और जातिवाद के नाम पर विभाजित कर फूट डालकर राज करने की पुरानी नीती को और अधिक पुख्ता करें।

इस यात्रा के दौरान गांधी लंकाशायर भी गये थे। लंकाशायर की काफी कपडा मिल बंद होने से वहां के बेरोजगार मजदूरों मे काफी गुस्सा था | वहां जाने पर गाँधी को खतरा भी था | आक्रोशित मजदूर हिंसक हो सकते थे लेकिन गांधी खतरों से कहां डरते थे। उन्होंने मजदूरों के परिवारों से सहानुभूति जताई और उन्हें भारत की भयंकर गरीबी के बारे में बताया। भारतीय गरीब जनता की दशा जानने के बाद मजदूरों का रोष खत्म हो गया था।

गाँधी रोमा रोला से भी मिले थे जिन्होंने 1925 में गांधी की जीवनी लिखी थी। रोमा रोला उन दिनों साम्यवादी हो गये थे। इस यात्रा में गांधी की मुलाकात पोप और इटली के तानाशाह शासक मुसोलिनी से भी हुई थी। राजनीतिक तौर पर असफल रही इस यात्रा में गांधी को देश दुनिया और विशेष रूप से यूरोप के हालात समझने का अच्छा मौका मिला था। अपनी सादगी और सहृदयता के चलते उन्होंने यूरोप के भी बहुत से लोगों का दिल जीत लिया था | यहां तक कि उनकी जासूसी करने वाले दो जासूसों से भी गांधी की आत्मीयता हो गयी थी और उन्हें विदाई के समय तोहफे के रूप में गांधी ने घडी भेंट की थी।

८७. गोल मेज सम्मेलन की असफलता के बाद आक्रोशित गांधी और भारत में बढता असंतोष

लंदन के गोल मेज सम्मेलन की असफलता से गाँधी भी बहुत आक्रोशित हुए थे और भारतीय अंग्रेजी शासन के साथ साथ ब्रिटिश सरकार से भी उनकी उम्मीद तार तार हो गयी थी। सामान्यतः बहुत नपी तुली प्रतिक्रिया देने वाले गांधी ने लंदन से भारत वापस आने पर काफी कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि इस सरकार से हम कोई उम्मीद नहीं कर सकते। यह सरकार हमें कुछ नहीं देगी | अपनी आजादी पाने के लिए अब हमें लाठी नही गोली खाने और लाखों लोगों के बलिदान की तैयारी करनी पडेगी।

गाँधी की यह बात काफी हद तक सही भी निकली थी। गोल मेज सम्मेलन की असफलता के बाद अंग्रेजी शासन ने एक बार फिर दमन चक्र शुरू करते हुए जनवरी फरवरी 1932 में बडे पैमाने पर तीस हजार से अधिक लोगों की गिरफ्तारी की थी | गांधी ,पटेल और महादेव देसाई आदि कांग्रेस के लगभग सभी बडे नेता जेल में ठूंस दिये थे |

सबसे बडे नेता और राजनीतिक कैदी होने के कारण गांधी को जेल में काफी सुविधा दी गई थी | जेलर ने गांधी को बताया था कि सरकार उन पर तीन सौ रूपये प्रतिमाह खर्च कर रही है। गांधी को सरकार द्वारा जनता के धन का ऐसा अपव्यय पसंद नहीं था इसलिए उन्होंने वायसराय को पत्र लिखकर कहा कि उन पर भी बाकी कैदियों की तरह ही तीस रूपये प्रतिमाह से अधिक खर्च नहीं होना चाहिये। गाँधी के जेल में रहते हुए ही ब्रिटिश सरकार ने भारत की जनता को विभाजित करने के लिए एक और बडी चाल चली थी। इंग्लैंड के प्रधान मंत्री रैमसे मैकडोनल्ड ने कम्यूनल अवार्ड की घोषणा करके दलितों और मुसलमानों के लिए पृथक मतदान की व्यवस्था की थी। गांधी ने इसे हिंदु मुस्लिम एकता खंडित करने के साथ साथ हिंदुओं में भी स्वर्न और दलितों के विभाजन की चाल मानकर इस योजना का बहुत कडा विरोध किया था |

८८. गाँधी का आमरन अनशन

दलितों को गाँधी हिंदू धर्म का अभिन्न अंग मानते थे इसीलिए वे अपने शुरूआती दिनों से ही छूआछूत को हिंदू धर्म का सबसे बडा कलंक मानते थे और इस घृणित परंपरा को यथाशीघ्र समाप्त करने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम के माध्यम से हर संभव प्रयास करते थे। गांधी जी मानते थे कि दलितों के लिए अलग मतदान का अंग्रेजी फरमान हिंदू मुस्लिम समुदाय में बढते मतभेदों की तरह हिंदू समुदाय में भी उच्च वर्ग और दलितों में वैसा ही स्थाई विभाजन कर देगा और यह विभाजन आजादी के आंदोलन की एकता को बहुत कमजोर कर देगा इसीलिए गांधी इस योजना को अमल में न आने देने के लिए अपनी जान की बाजी लगाने के लिए तैयार हो गये थे।

गाँधी ने इस योजना के विरोध में अंग्रेज सरकार को पत्र लिखकर चेताया था। सरकार ने यह कहकर किनारा कर लिया था कि इस विषय पर गाँधी अंबेडकर को राजी करें। अंबेडकर को सरकार दलितों का प्रतिनिधि मानती थी। अंबेडकर पृथक मतदान की व्यवस्था के पक्ष में थे इसीलिए गांधी अंबेडकर को राजी कर अपने पक्ष में लाने के लिए जी जान से कौशिश कर रहे थे ताकि अंग्रेज सरकार की हिंदू एकता समाप्त करने की चाल विफल की जा सके। अंबेडकर ब्रिटिश सरकार से मिल रही पृथक मतदान की इस सौगात को खोना नहीं चाहते थे। कांग्रेस के कई नेताओं ने अंबेडकर को राजी करने के प्रयास किये थे लेकिन बात नहीं बन रही थी।

गाँधी किसी भी कीमत पर हिंदू एकता को खंडित नहीं होने देना चाहते थे। बातचीत सफल न होती देख उन्होंने इस मुद्दे पर आमरन अनशन शुरू कर दिया था। आमरन अनशन से गाँधी का स्वास्थ लगातार गिर रहा था। इस अनशन से अंबेडकर भी नैतिक दबाव महसूस कर रहे थे। अंततः गांधी और अंबेडकर की ऐतिहासिक वार्ता हुई जिसके चलते ऐसा समझौता हुआ जिसमें दौनो पक्षों की सहमति और विजय हुई दिखती थी। अंबेडकर ने पृथक मतदान की मांग खत्म कर दी थी और कांग्रेस ने दलितों को सरकार की तरफ से दी जा रही सीटों से भी अधिक सीटें देने का प्रस्ताव किया था। यह एक तरह से मैनेजमेंट की विन विन सिचुएशन सरीखा था|

देश हित के लिए गांधी का यह सफल आमरन अनशन साबित हुआ। गांधी ने अहिंसक तरीके से अंग्रेजों की हिंदुओं को विभाजित करने की चाल को हमेशा के लिए विफल कर दिया था|

८९. हरिजन उपवास

सप्रे जी और जयकर जी की मध्यस्थता से गाँधी अंबेडकर समझौता होने से दलितों के पृथक मतदान की व्यवस्था की अंग्रेजों की कुटिल चाल तो सफल नहीं हो सकी थी लेकिन इस समझौते के बाद भी गांधी के मन में यह तीव्र इच्छा थी कि हमारे समाज में कुछ जातियों के साथ बेहद क्रूर व्यवहार शीघ्रातिशीघ्र समाप्त होना चाहिये। गांधी ने हिंदू समाज में जातियों के निचले पायदान पर रखे लोगों के साथ समानता का व्यवहार करने के लिए ही उन्हे हरिजन नाम दिया था। गांधी खुद को भी हरिजन ही कहते थे। 1933 में उन्होंने हरिजन नाम से अखबार भी शुरू किया था जिसे हिंदी, अंग्रेजी और गुजराती भाषा में प्रकाशित कर दलितों को मुख्य धारा में लाने के काम को आगे बढाया था।

गाँधी को हमेशा यह अहसास रहता था कि हमारे हिंदू धर्म ने अपने समाज के एक बडे हिस्से के साथ सदियों से बहुत अन्याय किया है जिसका प्रायश्चित करना चाहिए। 28 अप्रैल 1933 की रात गांधी को जेल में रहते हुए यह स्वपन बोध हुआ कि उन्हें हरिजन समाज के लिए कुछ प्रायश्चित करना चाहिए और उन्होंने फैसला किया कि वे 21 दिन का उपवास रखेंगे।

गाँधी के कुछ सहयोगियों ने उन्हें मना भी किया। जवाहर लाल नेहरू ने इस तरह के सपने की बातों पर विश्वास करने को अंधविश्वास की संज्ञा दी थी लेकिन गांधी इस तरह के उपवास को आत्म शुद्धि कारक मानते थे |

गाँधी ने 8 मई 1933 को जेल में रहते हुए उपवास शुरू कर दिया। गांधी के पिछले आमरन अनशन में 6 दिन में ही तबियत खराब होने लगी थी। अंग्रेजों को लगा कि इस उपवास में गांधी का अंत भी हो सकता है इसलिए घबराकर उपवास के अगले ही दिन गांधी को रिहा कर दिया गया। बाकी उपवास उन्होंने पूना में लेडी ठाकरसी के घर पर्नकुटी महल में पूरा किया। गांधी ने यह उपवास बिना किसी व्यवधान के पूरा किया था और उपवास के बाद तन मन धन से हरिजन सेवा के काम में जुट गए थे | गांधी हरिजन सेवा को अपने रचनात्मक कार्यक्रम का सबसे जरूरी हिस्सा मानते थे इसीलिए अपने मन का सबसे करीबी यह काम आजीवन करते रहे |

९०. हरिजन फंड और हरिजन सेवा के काम

दांडी मार्च के दौरान गांधी ने स्वराज प्राप्ति के पहले वापिस लौट कर साबरमती आश्रम न आने की प्रतिज्ञा की थी। इस असहयोग आंदोलन के दौरान सरकार ने बहुत से लोगों की संपत्ति जब्त की थी | गांधी ने साबरमती आश्रम को भी सरकार द्वारा लेने की पेशकश की थी लेकिन सरकार ने साबरमती आश्रम न लेने में ही अपनी भलाई समझी। गांधी ने रिहाई के बाद तय किया कि वे साबरमती आश्रम को हरिजन छात्रावास बना देंगे और खुद हरिजन सेवा और अन्य रचनात्मक कार्यक्रम के लिए भारत का दौरा करेंगे और इसी दौरान नौ महीने घूम घूम कर हरिजन फंड इकट्ठा करेंगे। समाजसेवा के काम के लिए चंदा इकट्ठा करने का काम गांधी का मन पसंद काम था | इसके पहले भी वे कभी अफ्रीका और भारत के आश्रमो के लिए एवं कभी खादी और जलियावाला बाग स्मारक निर्माण आदि के लिए यह काम बखूबी निभा चुके थे।

सरकार गांधी के हरिजन सेवा के काम से भी डरती थी इसलिए उन पर यह कार्य नहीं करने के लिए प्रतिबंध लगाया गया था और न मानने पर गाँधी को फिर से गिरफ्तार कर लिया गया था। सरकार के इस तरह के दमनकारी कदमों के विरोध में गाँधी ने फिर से उपवास की घोषणा कर दी थी | इस बार गांधी की हालत मरनासन्न हो गयी थी। सरकार ने कस्तूरबा को भी महिला वार्ड से निकाल कर गाँधी और उनके सचिव महादेव देसाई के साथ रख दिया था। गांधी की अंतिम इच्छानुसार कस्तूरबा ने गांधी की सभी चीजें कैदियों और वार्डनो को बांट दी थी।

गाँधी की तबियत ज्यादा बिगड़ती देख सरकार ने घबरा कर उन्हें फिर रिहा कर दिया था।

गाँधी ने 1934 मे हरिजन सेवा के काम और तेज गति से आगे बढ़ाने के लिए हरिजन संघ की स्थापना की। साबरमती आश्रम हरिजन आश्रम बन गया था। बाद मे गांधी की पौत्री(रामदास की पुत्री) सुमित्रा कुलकर्णी, जिन्होंने "गांधी विरासत" नाम की महान कृति लिखी है, इसी हरिजन आश्रम में हरिजन बालिका बनकर रही थी।

तमाम बाधाओं के बावजूद जरा सी फुर्सत मिलते ही गांधी हरिजन सेवा के रचनात्मक काम में जुट जाते थे जिसमें हरिजन बस्तियों की साफ सफाई से लेकर मंदिरों में हरिजन प्रवेश तक के विविध काम शामिल थे।

९१. सेवाग्राम के वर्धा आश्रम की शुरूआत

गाँधी ने दांडी मार्च के समय साबरमती आश्रम को अलविदा कह दिया था। उन्होंने कांग्रेस की चवन्नी सदस्यता से भी त्यागपत्र देकर जवाहर लाल नेहरू से कहा था कि कांग्रेस की कमान अब युवाओं के हाथ में रहनी चाहिए | गांधी मूल रूप से आध्यात्मिक समाज सुधारक थे। उस समय के राजनीतिक हालात उन्हें बार बार राजनीति में खींच लाते थे। साबरमती छोडने के बाद गांधी और उनके सहयोगियों के स्थाई ठिकाने की जरूरत महसूस हो रही थी। इस समय तक गांधी इतने लोकप्रिय हो चुके थे कि वे जहां भी रहते वही जगह राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बन जानी थी। पहले गांधी ने वर्धा मे बजाज परिवार की मगनवाडी में डेरा डाला था | इस बार गांधी मध्य भारत में किसी गांव मे रहना चाहते थे। कुछ समय बाद उनके नये ठिकाने के लिए सेगांव का चुनाव किया गया। सेगांव नाम का एक दूसरा स्टेशन भी था जिसके कारण लोग गलत जगह पहुंच जाते थे। इसलिए सेगांव का नाम बदलकर सेवा ग्राम कर दिया गया था।

गाँधी का वर्धा के पास स्थित सेवा ग्राम आश्रम गांधी द्वारा स्थापित अंतिम आश्रम था। गांधी ने यह जगह कई कारण से चुनी थी। गांधी आम देहातियों की तरह वैसा ही ग्रामीण जीवन जीना चाहते थे जैसे भारत के सात लाख गांवों में लोग रहते हैं। दूसरे यह जगह भारत के लगभग मध्य में स्थित है जहां पूरे देश से आसानी से पहुंच सकते हैं।

आश्रम मे अपने आवास निर्माण के लिए भी गांधी ने कुछ शर्त रखी थी- मसलन यह आश्रम पूरी तरह स्थानीय सामग्री से निर्मित एक आम साधारण घर होना चाहिये और इसका कुल खर्च उतना ही हो जितना अमूमन एक गरीब आदमी अपना घर बनाने में खर्च कर सकता है। यही वजह है कि सेवा ग्राम आश्रम की गाँधी कुटी इतनी साधारण दिखाई देती है कि यह पूरे विश्व में सादगी की प्रतीक बन गयी है। प्रसिद्ध चिंतक ईवान इलिच ने इस कुटी में थोड़ा सा समय बिताने के बाद अपने अनुभव को अलौकिक बताया है। मेरा भी व्यक्तिगत अनुभव यही है कि सेवा ग्राम की बापू कुटी संसार की उन गिनी चुनी पवित्रतम जगहों में से एक है जहां कुछ समय बिताने पर अद्भुत शांति का सहज आभास होता है।

९२. सेवाग्राम - भारतीय आजादी के आंदोलन का नया अड्डा

गाँधी के साबरमती आश्रम को अलविदा कहने के बाद सेवाग्राम का नया आश्रम भारत की आजादी के आंदोलन का नया पता बन गया था। गांधी सेवा संघ के माध्यम से वहां विभिन्न रचनात्मक कार्य किये जाने लगे | किशोर लाल मशरूवाला संघ के अध्यक्ष बने और जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल और राजेंद्र प्रसाद आदि संघ के सक्रिय सदस्य थे जिनके कुशल संचालन में खादी, हरिजन सेवा और ग्रामोधोग के कई रचनात्मक काम शुरू किये गये।

1934 में बिहार में जबरदस्त भूकंप के कारण काफी नुकसान हुआ था लेकिन निकम्मी सरकार ने कोई खास राहत कार्य नहीं किया था। राजेन्द्र प्रसाद के साथ गांधी ने कई महीने मोतीहारी और उसके आसपास के इलाकों में काम किया था जिसमें बम्बई और अहमदाबाद के अमीर लोगों ने दिल खोलकर आर्थिक सहयोग किया था।

1935 में प्रांतीय सरकार के चुनाव में कांग्रेस ने हिस्सा लिया था | 12 में से 9 राज्यों में कांग्रेस की सरकार बनी थी लेकिन गांधी इससे संतुष्ट नहीं थे और उनका अधिकांश समय रचनात्मक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में ही बीतता था।

सेवाग्राम में गांधी ने विशेष रूप से बच्चों और युवाओं के लिए नई तालीम नाम से स्वदेशी शिक्षा पद्धति विकसित की थी जिसमें हिंदुस्तानी भाषा का ज्ञान और मातृभाषा के माध्यम से पढाई के साथ आध्यातमिक शिक्षा एवं रोजगार परक शिक्षा पर अधिक जोर था। नई तालीम की जिम्मेदारी आर्य नायकम और उनकी पत्नी आशादेवी के साथ डॉ जाकिर हुसैन पर थी जिन्होंने आश्रम वासी बहुत से बच्चों को यह तालीम देकर आजीवन गांधीवादी बनाया था।

सेवाग्राम केवल भारत के नेताओं के लिए ही नहीं अपितु गांधी के आकर्षण में बंधे विदेशी चिंतको के लिए भी श्रद्धा का केंद्र बन गया था। यहां आने वाले प्रमुख विदेशियों में जापान के प्रतिष्ठित फूजी गुरू भी थे | उनके प्रभाव से गांधी ने अपनी प्रार्थना में बौद्ध मंत्र शामिल कर सभी धर्मों के प्रति उदारता का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया था |

९३. द्वितीय विश्व युद्ध और गाँधी

प्रथम विश्व युद्ध के समय अहिंसा में विश्वास के बावजूद गांधी ने इंग्लैंड का साथ दिया था | उन दिनों गांधी अंग्रेजों की सरकार को भारत के लिए कल्याणकारी समझते थे इसीलिए अफ्रीका से भारत लौटते समय वे इंग्लैंड में रूक गये थे ताकि युद्ध में घायल अंग्रेजी फौज की सेवा कर सकें। तबीयत खराब होने पर वे घायल सैनिकों की सेवा का काम तो बीच में छोड़ कर भारत आ गये थे लेकिन वायसराय के अनुरोध पर भारतीय युवाओं को अंग्रेजी फौज में शामिल करने के लिए उन्होंने व्यापक अभियान चलाया था।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय अंग्रेजों के प्रति गांधी के मन में वैसा आस्था भाव नहीं था जैसा बीस साल पहले था। इस दौरान गांधी देख चुके थे कि अंग्रेज सरकार का रवैया भारत की जनता के प्रति सहानुभूति का नहीं है। जलियावाला बाग नरसंहार , लाला लाजपत राय जैसे बुजुर्ग नेताओं की बर्बर पिटाई और अहिंसक आंदोलन में नेताओं की ताबडतोड गिरफ्तारी आदि कई ऐसी घटनाएँ थी जिन्होंने अंग्रेजी शासन के प्रति गांधी के मन में असंतोष भर दिया था। वैसे भी अहिंसा के पुजारी के लिए युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं था इसलिए गांधी ने इस युद्ध में अंग्रेजी शासन का समर्थन नहीं किया था |

ब्रिटिश सरकार में भी इस बीच बडा परिवर्तन हुआ था | लिबरल पार्टी की चेंबरलेन की सरकार की हार हुई थी और कंजरवेटिव पार्टी के विंस्टन चर्चिल इंग्लैंड के प्रधान मंत्री बने थे। इंग्लैंड की सरकार ने भारत को भी कांग्रेस से सलाह किये बिना युद्ध में घसीट लिया था। विरोध के कारण कांग्रेस के मंत्री मंडल के इस्तीफों के बाद देश में गवर्नर शासन हो गया था।

इस दौरान भारतीयों को बहकाने के लिए इंग्लैंड की सरकार ने दो प्रमुख प्रयास किये थे। चीन के राष्ट्रपति च्यांगकाई सेक सपत्नीक भारत आए थे। गांधी से कलकत्ता में उनकी मुलाकात हुई थी। उन्होंने गांधी से इंग्लैंड के समर्थन और युद्ध में सहयोग की गुजारिश की थी लेकिन गांधी ने इसे स्वीकार नहीं किया। इस मुलाकात के बाद गांधी ने पटेल को बताया था कि चीनी राष्ट्रपति की पत्नी तो विदूषी सुंदरी हैं लेकिन वह खुद धूर्त कुटिल हैं।

चर्चिल ने दूसरा प्रयास स्टेफर्ड क्रिप्स को भारत के नेताओं से बातचीत कर कोई सर्व सम्मत समाधान निकालने के लिए भेजा था।

९४. क्रिप्स मिशन पर गाँधी की प्रतिक्रिया

स्टेफर्ड क्रिप्स इंग्लैंड सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भारत के नेताओं से बातचीत कर कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के बीच जारी गतिरोध के समाधान के लिए भारत आए थे जिसे क्रिप्स मिशन के नाम से जाना जाता है। मुलाकात के बाद क्रिप्स गांधी को नेक इंसान लगे थे लेकिन उनके पास भी देने के लिए ऐसा कुछ खास नहीं था जिसे गांधी और कांग्रेस के नेता स्वीकार करने योग्य मान सकें। गाँधी और कांग्रेस के नेताओं का पुराना अनुभव यही था कि संकट के समय अंग्रेजी सरकार अपना उल्लू सीधा करने के लिए सिर्फ कोरे आश्वासन देकर मामला रफा दफा कर देती है। इस मिशन की हालत भी कमोबेश वैसी ही थी इसलिए गांधी ने साफ कर दिया था कि केवल आजादी के आश्वासन से काम नहीं चलेगा। मिशन के प्रस्ताव को उन्होंने दीवालिया निकले बैंक के बीती तारीख के चैक की तरह बताया था। गांधी अब इस निष्कर्ष पर पहुँच गए थे कि अंग्रेजों को भारत को अपने हाल पर छोड़ देना चाहिए क्योंकि अंग्रेजी गुलामी से तो अराजकता भी बेहतर है।

युद्ध में अंग्रेजी सेना की हालत पस्त हो रही थी। ऐसे में उनके लिए भारत के साथ बहुत सख्ती करना संभव नहीं था। भारत के नेताओं की भी वैश्विक परिदृश्य पर नजर थी। सुभाष चंद्र बोस जर्मनी और जापान की सरकार के संपर्क में थे ताकि मौका मिलते ही भारत की आजादी के लिए अंग्रेजों के दुश्मनों के सहयोग से सशस्त्र हमला कर आजादी का बिगुल बजा सकें।

भारत की आजादी के आंदोलन में फिर से नया जोश आ गया था और गाँधी कुछ समय के लिए अपने रचनात्मक कार्यक्रम का किनारे कर पुनः कांग्रेस और आजादी की लड़ाई के केंद्र में आ गये थे।

९५. 1942 में गाँधी की हुंकार-'अंग्रेजों भारत छोडो' और 'करो या मरो' के दो ऐतिहासिक नारे

कांग्रेस और अंग्रेजी शासन के बीच पसरी अविश्वास की दीवार लगातार गहरी और चौड़ी होती जा रही थी। कांग्रेस को अब पूरी आजादी से कम कोई दूसरा विकल्प स्वीकार नहीं था और युद्ध में हालत पतली होने और लोकतंत्र का ढोल पीटने के बावजूद ब्रिटिश सरकार भारत को आजाद करने के लिए तैयार नहीं थी | इसी हालत में समझौते की कोई उम्मीद नहीं होने पर यह तय हुआ कि अब आजादी की अंतिम लड़ाई के लिए 8 अगस्त 1942 को गाँधी बम्बई के धोबी तालाब मैदान में बडी सभा कर एक बडे ओर आर पार वाले जन आंदोलन का शुभारंभ करेंगे और "करो या मरो" का नारा देंगे। 7 अगस्त 1942 को गाँधी, कस्तूरबा और महादेव देसाई के साथ वर्धा से बम्बई पहुंच गए थे जहां और भी बहुत से नेता पहले से मौजूद थे। 8अगस्त को बम्बई में गाँधी ने "अंग्रेजों भारत छोडो" का जोशीला आव्हान किया था। इसके पहले अपनी आदत के अनुसार गांधी ने वायसराय को पत्र लिखकर अपनी बात समझाने की कोशिश की थी लेकिन सरकार का रवैया सख्ती से आंदोलन को कुचलने का था इसलिए उधर से समझौते की कोई उम्मीद नहीं थी। इस बार आर पार की लड़ाई लडने के लिए गांधी ने "करो या मरो " का भी उदघोष किया था। बहुत से लोगों ने गांधी के इस नारे का उस समय भी गलत अर्थ निकाल कर हिंसा की थी और कुछ लोग आज भी इसे गांधी का अहिंसक मार्ग से विचलन मानते हैं जो सरासर गलत है। गांधी के करो में हिंसा की कतई अपील नहीं थी | उन्होंने अपनी बात स्पष्ट करने के लिए कहा था कि हमें सरकार से असहयोग के वह सब अहिंसक काम करने चाहिएं जिससे सरकार के लिए हमें आजाद करना जरूरी हो जाए | इनमें किसानों से मालगुजारी अदा नहीं करना और सैनिकों से आंदोलनकारी जनता पर ज्यादती करने से मना करना आदि शामिल था और सरकार द्वारा दमन की स्थिति में अपनी जान की बाजी लगाने के लिए तैयार रहना था। इसमें आंदोलन के हेतु मरने की बात थी न कि किसी को मारने की।

अगले दिन 9अगस्त को एक बडी जन सभा होनी थी लेकिन उसके पहले ही भोर होने के पहले रात में ही गांधी और महादेव देसाई को गिरफ्तार कर लिया गया। गांधी का भाषण कसूतूरबा न पढ सकें इसलिए कस्तूरबा और उनकी सहायक डॉ सुशीला नैयर को भी गिरफ्तार कर लिया गया। किसी तरह से छिपते छिपाते अरूणा आशफ अली ने सभा स्थल पर झंडा फहराया।

गिरफ्तारी के बाद गांधी, महादेव देसाई, कस्तूरबा और सुशीला नैयर आदि विशिष्ट कैदियों को अज्ञात और एकांत वास में रखने के लिए पूना के आगा खान पैलेस को जेल में तब्दील कर दिया गया था जहां उन्हें देश की राजनीतिक गतिविधियों से दूर एकांत में रहना था ताकि वे किसी राजनीतिक गतिविधि में शामिल न हो सकें।

लोकतंत्र का दम भरकर फासिस्ट ताकतों से दूसरा विश्व युद्ध लड रहे इंग्लैंड का भारत में यह बेहद घिनौना दूसरा चेहरा था जो बडी बेरहमी से भारत की आजादी के आंदोलन का गला घोंट रहा था।

९६. आगा खान पैलेस की जेल में गाँधी को पहला बडा आघात - महादेव देसाई की मृत्यु

महादेव देसाई कहने को तो गांधी के सचिव थे लेकिन हकीकत में वे गांधी के लिए पुत्र से भी अधिक थे | वे गांधी के अनन्य भक्त एवं अद्भुत सेवक थे जिनकी निष्ठा और कडी मेहनत की बराबरी करना किसी भी मनुष्य के लिए असंभव नही तो बेहद मुश्किल अवश्य है।

गाँधी से महादेव देसाई की पहली मुलाकात 1916 में कांग्रेस के गोधरा अधिवेशन में हुई थी जिसके अध्यक्ष गांधी थे। गांधी का भाषण सुनकर युवा महादेव देसाई इतने अभिभूत हुए कि आजीवन गांधी के ही होकर रह गए थे। चार पुत्रों के रहते गांधी ने उन्हें अपना मानस पुत्र और उत्तराधिकारी कहा है। एक बार गांधी से जुडने के बाद वे छाया की तरह हमेशा गांधी के साथ रहे। उन्होंने गांधी के निजी सेवक के रूप में उनकी मालिश, दवा और भोजन की व्यवस्था से लेकर कमोड सफाई तक के तमाम काम किये। गांधी के सचिव की हैसियत से उन्होंने गाँधी के पत्र लेखन , पोस्ट मैन और गाँधी के मेल मुलाकातियों की सारी व्यवस्था अपने सिर पर ली हुई थी। यहां तक कि गांधी की गिरफ्तारी के समय राजनीतिक कैदी की हैसियत से वह जेल में भी गांधी की संगत मे रहते थे, यही कारण था कि 1942 के आंदोलन में गांधी की गिरफ्तारी के समय महादेव देसाई को भी गिरफ्तार कर लिया गया था और गाँधी के साथ आगा खान पैलेस की जेल में रखा गया था।

महादेव देसाई की मेहनतकशी को एक दो उदाहरण से ही बहुत अच्छे से समझा जा सकता है। जिन दिनों गांधी सेवाग्राम में रहते थे तब महादेव देसाई वर्धा से प्रतिदिन गांधी की डाक लाने ले जाने के लिए 11 मील पैदल चलते थे और किसी किसी दिन तो उन्हें जरूरी डाक के लिए दो बार 22 मील पैदल चलना पड़ता था |

ट्रेन में सफर के समय वे रात में पाखाने में बैठकर लेख लिखते थे ताकि ट्रेन के डिब्बे की बत्ती जलने से गाँधी की नींद में खलल न पडे। गांधी की सेवा के लिए उन्होंने कांग्रेस सरकार में मंत्री पद भी अस्वीकार कर दिया था।

एक बार उनकी जेब कटने से संस्था के 400 रूपये चोरी हो गये थे उसकी भरपाई उन्होंने कई किताबों का अनुवाद करके पूरी की। महादेव देसाई साहित्य लेखन के साथ साथ गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी भाषा के विद्वान और अनुवादक थे। उनकी कई खंड में प्रकाशित डायरी भारत की आजादी के आंदोलन का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है।

गाँधी के ऐसे निष्ठावान पुत्र सम सहयोगी का अंत गांधी की सेवा करते समय आगा खान पैलेस की जेल में हुआ था। उस समय वे मात्र पचास साल के थे और पूरी तरह स्वस्थ थे। तीव्र हृदयाघात के हमले से डा सुशीला नैयर की उपस्थिति में भी उन्हें तमाम कौशिशों के बाद भी बचाया नहीं जा सका।

महादेव देसाई की मृत्यु गांधी के लिए बहुत बडा आघात थी। कस्तूरबा गांधी के लिए तो महादेव देसाई की मृत्यु और भी ज्यादा पीडादायी साबित हुई |

गांधी और कस्तूरबा के लिए ही नहीं महादेव देसाई जैसे निष्काम देशभक्त का असामयिक निधन आजादी की लड़ाई लडते भारत के लिए भी बहुत दुखदाई था।

९७. अंग्रेजी शासन के दमन के खिलाफ गांधी का उपवास

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजी शासन ने भारत की आजादी के आंदोलन को कुचलने के लिए जबरदस्त बल प्रयोग किया था। कई ऐसे कानून और फैसले जनता पर थोप दिए थे जिनसे न शांति पूर्वक आंदोलन को जारी रखा जा सकता था और आम जनता को भी बहुत परेशानी उठानी पड रही थी। पूरे देश में कांग्रेस के नेताओं की गिरफ्तारी हो रही थी । भारत के वायसराय और इंग्लैंड के प्रधान मंत्री दौनो व्यक्तिगत तौर पर भी गांधी से बेहद नाराज थे।

गाँधी ने अंग्रेजों के दमन के खिलाफ उपवास की घोषणा की थी। गांधी की उम्र भी काफी थी और स्वास्थय भी ठीक नहीं था फिर भी सरकार गांधी और कांग्रेस की मांग के प्रति कतई गंभीर नहीं थी उल्टे उन्होंने यह मान लिया था कि इस उपवास में गांधी का जीवन समाप्त होने की संभावना है इसलिए उनके अंतिम संस्कार तक की व्यवस्था सरकार ने आगा खान पैलेस में कर ली थी। इंग्लैंड के प्रधान मंत्री विंस्टन चर्चिल गांधी से कुपित थे। उन्होंने भी भारत के इस नंगे फकीर को सबक सिखाने का मन बना लिया था और अपशब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहा था कि जब हम हर तरफ जीत रहे हैं तब हम अपने दुश्मन इस कमबख्त बुडढे के सामने कैसे झुक सकते हैं।

अपनी घोषणा के अनुसार गांधी ने 10 फरवरी 1943को 21 दिन का उपवास शुरू कर दिया। 19 -20 फरवरी को दिल्ली में नेताओं का एक बडा सम्मेलन (जो लीडर्स कांफ्रेंस के नाम से जाना जाता है)हुआ था जिसके लगभग सभी नेता एकमत थे कि सरकार द्वारा तुरंत गांधी को रिहा कर दिया जाए। यह मांग करने वाले एम एस ऐनी, एन आर सरकार और एच पी मोदी जैसे वायसराय की विश्वस्त कार्य परिषद के सदस्य भी थे। इसके अलावा दुनिया के कई देशों की प्रतिष्ठित संस्थाओं ने भी गांधी को रिहा करने की अपील की थी जिसमें अमेरिका की सरकार भी शामिल थी।

गाँधी के इस लंबे उपवास से पूरी दुनिया के सामने अंग्रेजों का क्रूर और दमनकारी रूप पूरी नग्नता के साथ सामने आ गया था। इस लिहाज से यह उपवास बहुत सफल साबित हुआ।

९८. आगा खान पैलेस में गाँधी को दूसरा बड़ा आघात- कस्तूरबा गांधी की मृत्यु

गाँधी के जीवन में जेल यात्रा तो अफ्रीका और भारत में बहुत हुई लेकिन आगा खान पैलेस जेल में करीब दो साल की नजरबंदी में गाँधी को उनके जीवन के दो सबसे बड़े आघात पहुंचे थे। सबसे पहले उनके पुत्र सम युवा सचिव महादेव देसाई की अचानक हृदयाघात से मृत्यु और फिर उनकी प्राणप्रिया पत्नी कसतूरबा की भी इसी नजरबंदी के दौरान इहलीला समाप्त हुई थी। जिन लोगों ने गांधी की संगत की थी और जिन लोगों ने गांधी के जीवन को नजदीकी से देखा या पढा है वे जानते हैं कि गांधी के जीवन में जिन दो व्यक्तियों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका थी वे महादेव देसाई और कस्तूरबा गांधी ही थे और इन दौनो ने आगा खान पैलेस में ही अंतिम सांस ली थी।

कस्तूरबा की मृत्यु के कारणों में बीमारी के अलावा महादेव देसाई की मृत्यु भी एक बडा कारण थी। गांधी की तरह ही कस्तूरबा भी महादेव देसाई को पुत्र वत मानती थी। कस्तूरबा गांधी बहुत धार्मिक महिला थी और हिंदू धर्म की मान्यताओं में पूरा विश्वास रखती थी। महादेव देसाई की मृत्यु के बाद उनके मन में यह प्रायश्चित भाव आ गया था कि ब्राह्मन महादेव देसाई की मृत्यु गांधी के काम करते हुए हुई है इसलिए इस ब्रह्म हत्या का पाप हमारे सिर पर लगेगा। गांधी ने काफी कौशिश कर उन्हें इस सोच से उबारा था लेकिन महादेव देसाई की मृत्यु के दुख से कस्तूरबा अंत तक पूरी तरह नहीं उबर सकी थी।

गंभीर बीमारी और वृद्धावस्था के कष्टों के अलावा अंतिम समय में कस्तूरबा को एक और बडा दुख साल रहा था। उनका सबसे बडा पुत्र हरिलाल अपने परिवार के पवित्र सिद्धांतों से विमुख होकर पथ भ्रष्ट हो गया था और गलत संगत मे पडकर शराब सेवन करने लगा था। एक दिन नशे की हालत में वह कस्तूरबा से मिलने आगा खान पैलेस की जेल में भी आ गया। हरिलाल को इस हालत में देखकर कस्तूरबा बहुत आहत हुई | यहां तक कि उनकी और जीने की इच्छा भी जाती रही। गाँधी के छोटे बेटे देवदास और डा सुशीला नैयर कस्तूरबा को पेंसिलिन के इंजेक्शन देकर उन्हें बचाने की अंतिम कौशिश करना चाहते थे लेकिन गांधी और कस्तूरबा इस कष्टदायी एलोपैथिक इलाज के पक्ष में नहीं थे। बिगडे निमोनिया की गंभीर बीमारी और दुख के अनंत सागर में छटपटाते हुए गांधी की गोद में सिर रख कर भारत की इस वीरांगना ने जेल में ही अंतिम सांस ली। जेल में ही गांधी ने उनका अंतिम संस्कार किया।

९९. गाँधी की रिहाई और आजादी की लड़ाई के अंतिम चरण की शुरूआत

एक तरफ अंग्रेजों की द्वितीय विश्व युद्ध में लगातार हालत पतली हो रही थी दूसरी तरफ उन पर गाँधी को रिहा करने के लिए चौतरफा दबाव पड रहा था। अंग्रेज सरकार चाहती थी कि गांधी "करो या मरो" का आंदोलन वापस लेने की घोषणा करें और गाँधी की मांग थी कि पहले सरकार को कांग्रेस के सभी गिरफ्तार नेताओं को रिहा करना चाहिए तभी अच्छे माहौल में आगे की बात हो पाएगी । कांग्रेस के लिए अब आजादी से कम किसी बात पर समझौता करना संभव नहीं था और अंग्रेजों के लिए भी भारत की जनता के आक्रोश को देखते हुए दमन की नीति से राज चलाना असंभव हो गया था इसलिए गतिरोध समाप्त करने के लिए अंततः 8 मई 1944 को बीमारी के आधार पर गाँधी को रिहा कर दिया गया।

गाँधी के रिहा होते ही सुप्त हुए आंदोलन में नया जोश आ गया | कांग्रेस ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम को जोर शोर से आगे बढाना शुरू कर दिया। सरकार ने कांग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम में बाधा तो नहीं डाली लेकिन वह गांधी द्वारा चलाए जा रहे रचनात्मक कार्यक्रम को भी शक की नजर से देखते हुए इसकी जासूसी करती थी कि कहीं यह किसी और बडे आंदोलन की तैयारी तो नहीं है।

एक दूसरे के प्रति अविश्वास के माहौल का अंत 1945 में हुआ जब सरकार ने कांग्रेस के लगभग सब नेताओं को रिहा कर दिया और शिमला में एक समझौता वार्ता की पेशकश हुई। इसे लार्ड वेवल प्रस्ताव और शिमला सम्मेलन के नाम से जाना जाता है। आजादी के आंदोलन का यह अंतिम अध्याय था। इस समय यह साफ होने लगा था कि दूसरे विश्व युद्ध में पराजित होते इंग्लैंड के लिए अब भारत की आजादी के आंदोलन को बहुत दिनों तक कुचलना संभव नहीं है। कांग्रेस के सशक्त आंदोलन के साथ साथ सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज की सशस्त्र क्रांति ने अंग्रेजी सरकार की मजबूत नींव हिला कर रख दी थी इसलिए जनता भी आजादी की धीमी आहट साफ सुन रही थी |

१००. आजाद हिन्द फौज और गाँधी सुभाष संबंध

आजाद हिन्द फौज की शुरुआत मोहन सिंह ने की थी। मोहन सिंह ने काफी हिंदुस्तानी सिपाहियों को इकट्ठा कर भारत की आजादी के लिए लडने के लिए प्रेरित किया था। बाद में सुभाष चंद्र बोस ने जर्मनी और जापान की मदद से सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज को पुनर्गठित कर भारत की पहली आजाद सरकार के गठन की घोषणा की थी जिसे इंग्लैंड के विरुद्ध युद्ध लड रहे देशों ने मान्यता प्रदान की थी। दुर्भाग्य से सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में भी आजाद हिन्द फौज को जर्मनी और जापान ने वैसा समर्थन और सहयोग नहीं दिया था जिसकी उम्मीद सुभाष चंद्र बोस ने की थी फिर भी इस फौज ने कई मोर्चों पर बहादुरी से लडाई की थी। विमान दुर्घटना में सुभाष चंद्र बोस की शहादत के बाद आजाद हिन्द फौज को ब्रिटिश सेना के सामने समर्पण करना पडा था।

आजादी के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले सुभाष चंद्र बोस और उनके शाहनवाज जैसे सहयोगियों एवं बहुत से बहादुर सिपाहियों को हालाँकि उम्मीद के अनुसार सफलता नहीं मिली थी लेकिन उनके प्रति भारतीय जनता के मन में असीम आदर की भावना भर गई थी और सुभाष चंद्र बोस विशेष रूप से युवाओं के पसंदीदा नायक बन गये थे। आजाद हिन्द फौज की हार के कारण उसके अधिकांश अधिकारियों और सिपाहियों को युद्धबंदी बनाकर मुकदमा चलाया गया था लेकिन इस मुकदमे की पैरवी कांग्रेस के नेहरू समेत कई नेताओं ने भूला भाई देसाई के मार्ग दर्शन में की थी। इस मुकदमे के दौरान देश की जनता आजादी के इन दीवानो के साथ तन मन धन से जुड़ गई थी।

गाँधी और सुभाष चंद्र बोस के संबंधों को कुछ लोग अतिरेक के साथ प्रस्तुत कर एक दूसरे के धुर विरोधी की तरह चित्रित कर भ्रम फैलाते रहे हैं। यह सच है कि गांधी और सुभाष के बीच कुछ वैचारिक मतभेद थे लेकिन यह मतभेद आजादी के आंदोलन को किस तरह आगे बढाया जाए उसके तौर तरीकों को लेकर था जिसमें एक दूसरे के प्रति लेशमात्र भी द्वेष नहीं था अपितु दौनो के मध्य पिता पुत्र जैसी आत्मीयता थी। गांधी विचार की अध्येता सुजाता चौधरी ने " गाँधी और सुभाष " कृति में कई ऐतिहासिक तथ्यों एवं दस्तावेजों के आधार पर यह प्रमाणित किया है कि सुभाष चंद्र बोस गांधी की बहुत इज्जत करते थे और गाँधी सुभाष चंद्र बोस के प्रति स्नेह भाव रखते थे।

जहां तक गांधी और सुभाष के मध्य मतभेद का प्रश्न है उसका प्रमुख कारण था कि गांधी आजादी के आंदोलन में न हिंसक युद्ध (आजाद हिन्द फौज) के समर्थक थे और न जर्मनी और जापान जैसी फासिस्ट

ताकतों का सहयोग चाहते थे जबकि सुभाष चंद्र बोस अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अंग्रेजों के दुश्मनों का समर्थन लेने और आजाद हिन्द फौज के द्वारा सशस्त्र संघर्ष के प्रबल पक्षधर थे।

गाँधी के प्रति सुभाष चंद्र बोस का आदर इस तथ्य से भी प्रमाणित होता है कि उन्होंने आजाद हिन्द फौज की पहली टुकडी का नाम गांधी ब्रिगेड रखा था और अपने सिपाहियों को कहा था कि देश की आजादी के बाद हम सब गांधी के नेतृत्व में समाज की सेवा करेंगे

१०१. गाँधी जिन्ना वार्ता और गाँधी के बंटवारा रोकने के प्रयास

गाँधी आजादी के आंदोलन में शरीक होते ही समझ गये थे कि कुछ कट्टरपंथी तत्वों के साथ मिलकर अंग्रेज आजादी के आंदोलन को कमजोर करने के लिए हिंदू और मुसलमानों के मतभेदों को इस तरह प्रस्तुत कर रहे थे जैसे यह दो समुदाय एक साथ नहीं रह सकते जबकि मुगल काल से अंग्रेजों के राज तक यह दौनो समुदाय साथ साथ रहते आए थे और आज भी रह रहे हैं | गांधी शुरू से ही हिंदू मुस्लिम एकता के प्रयास करते आए थे और इस काम में उन्हें मौलाना अब्दुल कलाम आजाद,अली बंधु (मुहम्मद एवं शौकत अली) ,अब्दुल गफ्फार खान ,हकीम अजमल खान आदि नेताओं के साथ साथ जिन्ना का भी समर्थन प्राप्त था | अफ्रीका से भारत वापस आने पर जिन्ना की अध्यक्षता में ही गुजराती समाज ने गांधी का शानदार स्वागत समारोह आयोजित किया था।

कालांतर में कुछ ऐसी परिस्थितियां बनती चली गई कि कभी मुस्लिम समुदाय के खिलाफत आंदोलन तक को सांप्रदायिक बताकर उसके समर्थन में न आने वाले धर्म निरपेक्ष जिन्ना धीरे धीरे कट्टर सांप्रदायिक होकर धर्म के आधार पर पाकिस्तान की मांग करने लगे। गाँधी के विपरीत धर्म के मामले में जिन्ना नास्तिक जैसे ही थे जो अपने रहन सहन और खानपान आदि में इस्लाम में प्रतिबंधित कई चीजों को अपनाते थे। उनकी शादी भी रति नाम की पारसी लड़की से हुई थी।

गाँधी ने जिन्ना से बंटवारे की जिद छोडने के लिए 1944 में बहुत प्रयास किया था लेकिन वे जिन्ना को अपना रूख बदलने के लिए राजी नहीं कर सके। सितम्बर 1944 में जब गांधी जिन्ना से वार्ता के लिए बम्बई जाने वाले थे तो हिंदू महासभा के लोगों ने गांधी को रोकने के लिए वर्धा में धरना दिया था। दूसरी तरफ जिन्ना भी यह तक नहीं चाहते थे कि गांधी मुस्लिम लीग के अधिवेशन में आकर मुसलमान प्रतिनिधियों को समझाएं। गांधी और जिन्ना के बीच काफी पत्राचार भी हुआ था जिसमें गांधी जिन्ना के मन की थाह लेने की कोशिश करते हैं। गांधी ने जिन्ना से यहां तक भी कहा कि यदि दो राष्ट्र बनें तो भी उनमें कुछ चीजें साझी होनी चाहिए ताकि भविष्य में एकता की संभावना बनी रहे। जिन्ना ने साफ मना कर कहा कि दौनो राष्ट्र आजाद होंगे और उनमें कुछ भी साझा नहीं होगा। इस संवाद से यह साफ दिखाई देता है कि जिन्ना मुसलमानों के लिए अलग राष्ट्र बनाने की अपनी जिद पर अंत तक अडे रहे। यह तो शायद जिन्ना को भी अहसास नहीं रहा होगा कि उनकी जिद कितनी नफरत पैदा करेगी, कितनी जानें लील जाएगी और आने वाले समय में दौनो देश न जाने कब तक सांप्रदायिक बंटवारे का भारी बोझ ढोएंगे |

१०२. शिमला वार्ता में गाँधी

जून 1945 में अंग्रेज सरकार ने भारत के प्रमुख राजनीतिक दलों के साथ गांधी को भी शिमला वार्ता के लिए आमंत्रित किया था। इस वार्ता की सफलता के लिए उचित माहौल बनाने के लिए कांग्रेस के सभी नेताओं को रिहा कर दिया गया था। अपने प्रिय नेताओं की रिहाई से जनता में गजब का उत्साह पैदा हो गया था। ऐसा लगता था कि आम जनता भी अपने लोकप्रिय नेताओं की तरह आजादी के लिए कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार है।

शिमला वार्ता में कुछ चीजें बहुत साफ दिखाई देने लगी थी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि अंग्रेजों ने भारी और खट्टे मन से भारत छोडने का मन बना लिया था। अंग्रेजी शासन का दूसरा महत्वपूर्ण फैसला यह था कि वे आजाद भारत को एक राष्ट्र की बजाय सांप्रदायिकता के आधार पर दो देश बनाएँगे। अंग्रेजों के पहले फैसले से तो सब खुश थे लेकिन दूसरे निर्णय पर गाँधी और उनके बहुत से अनुयायी सहमत नहीं थे जबकि मुहम्मद अली जिन्ना और उनके कट्टर समर्थकों को अंग्रेजों ने बहुत पहले यह वादा कर दिया था कि आजादी के बाद भारत के मुसलमानों को वे अलग राष्ट्र का तोहफा देंगे। जिन्ना के अलावा कांग्रेस का भी एक प्रभावशाली तबका दो राष्ट्र सिद्धांत से सहमत था। उन्होंने भी यह मान लिया था कि दो राष्ट्र बनने के बाद ही हिंदू मुस्लिम दंगे रूक सकते हैं। एक बडा मतभेद इस बात पर था कि कौन कौन से राज्य भारत में रहेंगे और कौन से नये राष्ट्र में जाएँगे।

ऐसे माहौल में गाँधी के पास दो सबसे बड़े मुद्दे थे। पहला लगभग असंभव सा यह कि अंतिम प्रयास के रूप में यह कौशिश की जाए कि धर्म के आधार पर देश का बंटवारा न हो, इसके लिए सब पक्षों से बातचीत हो और दूसरा यह कि बंटवारा यदि होता ही है तो यह दौनो समुदाय के नेताओं की आपसी समझबूझ के साथ शांति से संपन्न हो।

वायसराय द्वारा आयोजित शिमला वार्ता में जिन्ना ने यह जिद पकड़ ली थी कि वायसराय द्वारा प्रस्तावित एक्जीकयूटिव काउंसिल में मुस्लिम प्रतिनिधी भेजने का अधिकार सिर्फ मुस्लिम लीग को ही है। कांग्रेस इस बात के लिए तैयार नहीं थी क्योंकि ऐसा मानना धर्म निरपेक्ष कांग्रेस के मूल सिद्धांत के खिलाफ था इसलिए शिमला वार्ता विफल हो गयी थी।

१०३. विश्व युद्ध में इंग्लैंड के मित्र राष्ट्रों की विजय पर गाँधी का नजरिया और युद्ध का भारत पर प्रभाव

द्वितीय विश्व युद्ध में अंततः इंग्लैंड के मित्र राष्ट्रों की विजय हुई थी। दूसरी तरफ इंग्लैंड में लेबर पार्टी की सरकार बन गयी थी। इस युद्ध में जिस तरह की बर्बर हिसा हुई थी उसके मददे नजर अपने विरोधियों जैसे बर्बर इंग्लैंड आदि देशों की जीत पर गाँधी ने खुशी जाहिर नहीं की थी और कहा था कि इन राष्ट्रों को भी जर्मनी और जापान के साथ शांति से व्यवहार करना चाहिए|

इंग्लैंड की नई सरकार भी अब जल्द से जल्द भारतीयों को देश की बागडोर सौंप देना चाहती थी इसीलिए 1946 में तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन भारत आया ताकि भारत में यथा शीघ्र अंतरिम सरकार बनाकर यहां से अंग्रेजी राज समेटा जा सके।

द्वितीय विश्व युद्ध में इंग्लैंड और उसके मित्र राष्ट्रों की विजय तो हो गयी थी लेकिन इस युद्ध में इंग्लैंड की हालत भी काफी खराब हो गयी थी। दूसरी तरफ आजाद हिन्द फौज के द्वारा सशस्त्र संघर्ष से भी अंग्रेजी शासन मे दहशत का माहौल था। आजाद हिन्द फौज के समर्थन में लगभग पूरा देश एक जुट हो गया था। कांग्रेस के साथ हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग भी आजाद हिन्द फौज के युद्ध बंदियो के समर्थन में आ गये थे।

अंग्रेजों की अपराजेय छवि नहीं रही थी। एशियाई क्षेत्र में कई मोर्चो पर अंग्रेजी सेना को मुंह की खानी पडी थी। बम्बई में नौसेना के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया था। जनता में आक्रोश चरम सीमा पर पहुंच गया था। ऐसी परिस्थिति में इंग्लैंड की नई सरकार यही चाहती थी कि यथा शीघ्र भारत के लोगों को सत्ता स्थानांतरित कर दी जाए। इसीलिए शिमला वार्ता के बाद कैबिनेट मिशन को भारत भेजा गया था।

भारत के अंदरूनी हालात भी बद से बदतर होते जा रहे थे। कांग्रेस के नेता हिंदू मुस्लिम एकता के जितने प्रयास करते थे मुस्लिम लीग के कटटरपंथी उतनी ही सांप्रदायिक आग लगा रहे थे ताकि वे इंग्लैंड के सामने यह साबित कर सकें कि हिंदू और मुसलमानों के लिए एक राष्ट्र के रूप में रहना संभव नहीं है।

गाँधी और जिन्ना के बीच काफी संवाद के बावजूद जिन्ना की अलग राष्ट्र की जिद के कारण कोई समझौता नहीं हो सका था| ऐसी स्थिति में देश तेजी से सांप्रदायिकता की दहकती भटटी की तरफ बढ़ रहा था। धीरे धीरे कांग्रेस की समझ में भी आ गया था कि अब अखंड भारत की आजादी सपने जैसी है इसलिए बंटवारा अवश्यंभावी दिखने लगा था।

१०४. कैबिनेट मिशन और गाँधी

शिमला वार्ता और वेवल योजना की विफलता के बाद सत्ता हस्तांतरण के अंतिम प्रयास के लिए ब्रिटिश सरकार की तरफ से एक तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन भारत आया था। इस मिशन के दो सदस्य लार्ड पैथिक लारेंस और सर स्टैफर्ड क्रिप्स गाँधी के परिचित थे और तीसरे सदस्य थे ए बी अलेक्जेंडर। इस मिशन की घोषणा 16 फरवरी 1946 को हुई थी और मिशन के अनुसार 16 जून 1946 तक भारत को आजाद करना था। मिशन के तीन प्रमुख उद्देश्य थे – 1. अल्पसंख्यको को वीटो पावर नहीं हो, २. रियासतों के राजा आजादी मे अडचने नहीं डालें और 3. भारत यथा शीघ्र पूर्ण रूप से स्वतंत्र राष्ट्र हो। काफी लोग मिशन से असंतुष्ट भी थे लेकिन गांधी ने मिशन से सहयोग की अपील की थी। मिशन अपने पूर्ववर्ती कमिशनो की तरह वायसराय, मुस्लिम लीग, राजाओं और कांग्रेस आदि सबको खुश करने के लिए सबको छोटे छोटे झुनझुने थमाने की अव्यवहारिक कौशिश कर रहा था इसलिये बात नहीं बन रही थी। क्रिप्स जब गांधी से मिले तो गांधी ने अपने मित्र क्रिप्स से पूछा भी था - आपकी 16 जून को भारत को आजाद करने की घोषणा का क्या हुआ?

एक तरफ रियासतों के अधिकांश राजा अपनी गद्दी बचाने के लिए अडे थे दूसरी तरफ जिन्ना की मौलाना आजाद से व्यक्तिगत नाराजगी थी और उनकी जिद थी कि जैसे मुस्लिम लीग मुसलमानों की प्रतिनिधि है वैसे ही कांग्रेस को केवल हिंदूओं(हरिजन, सिख और ईसाई भी नहीं)की प्रतिनिधि माना जाए। धर्म निरपेक्ष कांग्रेस के लिए खुद को केवल हिंदू सरपरस्त संस्था कहना संभव नहीं था। 26 जून 1946 को गाँधी ने वायसराय को लिखे पत्र में यह साफ कर दिया था कि कांग्रेस केवल हिंदूओं की नुमाइंदगी करने वाला दल नहीं है वह पूरे भारत की प्रतिनिधी है।

1946 के चुनाव में कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों को मुस्लिम बहुल सिंध और बंगाल छोडकर लगभग पूरे देश में विजय प्राप्त हुई थी इसलिए गांधी और कांग्रेस के लिए जिन्ना की जिद के सामने झुकने का कोई कारण नहीं था।

१०५. अंतरिम सरकार का गठन और विफलता के बीच गांधी के शांति प्रयास

इस बार दिल्ली प्रवास में गाँधी बिड़ला भवन के बजाय बाल्मीकी बस्ती में ठहरे थे। गांधी की यह भी एक विशेषता थी कि कठिन से कठिन दौर में भी वे अपने रचनात्मक कार्यक्रम के लिए जगह बना लेते थे। गाँधी का मानना था कि अंत्यजों का उत्थान तभी संभव है जब हम उनके बीच रहकर उनकी समस्याओं से रूबरू हों।

कैबिनेट मिशन की सफलता के लिए सौहार्द पूर्ण वातावरण सुनिश्चित करने के लिए गांधी ने लार्रेंस को दो सुझाव दिए थे - सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया जाए और नौरोजी एवं गोखले के समय से 50 साल से जिस नमक कर का विरोध हो रहा है वह कर समाप्त होना चाहिये। गाँधी की पहली मांग मानते हुए जय प्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया आदि नेताओं को तो रिहा कर दिया गया था लेकिन वायसराय काउंसिल के वित्त सदस्य रेजीनाल्ड के सहमत होने के बावजूद वायसराय वेवल ने नमक कर नहीं हटाया था। अंग्रेजी शासन का यह दृष्टिकोण उस कहावत को साबित करता है कि "रस्सी जल गई थी लेकिन उसका बल नहीं गया था "।

गाँधी और कांग्रेस के चार और प्रमुख मुद्दे थे-

1. देशी राजा भी केंद्रीय सत्ता के अधीन रहें लेकिन क्रिप्स इससे सहमत नहीं थे |
2. असम बंगाल के चाय बागान के केवल 21000 यूरोपीयों के लिए 6 सीटों का प्रावधान गलत है |
3. भारत का संविधान आजादी के पहले नही आजादी के बाद बनना चाहिए
4. आजाद भारत में ब्रिटिश सेना नहीं रहेगी।

यह चार मांग इसलिए रखी गई थी कि आजादी के बाद आजाद भारत में अंग्रेजों का कोई हस्तक्षेप नहीं हो और भारत की आजादी सही मायनों में संपूर्ण आजादी हो।

28जून 1946 को गाँधी पूना आ गये और मिशन 29जून 1946 को वापिस इंग्लैंड लौट गया।

सत्ता हस्तांतरण के लिए लीग और कांग्रेस में कोई समझौता नहीं हो सका तो 10 अगस्त 1946 को वेवल ने जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन कर दिया। मुस्लिम लीग के लिए यह असहनीय था कि नेहरू के नेतृत्व में अंतरिम सरकार अपना काम करे | इसी के बाद मुस्लिम लीग ने और उग्र रूप धारण कर लिया था |

१०६. सांप्रदायिक आग के बीच आजादी और विभाजन की पृष्ठभूमि में गांधी

अंतरिम सरकार ठीक से अपना काम शुरू कर पाती उसके पहले ही जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने सांप्रदायिक हिंसा का अंतिम हथियार इस्तेमाल कर दिया। इस काम में बंगाल के प्रधान मंत्री शहीद शोहरावर्दी ने सबसे बडे खलनायक की भूमिका निभाई। कलकत्ता में मुस्लिम गुंडो को सरकारी संरक्षण में हथियार थमाकर पांच दिन तक कलकत्ता में खुलेआम कत्लेआम मचा दिया था।

मुस्लिम लीग ने 15 अगस्त 1946 को पाकिस्तान बनवाने के लिए "डाइरेक्ट एक्सन डे " की घोषणा की थी जिसमें जिन्ना ने पाकिस्तान के लिए हर तरह के संघर्ष का आव्हान किया था और उनके साथियों ने इस्लाम में हिंसा को जायज बताते हुए सीधे सीधे मुस्लिम जनता को हिंसा के लिए भडकाया था।

ही कारण था कि 14 अगस्त की मध्य रात्रि से ही हिंसा शुरू हो गई थी। अकेले कलकत्ता में पांच दिन में पांच हजार लोगों की हत्या कर दी गई थी और पंद्रह हजार के करीब घायल हुए थे | बडे पैमाने पर महिलाओं के साथ जघन्य अपराध हुए थे | इस तरह की हिंसा का किसी को पूर्वानुमान नहीं था इसलिए इसे रोकना भी आसान नहीं था। मुस्लिम लीग ने बहुत सुनियोजित तरीके से हिंसा को अंजाम दियाथा। बंगाल और असम में हिंदू उसके निशाने पर रहे थे और लाहौर में सिख निशाने पर थे। गाँधी के लिए यह बेहद पीड़ा का दौर था क्योंकि आजादी और उससे अधिक सांप्रदायिक सद्भाव रेत की तरह मुट्ठी से फिसलते दिख रहे थे |

अक्तूबर 1946 में वेवल ने मुस्लिम लीग के भी 3 मंत्री अंतरिम सरकार में लिए थे लेकिन लीग के मंत्रियों का रवैया सहयोग का न होकर कांग्रेस की नीतियों और कामों में अंडंगेबाजी का ही रहा। गांधी और कांग्रेस का अखंड भारत को आजादी दिलाने का सपना लीग के हर स्तर पर विरोध के चलते लगातार क्षीण होता दिख रहा था। इस दौरान जिस तरह जगह जगह सुनियोजित ढंग से दंगे आयोजित किये जा रहे थे उससे यह लगने लगा था कि देश की अधिकांश मुस्लिम आबादी का नेतृत्व कांग्रेस के उदारवादी मुस्लिम नेताओं के हाथ से फिसलकर लीग के कटटरपंथी दल के पास चला गया है। यह भी लगने लगा था कि आजादी के बाद भी हमारी ऊर्जा और संशाधनो का बडा हिस्सा सांप्रदायिक दंगों के जख्म भरने में जाया होगा।

१०७. आजादी की घोषणा से पहले भीषण दंगो की विभीषिका

भारत की आजादी की तुलना मानव सृजन के प्रसव से की जा सकती है जिसमें एक तरफ जान लेवा साबित हो सकने वाली प्रसव पीड़ा होती है और दूसरी तरफ एक नये शिशु के आगमन के असीम आनंद की अनुभूति होती है। भारत की आजादी के आंदोलन के अंतिम चरण में भी मुस्लिम लीग की जहरीली सांप्रदायिकता ने ऐसी विरोधाभासी स्थितियाँ पैदा कर दी थी जिसमें अंग्रेजी सरकार तो यथा शीघ्र कराहते भारत को आजाद कर खुद मुक्त हो जाना चाहती थी लेकिन यह आजादी हमारे आजादी के आंदोलन के अखंड आजाद भारत के सपने को धूल में मिलाती दिख रही थी।

जिन्ना की हठधर्मिता और उनके साथियों की बर्बर हिंसा ने हिंदू मुस्लिम एकता को तार तार कर दिया था। दूर दूर तक सुलह की संभावना नही रही थी। गांधी ने 1944 में सबकी नाराजगी के बावजूद जिन्ना से लंबी बातचीत की थी लेकिन जिन्ना का रूख नरम होने के बजाय लगातार कडा और कडा होता चला गया था। वह अहिंसक गांधी के धुर विपरीत हिंसा की वकालत कर रहा था। नियति ने कभी एक ही कांग्रेस के सहारे राजनीति का ककहरा सीखने वाले इन दो गुजरातियों को धुर विरोधी बना दिया था।

इधर आजादी के सूरज के अग्रिम रथ की किरणें भारत के दरवाजे पर दस्तक दे रही थी उधर विभाजन की डरावनी आहट भी पहाडी नदी की रात के सन्नाटे की भयावह आवाज सी साफ सुनाई देने लगी थी।

गाँधी को एक साथ बिहार और बंगाल के बर्बर दंगों की सूचना मिली थी। गांधी एक एक कर हर जगह जाने के लिए व्याकुल थे लेकिन यह धीमी रेल यात्राओं के उस दौर में संभव नहीं था। तय हुआ कि नेहरू और पटेल पटना जाएंगे और गाँधी कलकत्ता होते हुए सबसे अधिक सुलग रहे नोआखाली जाएंगे।

१०८. सांप्रदायिक दंगो की आग में जले कलकत्ता और बंगाल में गाँधी

कलकत्ता के दंगों से एक तरफ बिहार में कौमी दंगे शुरू हो गये थे जिसमें कहीं कहीं हिंदू और अधिकांश जगह मुस्लिम आबादी निशाने पर थी | दूसरी तरफ बंगाल के नोआखाली में दंगों ने भयानक रूप ले लिया था जहां हिंदुओं को निशाना बनाया गया था। बाकी इलाकों में अधिकांश दंगे शहरी आबादी में हुए थे जहां नियंत्रण आसानी से हो सकता था लेकिन नोआखाली के दंगे देहाती इलाकों में फैल गये थे जहां से दिल दहलाने वाले समाचार आ रहे थे । इसलिए गांधी ने नोआखाली जाना तय किया । बिहार में कांग्रेस अध्यक्ष अब्दुल बारी और मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिन्हा की जोड़ी अच्छा काम कर रही थी और राजेंद्र प्रसाद, नेहरू एवं पटेल भी वहाँ मदद कर रहे थे। उधर नोआखाली में हिंदू बुरी तरह घिर गये थे जहां के गांवो मे दंगाइयों ने कोहराम मचा रखा था। यह इलाका प्रकृति की गोद मे बसा है और धरती के बहुत उर्वरक क्षेत्रों में शुमार है जहां चारों तरफ हरियाली का आलम है। दंगों ने इस हरे भरे क्षेत्र को लाल कर दिया था। गांव के गांव उजड रहे थे। मंदिरों और महिलाओं पर सबसे ज्यादा कहर बरपा था। दंगे थमने के इसलिए भी कोई आसार नहीं दिख रहे थे क्योंकि उनका आगाज एक कटटर मुस्लिम कलेक्टर की शह पर हुआ था। दीवाली और दुर्गा पूजा के समय शहरों में बसे अधिकांश हिंदू परिवार गांव में आते हैं | वह समय दंगों के लिए मुफीद था। ऐसे में पूरा परिवार एक साथ साफ कर संपत्ति पर कब्जा किया जा सकता था।

सोहरावर्दी गांधी को कलकत्ता रोकना चाहता था लेकिन गांधी यथाशीघ्र जान की बाजी लगाकर नोआखाली पहुंचने के लिए बैचेन थे। अंततः वे 6 नवम्बर 1946 को पहले स्पेशल ट्रेन से और फिर स्टीमर से पदमा नदी में 100 मील की यात्रा कर चांदपुर पहुंचे । चांदपुर में गाँधी ने हिंदू एवं मुस्लिम डेलिगशन से बात की। डरे हुए हिंदू डेलिगशन से उन्होंने कायरता छोडकर हिम्मत के साथ अहिंसा के बल पर संख्या और शस्त्र बल से लडने के लिए आव्हान किया। मुस्लिम समुदाय का कहना था कि हत्या कम लोगों की हुई है अधिकांश ने डर के कारण पलायन किया है। यहां दौनो समुदायों के लोगों को समझाकर गांधी ने सीधे नोआखाली का रूख किया।

१०९. नोआखाली में आजादी के पहले का प्रचंड सांप्रदायिक उन्माद और गाँधी की अहिंसा की अग्नि परीक्षा

नोआखाली पहुंच कर सबसे पहले गांधी ने वहां के प्रशासनिक अमले से मुलाकात की। अंग्रेज कलेक्टर ने गांधी को आश्वासन दिया कि सबको सुरक्षा दी जाएगी। वहां के मुस्लिम पुलिस अधीक्षक अब्दुल्ला ने भी गांधी को आश्वश्त किया कि उसके रहते किसी की हत्या नहीं होगी। इस पर गाँधी ने कहा कि यदि अब किसी की हत्या हुई तो मैं आपके दरवाजे पर मरूंगा। पुलिस अधीक्षक ने कहा ऐसा होने से पहले मैं मर जाऊँगा। प्रशासन से आश्वस्ति के बाद गांधी ने योजना बनाई कि यहां के हर गांव में एक हिंदू और एक मुस्लिम अपने गांव की सुरक्षा की सामुहिक जिम्मेदारी लें।

मुस्लिम लीग और मौलवियो ने गांधी का विरोध किया था और वे प्रशासन से उन्हें वापस भेजने की मांग कर रहे थे। वे गांधी की रामधुन पर भी धार्मिक आधार पर आपत्ति जता रहे थे। गांधी ने इसी दौरान अपने भजन में "ईश्वर अल्लाह तेरो नाम " जोडा था ताकि उनकी प्रार्थना में मुस्लिम भी शरीक हो सकें। आम जनता से उनकी भाषा में आत्मीय संवाद करने के लिए बंगाली भाषा भी सीखी। मुस्लिमों को समझाते हुए गांधी ने कहा कि वे पाकिस्तान बनने के विरोधी नहीं हैं लेकिन हिंसा के दम पर बनने वाला पाकिस्तान पनप नहीं सकता।

गाँधी ने वहां बहुत दर्दनाक मंजर देखे। एक घर के कुत्ते ने कूं कूं का रूदन करते हुए उन्हें घर में पडी आठ लाश दिखाई। इस तरह के बहुत से किस्से जान बचाकर भागे लोगों से मालूम हुए| गांधी जैसे अहिंसक सख्शियत के लिए ऐसी हिंसा अकल्पनीय थी और इसे रोकना एक बडी चुनौती भी थी।

गाँधी ने सेवाग्राम को पत्र में लिखा - "यहाँ मेरी अहिंसा की अंतिम परीक्षा है"। मैं अकेला गांवो में जाऊँगा| मुस्लिम के घर रहूँगा और हिन्दू मुसलमान में भाईचारा करूँगा।

११०. नोआखाली की वन मैन आर्मी : गांधी

शुरू शुरू में नोआखाली के गांवों मे गांधी के साथ पत्रकारों सहित काफी लोग चलते थे और सुरक्षा के लिए पीछे पीछे पुलिस अधीक्षक अब्दुल्ला भी रहते थे। इन दिनों भी गांधी का आंशिक उपवास जारी था जो उन्होंने बिहार और बंगाल के दंगों के विरोध में यह कहकर शुरू किया था कि जब तक दंगे नहीं थमेंगे वे सामान्य से आधा भोजन ही लेंगे। साथ में यह भी कहा था कि दंगे और अधिक फैले तो वे आमरन अनशन भी करेंगे।

लोगों पर गाँधी के आंशिक उपवास का प्रभाव पडा था | धर्म निरपेक्ष नेता भी पुरजोर प्रयास से शांति कायम करने में जुटे थे जिसका असर दिखाई देने लगा था |

इसी दौरान गांधी को महसूस हुआ कि जिस इलाके से वे गुजर रहे हैं वहां जगह जगह खून खराबे के निशान हैं। यह देखकर उन्होंने कहा कि यह जमीन मेरे लिए मजार के समान है इसलिए मैं यहाँ नंगे पैर ही चलूंगा | उसके बाद कीडे के काटने के बाद भी गांधी ने नोआखाली प्रवास में चप्पल नहीं पहनी, खतरा उठाकर भी नंगे पैर ही घूमते रहे।

जिस तरह से गाँधी नोआखाली के लोगों का दुख दर्द और अनंत पीडा महसूस कर रहे थे वैसे ही लोग भी गांधी के साथ शांति बनाए रखने के लिए मजबूती से आगे आ रहे थे। बीच बीच में नेहरू और पटेल आदि से पत्राचार में उन्हें बिहार और देश के दूसरे हिस्सों के भी समाचार मिल रहे थे। इन समाचारों का लब्बोलुआब यही था कि मुस्लिम लीग पाकिस्तान बनवाने के लिए खुलकर सांप्रदायिक कार्ड खेल रही थी और कांग्रेस के बडे नेता शांति जुलूस निकाल कर लोगों को संयम बरतने की अपील कर रहे थे और अंग्रेज अधिकारी लगभग उदासीन थे।

26जनवरी को गाँधी हर साल झंडा फहराते थे लेकिन इस बार 26 जनवरी 1947 के दिन बासा गांव में उन्होंने दुख की इस घडी में झंडा फहराने से मना कर दिया था। कहा था- भाई भाई के द्रोह पर कैसा जश्न? गांधी के लिए ऐसी हिंसक आजादी का कोई अर्थ नहीं था जिसके बाद हिंदू और मुसलमान एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाएँ |

हिंदू सभा के प्रांतीय अध्यक्ष एन सी चटर्जी का सुझाव था कि सारे हिंदू एक जगह रहें तो सुरक्षित रहेंगे। गांधी ने कहा हम लोगों को बाडों में नहीं रखेंगे।

भटियारपुर में दंगाइयों ने मंदिर खंडित कर दिया था। गांधी के कहने पर मुसलमानों ने मंदिर खडा किया और गांधी ने मूर्ति स्थापित कर दोबारा पूजा शुरू कराई। इसी तरह एक अन्य गांव में बलात्कार और

धर्मांतरण के शिकार लोगों को पुनः आदर दिलाया। पूरी यात्रा में नंगे पैर चलने से गाँधी के पैरों में छाले पड गये थे। नेहरू और पटेल चाहते थे कि गांधी दिल्ली आकर सरकार गठन के काम में मदद करें लेकिन गांधी ने मना कर दिया- मेरा काम यहीं है | इस दौरान ब्रिटिश प्रधान मंत्री ने लार्ड माउंटबेटन को भारत का गवर्नर जनरल बनाकर भेजा था ताकि आजादी की प्रक्रिया जल्द पूरी हो सके | गांधी के शांति प्रयास से माउंटबेटन भी बहुत प्रभावित थे | उन्होंने कहा था- गांधी बन मैन बाउंडरी फोर्स हैं। यह सच भी था | शांति स्थापित करने का जो काम बडी सेना नहीं कर पा रही थी वह गांधी अकेले कर रहे थे | नोआखाली में शांति होने के बाद उन्हें खबर मिली कि बिहार में फिर दंगे भडके हैं। यह खबर मिलते ही गांधी बिहार के लिए निकल पड़े |

१११. सांप्रदायिक सौहार्द के लिए बिहार आए गांधी

जहां जहां दंगे बेकाबू हो रहे थे वहाँ वहाँ गांधी को बुलाया जा रहा था | जब मुस्लिम लीग के नेताओं और उनकी प्रतिक्रिया में हिंदू महासभा के लोगों ने बिहार के छपरा, मुजफ्फरपुर और पटना में कलकत्ता और नोआखाली के दंगों के बारे मे बढा चढ़ा कर झूठी खबरें और अफवाहें फैलाई तो बिहार में सांप्रदायिक उन्माद फैल गया। गांधी जलते बिहार को शांत करने पटना पहुंच गए। इसी दौरान उन्हें बीच में वायसराय से बात करने के लिए दिल्ली आना पडा। लेकिन उनका मन बिहार में ही उलझा हुआ था।

दिल्ली में भी उन दिनों तनाव रहने लगा था। पास में पंजाब में भी सांप्रदायिकता जड़ जमा चुकी थी। जिन्ना को एक ही धुन सवार थी कि कैसे पाकिस्तान के लिए ज्यादा से ज्यादा सौदेबाजी की जाए | नेहरू और पटेल को भी अब जल्द से जल्द आजादी की कामना थी क्योंकि अंतरिम सरकार मुस्लिम लीग के मंत्रियों के बेहद नकारात्मक रवैए के चलते कुछ भी नहीं कर पा रही थी। अतः वे भी इस साझी सरकार से आजिज आ चुके थे | मुस्लिम लीग के मंत्रियों से तू तू मैं मैं के कारण जनता मे भी सरकार की जग हंसाई हो रही थी।

दिल्ली में सत्ता हस्तांतरण की बातचीत में आ रही अडचनों से गाँधी भी परेशान हो गये थे। ब्रिटिश सरकार दिनों दिन बिगडते हालात में भारत को यथाशीघ्र आजाद कर एक साथ अपना पिंड भी छुडाना चाहती थी और वाहवाही भी लूटना चाहती थी। ऐसी स्थिति में पूरे देश को सांप्रदायिक आग में झोंकने से बेहतर सबकी यही राय बन रही थी कि विभाजन की बात स्वीकार कर आजादी हासिल की जाए ताकि उसके बाद शांति से बाकी मसले सुलझाये जाएँ।

गाँधी ने बिहार में कई इलाकों का दौरा किया और सब पक्षों की बात सुनकर शांति की अपील की। बिहार में बंगाल का मुस्लिम लीग का मुख्य मंत्री सहायता के नाम पर गुंडे और असलहे भेज रहा था उधर अलीगढ़ से भी कुछ ऐसी ही सहायता आ रही थी। गांधी अपनी रौ में सबसे शांति कायम करने की फरियाद कर रहे थे | गांधी ने बिहार मे मुस्लिम लीग के बीमार नेता की प्राकृतिक चिकित्सा तक की। इसी दौरान बिहार में पुलिस ने विद्रोह कर दिया और वहां पुलिस और सेना में मुठभेड़ भी हुई। गांधी ने पुलिस एसोसिएशन के मुखिया रामानंद तिवारी का आत्म समर्पण कराया और इस मामले को भी शांत किया।

११२. आजादी के पहले शांति के लिए गांधी की अंतहीन भागदौड़

जब यह तय हो गया कि ब्रिटिश सरकार सांप्रदायिक आधार पर दो देश बनाकर भारत को आजाद करेगी तो एक तरफ मुस्लिम बाहुल्य बंगाल पंजाब और सिंध से हिंदुओं का पलायन शुरू हो गया तो दूसरी तरफ बिहार और दिल्ली के कई मुस्लिम इलाकों से मुसलमानों ने पाकिस्तान जाने की तैयारी शुरू कर दी। हालाँकि कांग्रेस का हमेशा यह सिद्धांत रहा था कि विभाजन के बाद भारत में मुसलमानों को वही समान अधिकार रहेंगे जो हिंदू और सिख, ईसाई आदि के होंगे फिर भी मुस्लिम लीग के प्रभाव के इलाकों से मुसलमानों का पलायन हो रहा था |

1946-47 के दौरान भारत और गाँधी एक दूसरे के पर्यायवाची की तरह थे। इस दौर में भारत में बहुत दर्दनाक हालात थे इसीलिए शायद इसकी सबसे अधिक पीडा गांधी को ही थी। वे कभी मुस्लिम लीग और कांग्रेस में समझौता कराने के लिए वायसराय से मुलाकात के लिए दिल्ली आते तो कभी सांप्रदायिक दंगे से झुलसते बंगाल बिहार को शांत करने दौड पड़ते |

दिल्ली में भारत की अखंडता बनाए रखने के अंतिम प्रयास में गाँधी ने कुछ शर्तों के साथ जिन्ना को सत्ता सौंपने की भी पेशकश की थी लेकिन तब तक कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच की खाई इतनी बढ गई थी कि यह किसी को भी मंजूर नहीं था और सभी परिस्थितियों को देखते हुए व्यावहारिक भी नहीं था | गांधी मई 1947 के दूसरे हफ्ते में कलकत्ता आ गये थे। रास्ते में पटना स्टेशन पर मुख्यमंत्री उनसे मिलने आए। स्टेशन मास्टर ने ट्रेन छूटने का समय होने पर गाँधी से पूछा - बापू सिगनल दे दें?गाँधी ने कहा - समय पर सिगनल दो। मंत्री के लिए यात्री परेशान नहीं होने चाहिए |

कलकत्ता में गांधी से सबने शिकायत की। कोई बंगाल के दो हिस्से स्वीकारने में उन्हें दोष देता था तो कोई मुस्लिम लीग को छूट देने के लिए | गांधी भी बहुत दुखी थे | कहते - मेरी भी अब न नेता सुनते हैं और न जनता। इस दौरान उन्होंने सबकी खबर ली। ईसाई धर्म गुरुओं को लालच से धर्मांतरण पर लताडा और कम्युनिस्टों को भारत मे रूस की नकल करने के लिए | गांधी मानते थे कि भारत की गरीबी खादी और ग्रामोधोग से मिटेगी। गाँधी आजादी के बाद नए भारत के लिए कुछ ऐसा ही सपना देख रहे थे।

११३. आजादी के एक दिन पहले कलकत्ता की गलियों में गाँधी

जून और जुलाई 1947 में गांधी उत्तर भारत में घूम रहे थे। इस बीच पंजाब के पाकिस्तान में जाने वाले हिस्से से बहुत बडी संख्या में शरणार्थी हरिद्वार के कैंप में आकर रह रहे थे। कैंप के अधीक्षक ने गांधी का स्वागत माला से करना चाहा तो गांधी भडक गये- "दुख की घड़ी में कैसा स्वागत ?"

गाँधी सबके जख्मों पर मरहम लगा रहे थे लेकिन उनके अपने दिल के घावों को कोई नहीं समझ पा रहा था। हरिद्वार वे जवाहर लाल नेहरू के साथ उन्ही की कार में आए थे। लौटते समय थककर वे नेहरू की गोद में सर रख कर सो गये। नेहरू रास्ते में उनके पैरों को सहलाते रहे ताकि राष्ट्रपिता कुछ देर तो शांति और सुकून से गुजार ले |

गाँधी इसके बाद पंजाब और कश्मीर भी गये। रावलपिंडी में भी शरणार्थी कैंप था | वहां उन्होंने सुशीला नैयर को यह कहकर छोडा कि यहां मेरी यह बेटी आपकी रक्षा करेगी। जम्मू से लौटते समय बरसात में गांधी के डिब्बे की छत टपकने लगी। गार्ड ने कहा- बापू डिब्बा बदल लो। गांधी ने कहा- नहीं दूसरे यात्रियों को परेशान मत करो | तुम लोग रिश्वत लेना बंद कर दो वही मेरी सेवा होगी।

अंततः बिहार के रास्ते 9अगस्त 1947 को गाँधी पुनः कलकत्ता आ गये थे। कलकत्ता रेलवे स्टेशन पर गाँधी को देखने के लिए अपार जन समूह आ गया था मानो सब गांधी को देखना और छूना चाहते थे। मनु और आभा ने राम धुन गाकर भीड़ को शांत किया था।

गाँधी को 11अगस्त को नोआखाली जाना था लेकिन कलकत्ता में मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मुहम्मद उस्मान और सुहरावर्दी ने उनसे अनुरोध किया कि कलकत्ता में मुसलमानों को भी बहुत खतरा है आप यहीं रूक जाएँ | गांधी ने उनसे गारंटी ली कि नोआखाली में कोई गडबड नहीं होनी चाहिए। गारंटी मिलने पर गाँधी अपनी जान की परवाह किए बिना मुस्लिम मुहल्ले में हैदर मैंशन में रूक गये। साथ में सुहरावर्दी भी थे। गांधी ने सरदार पटेल से कहा था- यहां के मुसलमानों को भी खतरा है। लोग डरे हैं | देखता हूं यहां क्या होता है |

११४. 15 अगस्त 1947 : भारत की आजादी का जश्न और गाँधी

14 अगस्त 1947 की रात दिल्ली में आजादी के जश्न की तैयारी हो रही थी और गांधी कलकत्ता में रात ग्यारह बजे सोकर सुबह 2बजे जग गये थे | सामान्यतः वे सुबह तीन बजे जगते थे लेकिन उस दिन महादेव देसाई की पांचवी पुन्य तिथि थी और महादेव की याद में उन्होंने गीता का पूरा पाठ किया था और उपवास रखा था।

सुबह सवेरे लड़कियों के कई दल एक के बाद एक मधुर रवीन्द्र संगीत और आजादी के गीत गाते बापू के पास आए और उनकी प्रार्थना में शरीक हुए | गांधी दिन भर स्थितप्रज्ञ की तरह अपने काम निबटा रहे थे। बीच बीच में हर आधा घंटे पर उन्हें दर्शनों के लिए जुटती भीड़ के लिए बाहर आना पडता था।

15 अगस्त को कलकत्ता शहर में भी शांति रही और आजादी की खुशी में उत्सवी माहौल था। दिन में बंगाल का मंत्रीमंडल भी गांधी से मिलने आया था जिनसे गांधी ने कहा - यह कांटो का ताज है और अब आपका दायित्व और बढ गया है क्योंकि अब तुम्हें सेवक की तरह गांव के गरीबों की सेवा करनी है। गांधी ने आजादी का जश्न और दिनों से ज्यादा देर तक चरखा चलाकर मनाया। इस मौके पर सुहरावर्दी ने भीड़ से कहा - हम लोग धमकी से नहीं लेकिन अपनी मर्जी से जयहिंद कहेंगे | उनके जयहिंद कहने पर जनता खुश हो गयी। गांधी जी की शाम की प्रार्थना में करीब तीस हजार लोगों की भीड़ थी |

रात में सुहरावर्दी गांधी को अपनी गाडी में बिठाकर शहर की रौशनी दिखाने ले गए थे। वहां भी लोगों ने गांधी को पहचान लिया था और उन्हें देखते ही हिंदू मुस्लिम एकता के नारे लगाते हुए फूलों की बारिश की। प्यारे लाल ने उस दिन के संस्मरण मे लिखा है कि हिंदू मुस्लिम एकता के नारे सुनकर गांधी के उदासीन चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट आई थी |

गाँधी के लिए यह आजादी पूरी आजादी नहीं थी। उन्होंने बार बार यह दोहराया था कि हमें केवल राजनीतिक आजादी मिली है और अभी भी भारत की अधिकांश आबादी को सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक आजादी की दरकार है।

एक तरफ पाकिस्तान बनने पर मुस्लिम लीग के बडे नेता खुशी का इजहार कर रहे थे और दूसरी तरफ भारत की आजादी पर कांग्रेस के नेताओं में जश्न का माहौल था लेकिन इन तमाम जश्नो से दूर गांधी जनता के लिए पूरी आजादी प्राप्त करने के लिए आगे की रणनीति बनाने के बडे काम में जुटे थे। लाहौर की हिंसा और तनाव के समाचार उन्हे विचलित कर रहे थे।

बचपन में गाँधी के साथ रहे गांधी कथा प्रवचक नारायण देसाई बताते हैं कि नेहरू ने गांधी को आजादी के जश्न में शामिल करने के लिए दिल्ली लाने के लिए विशेष विमान की व्यवस्था की थी लेकिन गांधी ने यह कहकर मना कर दिया था कि मैं कलकत्ता को इस तरह सांप्रदायिकता की आग में जलता छोड़कर आजादी के जश्न में शामिल होने के लिए दिल्ली नहीं आ सकता |

११५. कलकत्ता में शांति के लिए उपवास

आजादी का जश्न अधिक समय तक जारी नहीं रह सका। सबसे भयानक समाचार लाहौर से आए। जो पंजाब आजादी के पहले अपेक्षाकृत शांत था वह अचानक बेकाबू हो गया। गांधी को 17अगस्त को खबर मिली कि लाहौर में सेना और पुलिस भी गुंडो के साथ मिल गई थी। नेहरू ने कहा था कि बापू हम पंजाब संभाल रहे हैं लेकिन पंजाब के हालात भयंकर हो गए थे। गांधी कलकत्ता और नोआखाली को थामे हुए थे | प्यारे लाल और चारू मजूमदार गांधी के निर्देशानुसार नोआखाली देख रहे थे वे भी 30 अगस्त को आगे की रणनीति बनाने के लिए कलकत्ता गांधी के पास आ गये थे | कलकत्ता की शांति और हिंदू मुस्लिम एकता भी ज्यादा दिन नहीं ठहर सकी और 30अगस्त को फिर से दंगे भड़क उठे। भीड़ सुहरावर्दी को मारने पर उतारू थी। गांधी ने अपना मौन तोड़कर भीड़ को ललकारा - पहले मुझे मारो। भीड़ में से किसी ने गांधी की तरफ डंडा फेंककर वार किया लेकिन वह गांधी को नही लगा और भीड़ छंट गई | गांधी बहुत दुखी थे कि आजादी की खुशी झूठी निकली |

एक सितंबर को हैदर मैंशन पर बम से हमला किया गया जिसमें दो मुस्लिम मारे गए। गांधी ने उपवास की घोषणा कर दी। राजा जी आदि कई साथियों ने गांधी को रोका भी लेकिन गांधी ने उपवास जारी रखा। इस दौरान नेहरू ने तार भेजकर जलते पंजाब को शांत करने के लिए गांधी को बुलाया था | गांधी ने कहा- अगर मैं कलकत्ता ठीक नहीं कर पाया तो पंजाब किस मुंह से जाऊंगा।

गाँधी से मिलने सुभाष चंद्र बोस के भाई शरत बोस और श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी आए थे | मुखर्जी को ढाका में गड़बड़ी की संभावना थी। बंगाल के प्रचार निदेशक चाहते थे कि गांधी की बीमारी में लेटे हुए फोटो के पोस्टर बनाकर शांति की अपील की जानी चाहिए लेकिन गांधी ने मना कर दिया- लोगों का हृदय परिवर्तन होना चाहिये | मैं काम चलाऊ शांति में जीना नहीं चाहता।

4सितम्बर को गाँधी की तबीयत खराब हो गयी | दंगों में शरीक गुंडो के कई दल एक के बाद एक माफी मांगने आये और उन्होंने आत्म समर्पण किया। गांधी ने हिंदू और मुसलमानों के लिखित आश्वासन के बाद ही उपवास समाप्त कर पंजाब के लिए रवाना होने का मन बनाया। शहीद सुहरावर्दी पश्चाताप के

लिए गांधी के पैर पकडकर रो रहे थे। उन्होंने ही गांधी को संतरे का रस पिलाकर गांधी का उपवास खत्म कराया था। कलकत्ता शांत हो गया था।

7 सितम्बर को गाँधी पंजाब के लिए निकल पड़े |

११६. जलती दिल्ली के जख्मों में करूणा का मरहम

पंजाब में हालात बद से बदतर होते जा रहे थे। पहले रावलपिंडी में हिंदू कत्लेआम के समाचार आए | दूसरी तरफ अमृतसर आदि शहरों में मुसलमानों के साथ मार काट शुरू हो गया और फिर लाहौर में यही सब होने लगा। पंजाब के दौनो तरफ मुख्य रूप से यह सिखों और मुसलमानों के बीच उन्माद का चर्मोत्कर्ष था। पाकिस्तान में सेना और पुलिस भी दंगाइयों के साथ मिल गई थी और लाहौर एक तरह से हिंदू रहित हो गया था और अमृतसर मुस्लिम रहित।

पाकिस्तान के बाह शरणार्थी शिविर में गाँधी सुशीला नैयर को छोड गये थे। राजकुमारी अमृत कौर और लेडी माउंटबेटन जब उधर दौरे पर गई तो वे सुशीला नैयर को अपने साथ ला रही थी लेकिन शरणार्थी उनके जाने के समाचार से घबरा कर रोने लगे | सुशीला नैयर वहीं रूक गई।

गाँधी बंगाल को काफी हद तक शांत करने के बाद दिल्ली आ गए थे। गांधी के लिए माउंटबेटन ने कहा था - पंजाब में हमारे पचास हजार सैनिक शांति बहाल नहीं कर सके लेकिन गांधी ने अकेले कलकत्ता में शांति स्थापित कर दी। वे वन मैन आर्मी हैं।

पंजाब की हिंसा अचानक शुरू हुई थी और कुछ ही दिनों में इसने इतना विकराल रूप धारण कर लिया था कि जब तक कुछ हो पाता तब तक मानवीयता के तमाम मूल्य ताक पर रख कर बर्बरता ने दौनो तरफ के कमजोर अल्पसंख्यको के साथ नंगा नाच खेला था। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के माथे पर यह सबसे बडा कलंक था। गांधी के लिए भी यहां रिश्ते जख्मों पर करूणा का मरहम लगाने के सिवा कुछ नहीं बचा था। जिन्ना की इस घोषणा के बावजूद कि आजाद पाकिस्तान में सभी धर्मों के लोगों के लिए समान अधिकार हैं उनके सिपहसालारों ने यह तय कर लिया था कि मुस्लिमों के लिए बने इस नये देश मे हिंदुओं के लिए कोई जगह नहीं है। जिन्ना ने भी ऐसे बुरे हालात की कल्पना नहीं की थी।

गाँधी कलकत्ता से निकले तो पंजाब के लिए थे लेकिन रास्ते में उन्हें दिल्ली ही रूकना पडा क्योंकि चार सितंबर को दिल्ली के हालात भी विस्फोटक हो गये थे।

कलकत्ता मेल से दिल्ली पहुंचे गांधी को सरदार पटेल बिरला हाउस ले आए थे क्योकि गांधी के पुराने आवास भंगी कालोनी में शरणार्थी रूके थे। उदास नेहरू भी गांधी से मिलने आए थे। उन्होंने कहा था- पंजाब को क्या दोष दें दिल्ली भी जल रहा है | हम लोग बाडी गार्ड के कारण बच गए, लोग सडकों पर मर रहे हैं। हालत ऐसे भयावह हो गये थे कि जान पहचान के इंसान भी हैवान हो गये थे। मशहूर डाक्टर जोशी को उनके मातहद काम कर रहे मुस्लिम डाक्टर ने गोली मार दी थी। लोग पडौस धर्म भूल गए थे| महिलाओं का सम्मान करना भूल गए थे। वहसीपन हवा में तैर रहा था। लूट आगजनी हत्या बलात्कार से चारों तरफ हाहाकार था। गांधी के लिए यह असीम पीड़ा का दौर था।

११७. रोती बिलखती कराहती दिल्ली में गाँधी

कलकत्ता से पंजाब के लिए निकले गांधी जब तक दिल्ली पहुंचे तब तक दिल्ली में भी सांप्रदायिकता की आग पूरी तरह धधक चुकी थी | नेहरू और पटेल समेत पूरा सरकारी अमला भी दिल्ली को सांप्रदायिक आग में झुलसने से बचा नहीं पाया था। गांधी के दिल्ली पहुंचते ही सबको एक आश्वस्ति सी हुई थी और सब गांधी को अपने साथ हुई ज्यादतियों के बारे में बताना चाहते थे। गांधी भी सबकी बातें सुनकर सबको समझा रहे थे।

मुस्लिम प्रतिनिधि चाहते थे कि गांधी कलकत्ता की तरह दिल्ली में मुस्लिम बस्ती में ठहरें जिससे मुसलमानों का डर दूर हो | कुछ इलाकों में मुस्लिम बस्ती खाली हो रही थी। डाक्टर अंसारी की बेटी भी अपना घर छोड़कर होटल में रह रही थी। सरकार ने गांधी से बिरला हाउस में ही रूकने के लिए अनुरोध किया था। गांधी ने सरकार की बात मानकर बिरला हाउस को ही अपना ठिकाना बनाया था। गाँधी ने बहुत से इलाकों का दौरा किया और सब जगह लोगों को खरी खोटी भी सुनाई और समझाया भी। गांधी ने जामा मस्जिद पहुंच कर मुसलमानों को समझाया और किंग्सवे कैंप में हिंदू शर्णार्थियो को समझाया। सिखों को भी उन्होंने यही कहा कि आपने अपनी स्त्रियों पर अत्याचार क्यों होने दिये और अब मुस्लिमों को घर बदर क्यों कर रहे हो। आपको परेशानी है तो मंत्रियों को बंगलों से निकालो और मुझे बिरला हाउस से बाहर करो | गांधी ने साफ कहा कि हम यहाँ के मुसलमानों को पाकिस्तान नही भेज सकते | हम वैसा नहीं करेंगे जैसे पाकिस्तान ने किया। गांधी की इच्छा थी कि यदि यहां के हालात सुधरे तो वे पाकिस्तान जाकर जिन्ना से पूछेंगे कि तुम्हारे उस वादे का क्या हुआ जिसमें तुमने पाकिस्तान में हिंदुओं के समान अधिकार की बात कही थी।

इस दौरान भाग दौड़ और मानसिक पीड़ा के कारण गांधी बीमार पड गये थे। उन्होंने पैंसिलीन तो क्या देशी दवा भी नहीं ली और आराम भी नहीं किया। कहते थे- जब जनता कष्ट से है तब मैं कैसे आराम कर सकता हूं।

दिल्ली और दूसरे इलाकों के हालात देखकर गांधी को बहुत पीड़ा थी। उन्होंने 2 अक्टूबर को मिलने आये माउंटबेटन से कहा था- यही हाल रहा तो मैं अपना अगला जन्मदिन देखना नहीं चाहूँगा। तब किसे पता था कि उनकी यह इच्छा पूरी होगी और कुछ महीने बाद उनकी हत्या कर दी जाएगी।

११८. दिल्ली की दास्तान कलकत्ता से भी बदतर

दिल्ली में आजादी के बाद केवल सांप्रदायिक दंगे ही नहीं हुए थे यहां दो और भी बडी समस्या थी। पुराना किला में ऐसे मुसलमानों की भारी भीड़ जमा हो गई थी जो पाकिस्तान जाने वाली थी और दूसरी तरफ पाकिस्तान से आए हिंदू शर्णार्थियों की भीड़ थी। गांधी के लिए दिल्ली और बडी चुनौती थी। उन्होंने कहा था - मुझे नहीं मालूम कि यहां मेरी उपस्थिति से कितना लाभ होगा लेकिन यह तय है कि शांति होने तक मैं दिल्ली नहीं छोड़ सकता।

दिल्ली में गाँधी जामिया मिलिया इसलामिया भी गये जहां डॉ जाकिर हुसैन वाइस चांसलर थे। डॉ जाकिर हुसैन पर भी जालंधर में हमला हुआ था। गांधी जाकिर हुसैन जैसे व्यक्ति पर हमले से बहुत दुखी हुए। गांधी पर भी बहुत से हिंदू शरणार्थी नाराज थे। किंगसवे कैंप की प्रार्थना सभा में जब कुरान की आयतें पढी जाने लगी तो लोग उग्र हो गये क्योंकि कुरान और इस्लाम के नाम पर ही मुस्लिम गुंडो ने हिंदू महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया था। गांधी की कार पर पथराव भी हुआ था।

आर एस एस ने भी अपनी सभा में गाँधी को बुलाया था। गांधी आर एस एस से नाराज थे क्योंकि उन्होंने भी दंगे भडकाए थे।

दरियागंज के मुसलमानों ने गांधी को लिखकर दिया था कि वे दिल्ली में ही रहना चाहते हैं। गांधी ने भी उन्हें आश्वस्त किया कि भारत उनका घर है। गांधी ने उनसे यह भी कहा कि वे पाकिस्तान की सरकार से अपील करें कि वह भी वहां के हिंदू और सिखों को मदद करे। जो हिंदू दिल्ली के सभी मुसलमानों को पाकिस्तान भेजने की मांग कर रहे थे उनको गांधी ने कहा कि इस तरह तो हम पाकिस्तान से भी यह कैसे कह सकते हैं कि वह हिंदू और सिखों की मदद करे |

अपने अंतिम जन्मदिन पर गाँधी ने बीमारी की हालत में भी सामान्य से ज्यादा देर तक चरखा चलाया और मिलने आये लोगों से कहा था कि वे यह प्रार्थना करें कि ईश्वर या तो शांति बहाल करें या मुझे उठा लें। सरदार पटेल को दुखी होकर उन्होंने कहा था कि पता नहीं मैंने क्या पाप किया है जो ईश्वर ने ऐसे हालात देखने के लिए मुझे जीवित रखा है। कभी 125 साल जीकर देश के गरीबों की सेवा करने की इच्छा रखने वाले गांधी अब और अधिक जीवन नहीं चाहते थे।

दिल्ली की गलियों में सडती लाशों और शरणार्थियों की बेतहासा भीड़ से चारों तरफ गंदगी का आलम था | कभी भी महामारी फैल सकती थी। गांधी ने कांग्रेस के लोगों से कहा कि वे सफाई का जिम्मा लेकर तुरंत काम पर जुट जाएँ ,इस समय यही सबसे बडी सेवा होगी |

११९. आजादी के बाद पहले कांग्रेस अधिवेशन में गाँधी

नवंबर 1947 के कांग्रेस अधिवेशन में गाँधी ने कांग्रेस के लिए अंतिम नसीहत दी थी | उन्होंने स्पष्ट कहा था कि काफी कांग्रेसी भी सांप्रदायिक संकीर्णता के शिकार हुए हैं। कांग्रेस के लोगों को आजाद भारत के शासन में ज्यादा संयम, त्याग , अनुशासन और परिश्रम करने की आवश्यकता है | गांधी ने यह भी कहा था कि सच्चा लोकतंत्र वही है जिसमें अधिसंख्य ही नहीं शत प्रतिशत जनता का ध्यान रखा जाता है और जिसमें सबसे गरीब को भी समान मौका मिलता है।

सांप्रदायिकता के पागलपन पर गाँधी ने कहा था कि हम पाकिस्तान में मुस्लिम लीग के किये की सजा भारत में रहने वाले मुसलमानों को नहीं दे सकते। जो मुसलमान मुस्लिम लीग और पाकिस्तान समर्थक हैं वे खुशी से पाकिस्तान जाएँ लेकिन जो भारत में रहना चाहते हैं उन्हें हम समुचित सुरक्षा दें। यही कांग्रेस का सिद्धांत है और यही हमारे धर्म और देश की संस्कृति है। यदि ऐसा नहीं होगा तो कांग्रेस हमारे धर्म और देश को नीचा दिखाएगी। हम भी पाकिस्तान की नकल करके दुनिया के सामने सिर ऊँचा नहीं कर सकते। आर एस एस के बारे में गाँधी ने कहा कि हिंदूत्व की रक्षा हिंसा से नहीं की जा सकती।

अंतिम दिनों में गाँधी दो चीजों से बहुत व्यथित थे। एक तो भारत और पाकिस्तान बनते ही दौनो तरफ अल्पसंख्यक समुदाय के साथ बहुसंख्यक समुदाय ने जिस तरह की ज्यादतियां की थी वह मानवता पर भयंकर कलंक था और गाँधी जैसे सहिष्णुता के पुजारी के लिए यह अकल्पनीय और असहनीय था। दूसरी तरफ कांग्रेस के नेताओं में आजादी के बाद जिस तरह से सेवा भाव की जगह सत्ता के प्रति लोलुपता बढी थी गांधी के लिए वह भी शर्मनाक थी इसलिए गांधी ने कांग्रेस के लोगों को इस अधिवेशन में उनके कर्तव्यों के प्रति चेताया था।

गाँधी मानते थे कि कांग्रेस के लोगों के लिए आजादी के बाद गरीब देहाती लोगों की सेवा के लिए सुंदर अवसर आया है लेकिन अधिकांश कांग्रेसी उस तरफ ध्यान न देकर सत्ता के लिए अधिक आकर्षित हो रहे हैं। उन्होंने अस्वस्थता के बावजूद बडी मेहनत से कांग्रेस और कांग्रेसियों के लिए अपनी हत्या के एक दिन पहले आजादी के बाद नया विधान भी बनाया था जिसे गांधी की अंतिम विरासत के नाम से जाना जाता है।

१२०. भारतीय सेना के बारे में गाँधी की जनरल करियप्पा की चर्चा

गाँधी हिंसा के खिलाफ थे और मानवता की आदर्श स्थिति में वे ऐसे शासन की कल्पना करते थे जिसमें पुलिस और सेना की आवश्यकता ही नहीं हो। गांधी युद्ध और हिंसा से हुए किसी भी समाधान और शांति को क्षणिक मानते थे क्योंकि गांधी मानते थे कि हिंसा और अधिक हिंसा को जन्म देकर समस्या को बढाती है।

गाँधी से मुलाकात के कुछ समय पहले जनरल करियप्पा ने इंग्लैंड में भारत की वर्तमान स्थिति में भारत के विकास के लिए सशक्त सेना की जरूरत बताई थी जो गांधी के विचार से मेल नहीं खाती थी। इस घटना के बाद जनरल करियप्पा और गाँधी में सेना की आवश्यकता और सेना के कर्तव्यों को लेकर दिलचस्प बातचीत हुई थी। जनरल करियप्पा गांधी से यह मार्ग दर्शन चाहते थे कि आजाद भारत में सेना का किस तरह का प्रशिक्षण होना चाहिए। पहली मुलाकात के दौरान गांधी का मौन व्रत था इसलिए जनरल की बात का संक्षिप्त उत्तर गांधी लिखकर दे रहे थे। बातचीत के दौरान गांधी जमीन पर बैठकर चरखा कात रहे थे | उन्होंने जनरल को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया लेकिन वे गांधी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए जमीन पर ही बैठे। जनरल ने गांधी से कहा था कि हम सैनिकों के बारे में जनता को बहुत सी भ्रांतियाँ हैं कि हम युद्ध चाहते हैं। हकीकत में सैनिक कभी युद्ध नहीं चाहते क्योंकि हम युद्धों की निरर्थकता समझते हैं। प्रजातंत्र में सेना युद्ध शुरू नहीं करती अपितु जब सरकार असफल होने लगती है तो वह युद्ध का ऐलान कर देती है। गांधी ने जनरल को इस गंभीर विषय पर बात करने के लिए दो दिन बाद बुलाया था।

अगली मुलाकात में जनरल ने गांधी से कहा था कि सेना मे हम लोग भी अनुशासन, स्वार्थ रहित देश भक्ति और अंहिसा के सिद्धांत को अपनाते हैं | मैं आपसे यह सीखना चाहता हूँ कि हम अपने सैनिकों को अंहिसा के बारे में कैसे अच्छी तरह समझा सकते हैं क्योकि इस विषय मे मै आपके सामने बच्चा हूँ | गाँधी ने कहा था कि मैं भी इस मामले मे बच्चा ही हूं बस तुम से बडा बच्चा हूँ क्योंकि मैंने इस विषय पर अधिक विचार किया है। उन्होंने यह भी कहा कि मैं भी सेना के अनुशासन और साफ सफाई से बहुत प्रभावित हूं और यह कहकर बात खत्म की कि इस विषय पर हम लगातार बातचीत करेंगे।

इस बीच जनरल करियप्पा को कश्मीर जाना पडा और यह बात आगे नहीं बढ सकी। जनरल करियप्पा से गाँधी की अगली मुलाकात गांधी की पार्थिव देह से ही हुई जिसे उन्होंने राजघाट पर अंतिम सलामी दी थी |

१२१. भारत के मुसलमानों और शहीद सुहरावर्दी से गाँधी की वार्ता

गाँधी आजादी के आंदोलन के दौरान लगातार हिंदू मुस्लिम एकता के प्रयास करते रहे थे | उन्होंने यह उम्मीद नहीं की थी कि अधिकांश मुस्लिम कांग्रेस का दामन छोड़ कर सांप्रदायिक मुस्लिम लीग के बहकावे में आकर पाकिस्तान बनाने के लिए हिंसा करने लगेंगे और भारत की एकता के लिए कांग्रेस का साथ देने वाले मुसलमान नेताओं से दूर छिटक जाएंगे। सुहरावर्दी जैसे नेताओं से तो गांधी को और भी अधिक नाराजगी थी जिन्होंने सत्ता में रहते हुए निष्पक्षता नहीं बरती थी हालाँकि सुहरावर्दी के प्रायश्चित के बाद गांधी ने उन्हें माफ कर दिया था |

सुहरावर्दी जब गांधी से मिलने दिल्ली आए तो गांधी ने उनसे कहा कि वे जिन्ना से पूछें कि वे पाकिस्तान में रहने वाले हिंदुओं और सिखों के जान माल और महिलाओं की इज्जत की रक्षा का वादा क्यों पूरा नहीं कर पा रहे।

गाँधी से मिलने दिल्ली के कई मौलवी भी अक्सर आते थे क्योंकि उन्हें गांधी से ही भारत में रह गये मुसलमानों के लिए सबसे अधिक उम्मीद थी। गांधी ने उनसे दो बातें कही थी। एक यह कि उन्हें अपने पडौसी हिंदुओं को शांति के साथ यह कहना चाहिए कि वे भी भारत के लिए उतने ही देश भक्त हैं जितने हिंदू और सिख हैं | साथ ही उन्हे पाकिस्तान सरकार से भी स्पष्ट अपील करनी चाहिए कि वहां के अल्प संख्यकों के साथ अन्याय तुरंत रूकना चाहिए। एक बार हिंदू समुदाय के तानो से व्यथित होकर कुछ मुस्लिम नेताओं ने गांधी को कहा कि न हम पाकिस्तान गये और न यहां के लोगों को हमारी देश भक्ति पर विश्वास है ऐसे में आप हमें इंग्लैंड भिजवाने की व्यवस्था करा दें ताकि हम वहां चैन से रह सकें। गांधी को उनकी यह बात पसंद नहीं आई | उन्होंने कहा कि ऐसा कहने से आपकी देश भक्ति पर विश्वास नहीं किया जाएगा। उन लोगों को अपनी गलती का अहसास हुआ | फिर उसके बाद किसी ने इस तरह की बात नहीं की।

गाँधी कभी शरणार्थी शिविरों में जाकर शरणार्थियों को समझाते थे, तो कभी मुस्लिम समुदाय के लोगों को। हिंदू मुस्लिम एकता और मानवता की आदर्श स्थिति लाने के लिए प्रयासरत गांधी के साथ सबसे दुखद पहलू यह था कि एक तरफ मुस्लिम लीग के नेता उन्हें हिंदू समर्थक बताते थे और दूसरी तरफ आर एस एस के नेता उन्हें हिंदू विरोधीऔर मुसलमानों का समर्थक बताते थे ,और गाँधी का सत्य इन दो सफेद झूठ के बीच पिस रहा था |

१२२. जवाहर लाल नेहरू और पटेल के मतभेद और गाँधी

आजादी के बाद गांधी को कई तरफ से बुराई के दर्शन हो रहे थे। हिंदू, सिखों और मुसलमानों के सांप्रदायिक दंगों में महिलाओं के साथ जिस तरह की ज्यादतियां हो रही थी वह गांधी को अंदर से तोड रही थी। उधर कांग्रेस के नेताओं में सेवा भाव की जगह सत्ता के प्रति आकर्षण ने ले ली थी। कांग्रेस के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद ने बडी लाचारगी से गाँधी को बताया था- कांग्रेस की नींव टूट रही है। लोगों को आजादी के बाद कांग्रेस और कांग्रेसियों से जैसी उम्मीद थी वे उस पर खरे नहीं उतर रहे थे।

कांग्रेस और आजादी के बाद की पहली भारतीय सरकार के दो सबसे महत्वपूर्ण नेताओं जवाहर लाल नेहरू और सरदार पटेल के भी कई मामलों में मतभेद थे। दौनो नेता नियमित रूप से गाँधी से मिलने आते थे और एक दूसरे से भी लगभग हर दिन ही मिलते थे लेकिन दौनो के पुराने वैचारिक मतभेद सरकार में साथ आने पर मुखर होते जा रहे थे। पटेल मुस्लिम दंगाइयों से सख्ती से निपटने के पक्षधर थे लेकिन नेहरू का रूख नरमपंथी था।

कश्मीर समस्या पर भी पटेल और गाँधी नेहरू के इस मत से सहमत नहीं थे कि यह मामला युनाइटेड नेशंस में ले जाया जाए। जवाहर लाल नेहरू ने पटेल के बजाय माउंटबेटन की सलाह को अहमियत देकर पाकिस्तान की युनाइटेड नेशंस में शिकायत कर दी थी।

आर एस एस के बारे में पटेल का रूख नरम था। वे आर एस एस को हिंदू संगठन तो मानते थे लेकिन वे उसके राष्ट्र हित के काम की तारीफ भी करते थे।

कुछ और भी ऐसे मामले थे जिन पर नेहरू और पटेल के बीच गहरे मतभेद थे जिनके कारण पटेल के लिए नेहरू के नेतृत्व में काम करने में दिक्कत महसूस हो रही थी लेकिन इन हालात में गाँधी उनके बीच पुल का काम करते रहते थे क्योंकि गांधी इन दोनों नेताओं का साथ रहना देश के लिए जरूरी मानते थे।

१२३. सिंध और कश्मीर समस्या और गाँधी

सिंध और कश्मीर में सूफी परंपरा का काफी प्रभाव रहा है। मुस्लिम लीग के नेतृत्व में दंगाइयों ने इन दौनो सूबो में भी बडी समस्या पैदा कर दी थी। सिंध प्रांत तो बंटवारे में पाकिस्तान के हिस्से में आया था और कश्मीर के राजा ने कोई फैसला नहीं किया था कि वह आजाद रहेगा या भारत और पाकिस्तान के साथ जाएगा। इसके पहले वहां का राजा किसी निर्णय पर पहुंचता पाकिस्तान की सेना के समर्थन से मुस्लिम दंगाइयों ने कश्मीर पर हमला बोल दिया था। हमले के बाद कश्मीर के राजा ने भारत के साथ आने की पेशकश की थी लेकिन इसी बीच कश्मीर को लेकर दौनो देशों के मध्य युद्ध की स्थिति बन गई थी।

गांधी पाकिस्तान के इस रवैये से बहुत व्यथित थे। वे विशेष रूप से सिंध,कश्मीर और अपने मित्र अब्दुल गफ्फार खान के फ्रंटियर प्रांत का दौरा करने के इच्छुक थे।

सिंध में अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों और विशेष रूप से महिलाओं के साथ हुई ज्यादतियों की साक्षी रही एक महिला ने जब गांधी से यह समाचार बताया तो उन्होंने कहा था कि मुझे अधिक खुशी यह जानकर होती कि ऐसे दंगाइयों से लडते हुए आपकी शहादत हो गई है। आपको उन लोगों को बचाने के प्रयास में अपनी जान की बाजी लगानी चाहिए थी।

कश्मीर समस्या के लिए वहां के राजा का रवैया सबसे अधिक जिम्मेदार था। राजा ने कश्मीर नेशनल कांफ्रेंस के लोकप्रिय नेता शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तार कर लिया था और नेहरू को उसका मुकदमा भी नहीं लडने दिया था। राजा कांग्रेस के नेताओं से भी नाराज था और मुस्लिम लीग से भी उसके अच्छे संबंध नहीं थे। अगस्त 1947 में राजा ने एक साल के लिए अस्थाई रूप से पाकिस्तान का समर्थन किया था लेकिन मुस्लिम लीग कश्मीर का पाकिस्तान में विलय चाहती थी। उसकी मंशा पूरी नहीं होने पर लीग की सरकार ने कश्मीर पर कबाइलियों के हमले का समर्थन किया था | इसी से डरकर राजा ने भारत से सहायता मांगी थी।

कश्मीर के बारामूला में वहां के नेता मीर मकबूल शेरवानी ने दंगाइयों का विरोध करते हुए अपनी जान गंवा दी थी। उन्हें दंगाइयों ने वीभत्स यातना दी थी और यातना के बाद 14 गोली मारी थी। उनकी शहादत का समाचार मिलने पर गाँधी ने कहा था- मीर की मृत्यु हर धर्म के लिए सराहनीय है।

गाँधी कश्मीर की समस्या आपसी बातचीत से सुलझाना चाहते थे। पटेल की भी यही इच्छा थी लेकिन जवाहर लाल नेहरू को उम्मीद थी कि युनाइटेड नेशंस इस समस्या को ठीक से सुलझा सकता है इसलिए उन्होंने यह मामला युनाइटेड नेशंस भेज दिया था जो आज भी वैसे ही अनसुलझा है जैसा 1947 में था|

१२४. गाँधी का अंतिम उपवास

गाँधी, नेहरू ,पटेल और आजाद आदि के अथक प्रयासों से दिल्ली और देश के दूसरे हिस्सों में सांप्रदायिक उन्माद में धीरे धीरे कमी तो आई थी लेकिन दौनो समुदायों के मन में एक दूसरे के प्रति घोर संदेह और नफरत का भाव भरा था जो जरा सी हवा मिलते ही सुलग उठता था। हृदय परिवर्तन की कामना करने वाले गांधी के लिए यह स्थिति त्रासदऔर असहनीय थी। दूसरी तरफ भारत और पाकिस्तान के बीच भी कश्मीर आदि मुद्दों को लेकर बहुत तनातनी का माहौल बन गया था। भारत सरकार ने पाकिस्तान के लिए तय 55 करोड़ रुपये की राशि की दूसरी किस्त रोक ली थी जो उसे बंटवारे के अनुसार दी जानी थी। पाकिस्तान इस किश्त को जारी नहीं करने के लिए भारत की बदनामी कर रहा था | गांधी ने इस बारे में माउंटबेटन से पूछा था | उनकी राय में भारत को यह राशि जारी कर देना चाहिए थी।

गाँधी ने एक दिन अचानक इन सब परिस्थितियों से क्षुब्ध होकर आमरन अनशन की घोषणा कर दी थी जो तब तक जारी रहना था जब तक दौनो समुदायों मे एक दूसरे के प्रति नफरत नहीं रूकती और दौनो देश अपने वादे पूरे नहीं करते।

गाँधी के सबसे छोटे पुत्र देवदास ने गांधी से अपना फैसला रद्द करने के लिए मार्मिक अपील की थी लेकिन गांधी अपने फैसले पर अडिग रहे थे। भारत की कैबिनेट ने बिड़ला हाउस में एक बैठक की थी जिसमें गांधी के मुद्दों पर त्वरित कार्यवाही का निर्णय किया गया था।

गाँधी के उपवास का व्यापक असर हुआ था। बहुत से लोगों ने शांति प्रक्रिया के लिए प्रयास किये थे।

एक अभूतपूर्व फैसले में कैबिनेट ने अपना पूर्व का फैसला बदलकर पाकिस्तान को बाकी रकम देने का निर्णय लिया था। हिंदू मुस्लिम नेताओं और शरणार्थियों के प्रतिनिधियों ने एक साथ यह लिखित बयान जारी किया था कि भविष्य में वे सब शांति से रहेंगे। सब समुदायों के लिखित आश्वासन के बाद मौलाना आजाद के हाथ से गाँधी ने अपना अनशन समाप्त किया। अनशन के दौरान गांधी के गुर्दे भी खराब हो गये थे लेकिन गांधी को इस बात की संतुष्टि थी कि लोगों पर उनके अनशन का सकारात्मक प्रभाव पडा था।

गाँधी के साथ वरिष्ठ पत्रकार और द स्टेटसमैन अखबार के पूर्व संपादक आर्थर मूर ने भी लगातार उपवास रखा था। गांधी के उपवास की समाप्ति पर नेहरू ने भी यह राज खोला था कि इस दौरान उन्होंने भी उपवास रखा था | सबसे आश्चर्यजनक बात यह हुई कि उपवास की समाप्ति पर गांधी से मिलने बुर्का औढकर कई मुस्लिम महिलाएं आई थी। उन्होंने भी कहा था कि आपके उपवास के दौरान हमने भी अन्न नहीं खाया | गांधी उनसे मिलकर बहुत खुश हुए और कहा - मैं तुम्हारे पिता और भाई जैसा हूँ फिर मेरे से पर्दा क्यों? गाँधी के यह कहते ही सबने बुर्का हटा दिया था | गांधी के आमरन अनशन से पटरी से उतरे दिल्ली और देश पुन: पटरी पर लौटते दिखाई दिए थे। अब गांधी सिंध, कश्मीर और सीमांत प्रांत के दौरे की तैयारी करने लगे थे |

१२५. गाँधी की अंतिम सांस – 'हे राम'

कभी 125 साल जीकर भारत के गरीब ग्रामवासियों की सेवा का सपना देखने वाले गांधी बीमारी और आमरन अनशन के लंबे उपवासों के दौरान और कई हमलों के बावजूद हर बार ईश्वर की कृपा से बच जाते थे और नये जोश और स्फूर्ति के साथ जन सेवा के रचनात्मक कामों में जुट जाते थे। अंतिम उपवास के बाद भी वे पहले जैसे सक्रिय हो गये थे।

30 जनवरी 1948 के काले दिन के एक दिन पहले उन्होंने आजाद भारत की कांग्रेस और कांग्रेसियों के लिए जनसेवा का नया विधान तैयार किया था जिसमें 30 जनवरी की सुबह भी उन्होंने अंतिम संशोधन किया था। इस दस्तावेज को कांग्रेस के लिए गांधी की अंतिम विरासत माना जाता है।

सुबह उठे तो गांधी को खांसी आ रही थी | मनु ने कहा- "मैं आपके लिए लौंग कूटती हूँ | रात को सोते वक्त लेने से आराम मिलेगा"। गांधी ने कहा- "रात तक का किसे पता है। रात तक जिंदा रहा तो रात को कूट लेना। " किसे पता था कि गांधी के मुंह से सुबह अनायास निकले ये शब्द सच हो जाएँगे। दोपहर बाद पटेल गांधी से मिलने आए थे। कह रहे थे- अब मैं मुक्त होना चाहता हूँ | गांधी ने पटेल से कहा- पहले मैं भी यही सोचता था कि तुम और नेहरू में से एक सरकार के बाहर रहे लेकिन अब चाहता हूँ कि तुम दौनो साथ रहो | मैं जवाहर से भी बात करूंगा।

गांधी की प्रार्थना का समय हो रहा था। पटेल के निकलते ही गांधी मनु के सहारे प्रार्थना के लिए बाहर निकले थे तभी भीड़ के बीच से निकल कर गोडसे ने मनु को धकियाते हुए गांधी पर सामने से एक के बाद एक तडातड तीन गोलियाँ दागी | पहली गोली से 'हे राम ' कहते हुए गांधी लडखडाए, दूसरी गोली से जमीन पर गिरे और तीसरी गोली से गोडसे को यकीन हो गया कि उसने गांधी का जीवन समाप्त कर दिया।

पटेल घर भी नहीं पहुंच पाए थे। गांधी की हत्या की खबर सुनकर सबसे पहले वही आए थे और किंकर्तव्यमूढ होकर गांधी के पास ही पत्थर की तरह बूत बनकर बैठ गये। थोडी देर बाद जवाहर लाल नेहरू पहुंचे और गाँधी की चादर से लिपटकर फूट फूट कर रोने लगे।

पागलपन की हद तक भटके हुए एक युवक की तीन गोलियों ने विश्व से शांति का सबसे बडा दूत छीन लिया था। पूरा देश गांधी की हत्या से स्तब्ध था। ऐसा लगता था कि 30जनवरी की शाम का सूरज अस्त होते समय देश का तमाम उजाला अपने साथ ले गया था।

भारत की कैबिनेट ने सबसे विचार विमर्श कर तय किया था कि यमुना के किनारे गाँधी का अंतिम संस्कार किया जाएगा और गांधी की अस्थियां इलाहाबाद के संगम में प्रवाहित की जाएंगी । रोते बिलखते लाखों लोग गाँधी के अंतिम दर्शन के लिए दिल्ली पहुंच गए थे । गांधी के अंतिम संस्कार के दृश्य ने सबको भाव विवह्ल कर दिया था ।

गांधी की अस्थियों को संगम में अर्पित करने के लिए दिल्ली से इलाहाबाद एक विशेष ट्रेन चली थी । अपने राष्ट्र पिता को अंतिम सलामी देने करोडो लोग रोते बिलखते रेलवे लाइन के दौनो तरफ कई कई घंटे जगह जगह रुकती ट्रेन आने का इंतजार कर रहे थे ।

इलाहाबाद में गंगा यमुना सरस्वती के संगम पर गाँधी की अस्थियों को अंतिम विदाई देने के लिए रोते बिलखते जन समूह की ऐतिहासिक भीड़ उमडी थी । संगम पर इतना गमगीन नजारा शायद न कभी इसके पहले हुआ था और शायद भविष्य में भी कभी नहीं होगा ।

गाँधी का पार्थिव शरीर इलाहाबाद के संगम से बहता हुआ समुद्र की अनंत यात्रा के लिए निकल गया था |